महान सौंदर्य, अत्यधिक ताकत और बहुत धन का वास्तव में कुछ खास उपयोग नहीं है। एक सच्चा हृदय इन सबसे ऊपर है।

– बेंजामिन फ्रैंकलिन

लापरवाही की लपटें

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में इस साल आग लगने की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि देखी गई है। इन हादसों से बार-बार महानगर के बुनियादी ढांचे, विद्युत प्रणालियों और सुरक्षा नियमों में खामियां सामने आती हैं। ताजा मामला दिल्ली के मालवीय नगर इलाके के एक होटल में लगी भीषण आग का है, जिसमें 21 लोगों की मौत हो गई। इससे पहले विवेक विहार में लगी आग में नौ लोगों की जान चली गई थी। इस तरह की घटनाओं ने अवैध निर्माण, प्रशासनिक ढिलाई और कानूनों की अवहेलना की बढ़ती परिपाटी के खतरनाक गठजोड़ को उजागर किया। अग्नि सुरक्षा तंत्र और प्रशासनिक ढांचा कागजों तक सीमित हैं। मालवीय नगर के जिस होटल में आग लगी, वहां सरकार ने छह कमरों की इजाजत दी थी और 25 कमरे चलाए जा रहे थे। नियमों का खुला उल्लंघन हो रहा था। सवाल यह है कि कानून एवं प्रवर्तन एजंसियां क्या कर रही थीं?

दिल्ली के शहरी विस्तार ने एक विरोधाभास पैदा कर दिया है। यहां प्रशासन विकेंद्रित है। कई एजंसियों- दिल्ली दमकल सेवा, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली विकास प्राधिकरण, राज्य सरकार आदि के बीच कामकाज बंटा हुआ है। जब कोई हादसा होता है, तो एक विभाग दूसरे पर आरोप मढ़ कर जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेता है। प्रशासनिक गतिरोध के कारण जवाबदेही शून्य हो जाती है। संकरी गलियां, अनधिकृत निर्माण, एक ही प्रवेश एवं निकास द्वार, और अग्नि अनापत्ति प्रमाणपत्र के बिना काम चलाना आम बात है। सख्त कानूनों के बावजूद, जमीनी स्तर पर भवन निर्माताओं और अवैध संचालकों में नियमों के पालन का कोई डर नहीं है। कई इमारतें और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाएं, जो अवैध होती हैं, उनमें अक्सर अग्नि सुरक्षा नियम का ध्यान नहीं रखा जाता। अग्नि सुरक्षा को दरकिनार किया जाना भी गंभीर चिंता का विषय है। इस तरह के हादसे प्रशासनिक और नागरिक लापरवाही का जीता-जागता प्रमाण है। सवाल उठता है कि अनियोजित विस्तार की अंधी दौड़ में जान-माल से समझौता कब तक होता रहेगा?

नगर निकायों से संबंधित नियम शहरी सुरक्षा की रीढ़ होते हैं। आपातकालीन निकास, विद्युत भार क्षमता, निर्धारित दूरी और अग्नि सुरक्षा मार्गों और भवन निर्माण से संबंधित मानदंड दशकों के अनुभव के आधार पर तैयार किए गए हैं। इनका उल्लंघन इमारतों को मौत के जाल में बदल देता है। सुविधा, प्रतिष्ठा या लाभ की लालसा में कानूनों को दरकिनार करने की प्रवृत्ति हादसों को निमंत्रण देती है। कायदे से नियमों को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। इन्हें ताक पर रखकर इमारत बनाने वालों और रिश्वत लेकर उन्हें मंजूरी देने वाले अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। नागरिकों की सुरक्षा को प्राथमिकता देना जरूरी है। नगर निकायों को नियमों के अनुपालन प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुलभ बनाना चाहिए। शहरी आवास के बदलते स्वरूप भी चिंताजनक हैं। शहर आधुनिक विलासिता तो चाहता है, लेकिन अक्सर सुरक्षित जीवन के मूलभूत सिद्धांतों की उपेक्षा करता है। एक आधुनिक शहर वह नहीं है, जिसमें ऊंची इमारतें, विलासिता, अनाप-शनाप कमाई हो, बल्कि वह है जहां मानव जीवन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

बेटियों की खातिर

विचित्र बात है कि विवाह के बाद समाज बेटियों को परिवार से अलग मान लेता है। जबकि बेटियां माता-पिता के प्रति अपना दायित्व बखूबी निभाती हैं और जरूरत पड़ने पर उनकी देखभाल करती हैं। हालांकि प्रतिकूल परिस्थिति में वे आश्रित भी रहती हैं। ऐसे में परिवार की परिभाषा में उनको शामिल न करना न केवल समानता के सिद्धांत के विपरीत, बल्कि अन्यायपूर्ण भी है। गौरतलब है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक फैसले को रद्द करते हुए बीते मंगलवार को शीर्ष न्यायालय ने व्यवस्था दी कि बेटी को अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति से बाहर नहीं रखा जा सकता और परिवार की परिभाषा में उन्हें शामिल न करना मनमाना, अनुचित तथा संवैधानिक रूप से अस्वीकार्य है। न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आलोक आराधे की पीठ ने उच्च न्यायालय के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें कहा गया था कि अनुकंपा के आधार पर नियुक्ति के उद्देश्य से परिवार की परिभाषा में विवाहित बेटी शामिल नहीं है। इस पर एक मृत राशन विक्रेता की बेटी ने आदेश को चुनौती दी, जिसमें अनुकंपा के आधार पर उचित मूल्य की दुकान के डीलर के रूप में नियुक्ति के उसके दावे को खारिज कर दिया गया था।

इस परिप्रेक्ष्य में शीर्ष अदालत ने याद दिलाया है कि विवाह न तो बेटी और माता-पिता के बीच बंधन को समाप्त करता है और न ही आश्रित नहीं होने का वैध आधार प्रदान करता है। दो मत नहीं कि परिवार में बेटे-बेटियों के समान अधिकार हैं। इसे स्वीकार करना होगा और बेटियों के अधिकारों का हमें विशेष ध्यान रखना होगा। अदालत का यह कहना उचित है कि निर्भरता एक तथ्यात्मक प्रश्न है। इसका निर्णायक निर्धारण नहीं किया जा सकता। निस्संदेह परिवार की परिभाषा में वैवाहिक स्थिति से ऊपर उठ कर परस्पर निर्भरता को भी समझने की जरूरत है। इसे इस संदर्भ में भी देखना चाहिए कि जब एक विवाहित पुत्र परिवार का हिस्सा होता है, तो विवाहित बेटी से किस आधार पर भेदभाव किया जा सकता है? शीर्ष न्यायालय ने इसी असमानता को दूर करने का संदेश दिया है। इससे बेटियों के अधिकारों की सुरक्षा एक बार और सुनिश्चित हुई है।

बढ़ते वैश्विक ताप से संकट में खेती

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट ने जिस खतरे की ओर ध्यान खींचा है, वह केवल तापमान बढ़ने की खबर नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के सबसे महत्त्वपूर्ण आधार- कृषि और खाद्य सुरक्षा पर मंडराता संकट है।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

धरती जब सूरज के ताप से झुलसने लगे, तब केवल मौसम नहीं बदलता, जीवन का पूरा संतुलन डगमगाने लगता है। कभी जेठ की दोपहर ऋतु का स्वाभाविक स्वभाव मानी जाती थी। मगर आज वही तपती दोपहर भीषण गर्मी का पर्याय बनती जा रही है। खेतों की नमी सूख रही है, नदियों का जल सिकुड़ रहा है, पेड़ों की हरियाली पीली पड़ती जा रही है और किसानों के चेहरे पर भविष्य की चिंता की गहरी रेखाएं उभर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र की हालिया रिपोर्ट ने जिस खतरे की ओर दुनिया का ध्यान खींचा है, वह केवल तापमान बढ़ने की खबर नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के सबसे महत्त्वपूर्ण आधार- कृषि और खाद्य सुरक्षा पर मंडराता संकट है। लू चलना अब एक मौसमी घटना नहीं रही, बल्कि वह धीरे-धीरे समाज, रोजगार और मानव जीवन के लिए गंभीर चुनौती बनती जा रही है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए यह संकट अधिक चिंताजनक है। यहां करोड़ों लोगों की आजीविका खेती पर निर्भर है। खेत केवल अन्न नहीं उगाते, वे गांवों की अर्थव्यवस्था, परिवारों की उम्मीदें और समाज की स्थिरता को भी जीवित रखते हैं। जब तापमान सामान्य से कई डिग्री ऊपर पहुंच जाता है और लू के थपेड़े लगातार कई दिनों तक चलते हैं, तब सबसे पहले खेत प्रभावित होते हैं। मिट्टी की नमी समाप्त होने लगती है। फसलों का विकास रुक जाता है और उत्पादन में भारी गिरावट आने लगती है। विशेष रूप से धान जैसी फसलें अत्यधिक तापमान के प्रति बेहद संवेदनशील होती हैं। यही कारण है कि भारत में धान की पैदावार पर बड़े खतरे की आशंका जताई गई है।

भारत में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। कभी मार्च-अप्रैल तक सुहावना रहने वाला मौसम अब फरवरी के अंत से ही गर्म होने लगता है। कई राज्यों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच गया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में लू की तीव्रता हर वर्ष बढ़ रही है। इसका सबसे गहरा असर खेती पर पड़ रहा है। गेहूं की फसल समय से पहले पकने लगती है, दाने का आकार छोटा हो जाता है और उत्पादन घट जाता है। धान की खेती में पानी की आवश्यकता अधिक होती है, लेकिन बढ़ती गर्मी और बारिश कम होने के कारण जल संकट गहराता जा रहा है। जब खेतों में पर्याप्त पानी नहीं पहुंचता, तब किसानों की पूरी मेहनत कुछ ही दिनों में बर्बाद हो जाती है। पहले किसान मौसम के संकेतों को देख कर खेती की योजना बना लेते थे, लेकिन अब मौसम की अनिश्चितता ने अनुभव और परंपरा दोनों को चुनौती दे दी है। यही कारण है कि खेती धीरे-धीरे जोखिम भरा व्यवसाय बनती जा रही है।

अत्यधिक गर्मी के कारण दुनिया भर में करोड़ों कार्य घंटे प्रभावित हो रहे हैं। भारत में यह स्थिति और गंभीर है, क्योंकि यहां बड़ी आबादी खुले वातावरण में काम करती है। खेतों, निर्माण स्थलों और फैक्टरियों में काम करने वाले श्रमिक सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। जब गर्मी असहनीय हो जाती है, तब काम के घंटे घट जाते हैं और मजदूरी पर इसका असर पड़ता है। फिर इसका सीधा प्रभाव गरीब परिवारों की आय पर पड़ता है। गांवों

की अर्थव्यवस्था में कृषि केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिरता का आधार भी है। यदि खेती लगातार नुकसान देने लगेगी, तो ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी और पलायन बढ़ेगा। किसान शहरों की ओर रोजगार की तलाश में जाएंगे, जिससे शहरी क्षेत्रों पर अतिरिक्त दबाव बढ़ेगा।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए वैश्विक ताप से उपजा संकट अधिक चिंताजनक है। यहां करोड़ों लोगों की आजीविका खेती पर निर्भर है। खेत केवल अन्न नहीं उगाते, वे गांवों की अर्थव्यवस्था, परिवारों की उम्मीदें और समाज की स्थिरता को भी जीवित रखते हैं। जब तापमान सामान्य से कई डिग्री ऊपर पहुंच जाता है और लू के थपेड़े लगातार कई दिनों तक चलते हैं, तब सबसे पहले खेत प्रभावित होते हैं। मिट्टी की नमी समाप्त होने लगती है। फसलों का विकास रुक जाता है और उत्पादन में भारी गिरावट आने लगती है। विशेष रूप से धान जैसी फसलें अत्यधिक तापमान के प्रति बेहद संवेदनशील होती हैं। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में भारत में धान की पैदावार पर बड़े खतरे की आशंका जताई गई है।

पहले ही महानगर भीड़, प्रदूषण और संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं।

पशुपालन पर भी गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। ग्रामीण भारत में खेती के साथ-साथ पशुपालन आजीविका का महत्त्वपूर्ण साधन है। अत्यधिक गर्मी के कारण पशुओं में दूध उत्पादन की क्षमता कम हो जाती है। चारे और पानी की कमी से उनकी सेहत पर भी असर पड़ता है। मुर्गी पालन उद्योग भी तापमान बढ़ने से प्रभावित हो रहा है। गर्मी बढ़ने पर पक्षियों की मृत्यु दर बढ़ जाती है, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। फलों और सब्जियों की खेती भी इस संकट से अछूती नहीं है। अधिक तापमान के कारण फल समय से पहले पक जाते हैं और उनकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। सब्जियों की पैदावार घटने से बाजार में कीमतें बढ़ती हैं और महंगाई आम लोगों की रसोई तक पहुंच जाती है।

भारत में चावल उत्पादन पर मंडराता खतरा भी चिंता का विषय है। चावल केवल एक फसल नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के भोजन का आधार है। पूर्वी भारत सबसे बड़ा धान उत्पादक क्षेत्र है। यदि यहां तापमान लगातार बढ़ता रहा और पानी की उपलब्धता घटती गई, तो उत्पादन में भारी गिरावट आ सकती है। यह स्थिति केवल किसानों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे देश की खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती होगी। खाद्यान्न की कमी से कीमतें बढ़ेंगी, तो गरीब तबके पर बोझ बढ़ेगा और सामाजिक असमानता और गहरी हो सकती है। इस संकट का सबसे दुखद पक्ष यह है कि इसके लिए सबसे कम जिम्मेदार लोग ही सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। गांवों के गरीब किसान, खेतिहर मजदूर और छोटे उत्पादक पर्यावरण को सबसे कम नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन की सबसे बड़ी कीमत वही चुका रहे हैं। दूसरी ओर, दुनिया के विकसित देशों ने दशकों तक औद्योगिक विकास के नाम पर भारी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन किया। आज जब पृथ्वी गर्म हो रही है, तब उसका दुष्परिणाम विकासशील देशों को भुगतना पड़ रहा है। इसलिए जलवायु न्याय की चर्चा भी अब वैश्विक मंचों पर तेज हो रही है।

कृषि नीति में अब हमें व्यापक बदलाव करने होंगे। किसानों को मौसम की सटीक जानकारी, फसल बीमा और तकनीकी सहायता उपलब्ध करानी होगी। सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई प्रणाली और प्राकृतिक खेती जैसे विकल्प भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण साबित हो सकते हैं। शहरों में हरित क्षेत्र बढ़ाने, पेड़ लगाने और प्रदूषण कम करने की दिशा में गंभीर प्रयास करने होंगे। केवल सरकारी योजनाएं पर्याप्त नहीं होंगी, बल्कि समाज को भी अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा। अत्यधिक उपभोग, संसाधनों की बर्बादी और प्रकृति के प्रति असंवेदनशीलता ने ही इस संकट को जन्म दिया है। यदि मनुष्य प्रकृति के साथ संतुलन बना कर नहीं चलेगा, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन और कठिन हो जाएगा।

हमें यह समझना होगा कि धरती केवल संसाधनों का भंडार नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। खेतों की हरियाली केवल किसानों की नहीं, पूरे समाज के लिए जीवन है। यदि खेती संकट में पड़ेगी, तो शहर भी सुरक्षित नहीं रहेंगे। भोजन की हर थाली खेतों से होकर गुजरती है और खेतों का भविष्य अब जलवायु परिवर्तन की आग में झुलस रहा है। यह समय केवल चिंतन का नहीं, बल्कि सामूहिक संकल्प का है। यदि आज भी दुनिया ने जलवायु परिवर्तन को गंभीरता से नहीं लिया, तो आने वाले वर्षों में सूखी धरती और खाली खेत कठोर वास्तविकता बन सकते हैं। इसलिए यह केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व का प्रश्न है। धरती को बचाना अब कोई आदर्शवादी सपना नहीं, बल्कि जीवन को बचाने की अनिवार्य शर्त बन चुका है।

संयमित सत्य की शक्ति

तनुजा चौबे

हममें से कई लोग केवल सत्य का साथ देते हैं और सत्य बोलने को ही जीवन का सबसे बड़ा धर्म मानते हैं। अपने जीवन को नियमों और सिद्धांतों के साथ जीना व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाता है। ऐसा व्यक्ति अपने भीतर यह विश्वास रखता है कि अगर वह खुद गलत नहीं करेगा, तो भविष्य में उसके साथ भी गलत नहीं होगा। यही सोच उसे कठिन परिस्थितियों में भी सच्चाई का साथ देने का साहस देती है। पर सत्य केवल शब्द नहीं होता, वह एक प्रभाव भी होता है। वह किसी के मन को संभाल सकता है और किसी को भीतर तक तोड़ भी सकता है। इसलिए जीवन में केवल सत्य बोलना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि यह समझना भी आवश्यक है कि सत्य किस प्रकार कहा जा रहा है। बचपन से हमें सिखाया जाता है कि हमेशा सच बोलो। धीरे-धीरे यही आदत हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाती है। पर बड़े होने पर जब हम रिश्तों की जटिलताओं को समझते हैं, तब यह एहसास होता है कि हर सत्य को उसी कठोरता से कहना उचित नहीं होता, जिस कठोरता से हम उसे सोचते हैं। कई बार सच बोलने की जल्दबाजी रिश्तों में दूरी पैदा कर देती है।

सत्य का उद्देश्य केवल सही बात तक पहुंचना होना चाहिए। जब सत्य कठोरता का वस्त्र पहन लेता है, तब वह संवाद नहीं, प्रहार बन जाता है। जब कोई व्यक्ति संवेदनशीलता के साथ अपनी बात कहता है, तब सामने वाला पूरी तरह टूटता नहीं, बल्कि सोचने के लिए प्रेरित होता है। यही संयमित सत्य की सबसे बड़ी शक्ति है। अक्सर देखा जाता है कि दो लोगों के बीच बहस होते-होते ऐसी स्थिति बन जाती है जहां दोनों केवल जीतना चाहते हैं। उस समय वे एक-दूसरे को उसकी कमियां, असफलताएं और वास्तविकता का आईना दिखाने लगते हैं। धीरे-धीरे सत्य संवाद का माध्यम न रह कर आक्रमण का हथियार बन जाता है। दोनों पक्ष यह भूल जाते हैं कि बहस जीतने से अधिक महत्त्वपूर्ण संबंधों को बचाना होता है। दो लोगों की सोच अलग हो गई है, तो यह कहने के बजाय कि 'तुम्हारे साथ चलना संभव नहीं,' यह कहना अधिक उचित होगा कि 'शायद इस समय हमारी सोच अलग है। कुछ समय स्वयं को समझ कर फिर इस संबंध को नए दृष्टिकोण से देख सकते हैं।' ऐसे शब्द सामने वाले को सम्मान के साथ सोचने का अवसर देते हैं।

राय देना और लेना भी सत्य को व्यक्त करने की एक सुंदर कला है। हर बात को अंतिम निर्णय की तरह कहना आवश्यक नहीं होता। संतुलित शब्दों में कही गई बात अधिक प्रभाव छोड़ती है। बोलने से पहले सोचना और सोचने के बाद बोलना ही समझदारी है। सत्य और ईमानदारी दोनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। ईमानदारी व्यक्ति को निडर बनाती है, अगर उसी ईमानदारी में संयम न हो, तो वह कठोरता का रूप ले सकती है।

किसी भी सत्य को कहने से पहले यह समझना जरूरी है कि उसे किस परिस्थिति में और किस व्यक्ति से कहा जा रहा है। अगर व्यक्ति को सम्मान और अपनापन महसूस हो, तो वह कठिन से कठिन सत्य को भी स्वीकार करने की क्षमता रखता है। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन्हें कहने से अधिक चुप रहना उचित होता है। हर सत्य को हर समय कहना आवश्यक नहीं होता। अनावश्यक कहा गया सत्य कई बार विश्वास की जड़ों को हिला देता है। लोग केवल शब्द नहीं सुनते, वे उनके पीछे छिपे भाव भी महसूस करते हैं। अगर उन्हें यह महसूस हो कि सामने वाला उन्हें छोटा साबित करना चाहता है, तो वे सत्य को स्वीकार करने के बजाय उससे दूर होने लगते हैं।

वैचारिक मतभेदों में यह स्थिति और अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। जब किसी विचारधारा, सोच या सिद्धांत पर चर्चा होती है, तब आम तौर पर हर व्यक्ति अपनी बात को सही सिद्ध करने में लग जाता है। धीरे-धीरे संवाद समाप्त होने लगता है और अहंकार बढ़ने लगता है। व्यक्ति तर्क देने के बजाय स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करने लगता है। यही वह क्षण होता है जब ईमानदारी आक्रामकता में बदल जाती है और संबंधों में अविश्वास जन्म लेने लगता है। ऐसी परिस्थिति में सबसे महत्त्वपूर्ण होता है संवाद को सुरक्षित रखना। व्यक्ति की सोच पर हमला करने के बजाय उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। अगर सामने वाले को यह महसूस हो कि उसकी बात भी सुनी जा रही है, तो वह जिद पर नहीं उतरता। सम्मानजनक संवाद दो लोगों के बीच विश्वास को जीवित रखता है।

सत्य को कभी आदेश की तरह नहीं, बल्कि सुझाव और समझ की तरह रखना चाहिए। जब सत्य को थोप दिया जाता है, तब वह विरोध पैदा करता है। पर जब वही सत्य संवेदनशीलता और सम्मान के साथ कहा जाता है, तब वह व्यक्ति के भीतर धीरे-धीरे जगह बनाता है। यही कारण है कि संयमित सत्य अधिक प्रभावशाली होता है। ईमानदार और सत्यप्रिय व्यक्ति कभी कमजोर नहीं होता। उसकी सबसे बड़ी शक्ति उसका आत्मबल और उसका संयम होता है। वह जानता है कि हर लड़ाई शब्दों से नहीं जीती जाती। कुछ विजय धैर्य, समझ और समय के साथ मिलती हैं। सत्य का मार्ग कठिन अवश्य होता है, लेकिन उस मार्ग पर अगर संयम, संवेदनशीलता और नीतिगत व्यवहार साथ हों, तो वही सत्य आखिर संबंधों को तोड़ने के बजाय उन्हें और अधिक गहरा बना सकता है।

सच यह है कि ईमानदारी के साथ कहा गया सत्य कभी हारता नहीं। वह कठिन रास्तों से गुजरता है, लोगों की असहमति सहता है, कई बार अकेलापन भी महसूस करता है, पर आखिरकार वही सत्य सम्मान प्राप्त करता है। आत्मबल, संयम और संवेदनशील व्यवहार ही वे आधार हैं, जिन पर सत्य और ईमानदारी लंबे समय तक टिके रह सकते हैं।

दुनिया मेरे आगे

जब किसी विचारधारा, सोच या सिद्धांत पर चर्चा होती है, तब आमतौर पर हर व्यक्ति अपनी बात को सही सिद्ध करने में लग जाता है। धीरे-धीरे संवाद समाप्त होने लगता है और अहंकार बढ़ने लगता है। व्यक्ति तर्क देने के बजाय स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करने लगता है।

विकास के समांतर

सबका साथ, सबका विकास के नारे पर देश में सरकार चल रही है। मगर गरीबों का जीवनस्तर अब भी चिंताजनक बना हुआ है। आज जगह-जगह बड़ी संख्या में मजदूरों को काम की तलाश में देखा जा सकता है। उन्हें कभी काम मिलता है, तो कभी नहीं भी। कभी-कभी उनको दो जून रोटी भी नसीब नहीं हो पाती है। पढ़े-लिखे बेरोजगार भी इस समय भटक रहे हैं। एक नौकरी के लिए हजारों आवेदन आ जाते हैं। ऐसे में बड़ी संख्या में युवा नौकरी से वंचित रह जाते हैं। मुफ्त की रेवड़ियों के बजाय 'काम के बदले दाम' देने की योजना अगर सरकार बनाए, तो काम भी होगा, दाम का भी सदुपयोग होगा। इससे युवाओं का मनोबल भी नहीं गिरेगा। अगर मुफ्त की रेवड़ियां बंद हो जाएं, तो उस धन से रोजगार के कई अवसर सृजित किए जा सकते हैं जो बेरोजगार युवकों को काम देने में सहायक साबित हो सकते हैं। सबको दो जून की रोटी के लिए भटकना न पड़े और दो हाथों को काम मिले, तभी गरीबी दूर हो सकती है।

– शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

गहराती चुनौती

आज पृथ्वी के बढ़ते तापमान का प्रभाव भारत जैसे कृषि प्रधान देश पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का संतुलन बिगड़ रहा है, जिससे कभी अत्यधिक वर्षा, तो कभी भीषण सूखे की स्थिति पैदा हो रही है। इसका सीधा असर कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा पर पड़ रहा है। हिमालयी क्षेत्रों में बर्फबारी कम होने और हिमनदों के तेजी से पिघलने से जल स्रोत प्रभावित हो रहे हैं। उत्तराखंड के औली जैसे क्षेत्रों में पर्याप्त बर्फ न पड़ने के कारण शीतकालीन खेलों पर भी असर पड़ा है। वहीं समुद्र का बढ़ता जलस्तर तटीय क्षेत्रों और द्वीपों के लिए खतरा बनता जा रहा है। वैश्विक ताप का मुख्य कारण वनों की कटाई, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग तथा औद्योगिक प्रदूषण है। ग्रीनहाउस गैसें वातावरण का तापमान लगातार बढ़ा रही हैं। इससे बाढ़, चक्रवात और लू सहित अन्य प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं।

– वरुण कुमार, जमशेदपुर

तकनीक की सीमा

अभी नीट के प्रश्नपत्र लीक होने का मामला शांत भी नहीं हुआ था कि अब केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बारहवीं कक्षा की 'आनस्क्रीन मार्किंग सिस्टम' का मामला सुर्खियों में है। हालांकि विद्यार्थियों को भरोसा दिया गया है कि उनकी समस्याओं का हल निकाला जाएगा। सवाल यह है कि देश के सबसे बड़े शिक्षा बोर्ड ने इतनी बड़ी गलती कैसे कर दी? अब चाहे शिक्षा मंत्रालय और बोर्ड इसके लिए जो तर्क दें, लेकिन क्या इससे विद्यार्थियों को इंसाफ मिलेगा? मानसिक रूप से उन्हें जो परेशानी हुई, क्या उसकी भरपाई होगी? क्या बोर्ड सभी विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं की फिर से जांच करेगा? माना कि सीबीएसई ने उत्तर पुस्तिकाओं की जांच के लिए इस बार नई तकनीक अपनाई, लेकिन लगता है कि इस तकनीक में अभी कमियां हैं। आधुनिक तकनीक से काम करने का मतलब होता है कम समय में अच्छा और सौ फीसद सही काम, न कि गलतियों की भरमार।

– राजेश कुमार चौहान, जलंधर

बेलगाम अपराधी

दिल्ली में पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह अपराध बढ़े हैं, यह चिंता का विषय है। कई अपराधों में नाबालिग शामिल पाए गए हैं। ये अपराधी घातक हथियार लेकर घूमते हैं। प्रश्न उठता है कि उनके पास इतने घातक हथियार कहां से और कैसे आ रहे हैं। कौन इनकी आपूर्ति कर रहा है और कौन लोग हैं जो दिल्ली को दहलाना चाहते हैं? इनके जवाब जानना हर नागरिक के लिए जरूरी है। दिल्ली पुलिस की बीट कांस्टेबल व्यवस्था हमेशा सर्वश्रेष्ठ मानी गई, लेकिन अब यह व्यवस्था गायब हो गई है। खुफिया तंत्र भी निष्प्रभावी हो गया है। दिल्ली में अपराधों के बढ़ने का मुख्य कारण गश्त की कमी है। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जहां लगातार अपराध हो रहे हैं। ऐसे में खुफिया तंत्र को मजबूत करना, गश्त बढ़ाना और जिम्मेदारी तय करना बेहद जरूरी है। देश की राजधानी में अपराध बढ़ने से नागरिक खुद को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं।

– आरके शर्मा, दिल्ली

लोकमानस
loksatta@expressindia.com

आरबीआयने सरकारला दाखवलेला आरसा

‘मूल्य नाही; मान तरी!’ हा अग्रलेख (३ जून) वाचला. नोटाबंदीनंतरच्या काळात ‘जी-हुजुरी’ करणाऱ्यांनी नव्या नोटांमध्ये जमिनीखालून सिग्नल देणारी नॅनो जीपीएस चीप असल्याचा शोध लावला होता. आज वापरात असलेल्या रोख रकमेचे प्रमाण पाहता, सारेच दावे पोकळ ठरले आहेत. त्या अत्याधुनिक नोटा अवघ्या काही वर्षांत फाटल्या आणि त्यांच्या छपाईवर जनतेच्या कराचे सहा हजार ३७८ कोटी रुपये स्वाहा झाले.

रोखरहित भारताचा उदोउदो करणाऱ्या सरकारला आरबीआयच्या आकडेवारीने आरसा दाखवला आहे. भाजीवाला डिजिटल पेमेंट घेतो म्हणून पाठ थोपटून घेणाऱ्यांना हे दिसत नाही का, की बाजारातील रोख अडीच पटीने वाढली आहे. पूर्वी नोटांचा आकार बदलण्याच्या तुघलकी निर्णयामुळे बँकांना एटीएम फेरबदलांसाठी हजारो कोटींचा भुर्दंड बसला. आता तर निसर्गाला घातक ठरणाऱ्या प्लास्टिकच्या नोटा कोंबण्याची नवी टूम काढली आहे. अर्थात, एका लाडक्या ‘सरकारस्नेही’ उद्योगपतीचा या प्लास्टिक रसायनांच्या व्यवसायात झालेला प्रवेश आणि आरबीआयचा हा निर्णय, हा केवळ योगायोग आहे, यावर विश्वास केवळ ‘भक्त’च ठेवू शकतात.

महागाईचा आगडोंब उसळला असताना आरबीआयच्या आगामी बैठकीत व्याजदराबाबत नेहमीप्रमाणे ‘जैसे थे’ धोरण स्वीकारून सरकारची मर्जी राखली जाण्याचीच दाट शक्यता आहे, कारण स्वायत्ततेपेक्षा सरकारला खूश ठेवणे महत्त्वाचे आहे. रुपयाचे आंतरराष्ट्रीय मूल्य सांभाळता आले नाही, म्हणून आता नोटांचे रंगरूप बदलून लक्ष भरकटवले जात आहे. कागदाचा तुकडा आता प्लास्टिकचा होईलही, पण त्यामुळे ढासळत्या अर्थव्यवस्थेचा मान वाढणार की सरकारचे हसे होणार, हे येणारा काळच ठरवेल!

■ **परेश बंग,** मूर्तिजापूर (अकोला)

विशाखापट्टणमची स्वतंत्र आरबीआय?

‘मूल्य नाही, मान तरी’ हे संपादकीय वाचले. या पार्श्वभूमीवर गेली अनेक वर्षे विशाखापट्टणम शहरात एक अजब वहिवाट आहे. ती पहाता ‘मानही नसला तरी चालेल, पण अस्तित्व स्वीकारा’ असे म्हणावेसे वाटते. याचे कारण, येथे पाच रुपयांचे नाणे कुणी स्वीकारत नाही. रिक्षावाला असो, की चहा टपरी पाचचे नाणे पुढे केले, की समोरचा ‘ये यहां नहीं चलता है’ असे सांगून परत करतो. आपण अर्थातच अवाक होतो. मग ते नाणे कसे खोटे नाही, आरबीआयने पास केलेले आहे वगैरे चऱ्हाट लावतो.

समोरच्याने अर्थातच हे चऱ्हाट शंभरदा ऐकलेले असते. ते सफाईने टाळून तो शेवटच्या मुद्द्यावर येतो. ‘मी हे नाणे घेतले, तरी माझ्याकडून ते कुणी घेणार नाही.’ येथे आपण अवाक होतो, नि विचारतो ‘विशाखापट्टणमची आरबीआय वेगळी आहे का?’ समोरचा (या खेपेस जरा हसून) उत्तरतो ‘ते माहीत नाही, पण हे नाणे इथे चालणार नाही हे खरे.’ बॅगेचे कानाकोपरे धुंडाळून, पाकिटातली कोपऱ्यात लोटली गेलेली नाणी हुडकून कसाबसा व्यवहार संपतो. आपण आश्चर्यदिःगमूढ म्हणतात तसे होत पावले टाकू लागतो.

■ **अभिजित भाटलेकर**

दहशतवाद आटोक्यात आला, त्याचे काय?

‘मूल्य नाही; मान तरी!’ हा अग्रलेख (३ जून) वाचला. ‘लोकसत्ता’ निश्चलनीकरणाच्या कायमच विरोधात राहिला आहे. सरकारने नोटाबंदी झाल्यावर काळा पैसा नष्ट होईल, असा दावा केला तरी तसे इतक्या सहजी होणार नाही, हे कळण्याएवढे भारतीय नागरिक नक्कीच हुशार आहेत. काश्मीर खोऱ्यात अतिरेकी कारवाया नियंत्रणात आल्या आहेत, जवानांवर दगडफेक वगैरे घटनांचे प्रमाण कमी झाले आहे.

एकूण व्यवहारात रोख रकमेचे प्रमाण वाढत असल्याचे रिझर्व्ह बँकेची आकडेवारी दाखवत असली तरी त्याच कालावधीत अर्थव्यवस्थेचा एकूण वाढलेला आकार आणि त्याबरोबरच सातत्याने वाढत असणारे डिजिटल व्यवहार यांची एकमेकांशी तुलना केल्यानंतरच नेमके चित्र समोर येऊ शकते. केवळ वाढत जाणाऱ्या रोख रकमेच्या व्यवहाराची माहिती या एकाच निकषाच्या आधारे सरकारला झोडपणे अन्यायकारक आहे.

■ **संदीप दातार**

सांस्कृतिक, साहित्यिक विषय का नाहीत?

‘रहे ना रहे हम...’ हा अग्रलेख (२ जून) वाचला. अनेक दिवसांनी वेगळे, चांगले वाचायची संधी मिळाली. अलीकडे राजकीय, सामाजिक, आंतरराष्ट्रीय विषयांनाच अग्रलेखांमध्ये प्राधान्य दिले जाते परंतु संगीत विषयक, सांस्कृतिक, साहित्यिक असे विषयदेखील असावेत असे वाटते. ‘लोकमानस’मधील प्रतिक्रिया देखील अग्रलेख वा ‘अन्वयार्थ’वरीलच असतात. विविध विषयांबाबतच्या प्रतिक्रियांना प्राधान्य दिले जावे असे वाटते.

■ **सुरेश पटवर्धन,** कल्याण

मनुष्यहानी भरून न निघणारी

मिथाइल अल्कोहोल मिसळलेली दारू उत्पादकांना स्वस्त पडते, पण सेवन करणाऱ्यांना मरणाची वाट दाखवते. संबंधित यंत्रणांनी अधिक काळजी घेणे गरजेचे असून याबाबत कडक कारवाई अपेक्षित आहे. व्यसनमुक्ती केंद्रे कमी असून अनेकांना याची माहिती नसते. प्रबोधनात सरकार आणि एकंदर समाजच कमी पडला आहे. आता हे प्रकरण तापले आहे. काही दिवसांत सारे काही शांत होईल, पण झालेली जीवितहानी भरून निघणार नाही.

■ **प्र. मु. काळे,** सातपूर (नाशिक)

आयजीच्या जिवावर बायजी उदार

‘अपात्र बहिणींचेही लाड’ हा ‘अन्वयार्थ’ वाचला. लाडकी बहीण योजनेवर पहिल्याच वर्षी सुमारे ४६ हजार कोटी रुपये खर्च झाले. योजनेचा लाभ देण्यासाठी उत्पन्नाचे निकष लावण्यात आले होते, मात्र जाणूनबुजून त्याकडे दुर्लक्ष करून सरसा पात्रता पाडून घेतली गेली.

सर्वच महिलांनी वाहत्या गंगेत हात धुऊन घेतले. आम्ही कसा महिलांचा सन्मान करतो, महिलांना स्वावलंबी बनवतो, त्यांच्या चेहऱ्यावर आनंद फुलवतो, वगैरे वल्गना केल्या गेल्या. इतर अनेक योजनांना कात्री लावून ‘लाडकी बहीण योजना’ सुरू ठेवण्यात आली. राज्याच्या तिजोरीत खडखडाट झाला असताना त्याचे सोयरसुतक न बाळगता वर्धापनदिनापर्यंत लाडक्या भावाचे व बहिणींचे मोठमोठे फोटो झळकवले गेले. ‘आयजीच्या जिवावर बायजी उदार’ या तत्त्वावर सरकारने ही योजना राबवली.

आता तिजोरीने तळ गाठल्यावर अपात्र बहिणींचा शोध सुरू करण्यात आला आहे. त्यात ८० लाखांपेक्षा अधिक नावे बाद झाली आहेत. १५ हजार कोटींपेक्षा जास्त रक्कम अपात्र बहिणींना दिली गेली. या अपात्र बहिणींकडून सरकार पैसे वसूल करणार नाही, अशी मखलाशी अजूनही केली जात आहेच. असे अन्य कोणत्या पक्षाच्या राजवटीत झाले असते, तर आजच्या सत्ताधाऱ्यांनी त्यांना अगदी ‘सळो की पळो’ केले असते. शेवटी ‘सत्तेपुढे शहाणपण चालत नाही’ हेच खरे.

■ **उर्मिला पाटील,** कल्याण

सरकारने आता तरी सावध राहावे

‘अपात्र बहिणींचे लाड’ हा ‘अन्वयार्थ’ (३ जून) वाचला. एकनाथ शिंदे यांनी मुख्यमंत्रीपदी असताना ऐन निवडणुकीच्या तोंडावर ही योजना अमलात आणली. परंतु किती बहिणी निकषांत बसतात हे पहाणे त्यावेळचे मुख्यमंत्री, त्यांचे मंत्री आणि सरकार यांचे कर्तव्य नव्हते का? यांच्या खिशाला झळ बसली नाही, परंतु महागाई वाढवून जनतेच्या खिशांना कात्री लावली गेली. या बहिणींपैकी काहीजणी तर शासकीय कर्मचारी होत्या. कहर म्हणजे काही पुरुषांनीही याचा गैरफायदा घेतला.

मुख्यमंत्री फडणवीस यांनी आता हे सर्व उघडकीस आणले हे कौतुकास्पद! परंतु लबाड बहिणींना दिलेले पैसे माफ करणार आणि पुरुषांवर कारवाई करणार हा भेदभाव का? मुख्यमंत्र्यांनी आणखी खोलात जाऊन चौकशी करावी आणि स्त्री-पुरुष भेदभाव न करता जाणूनबुजून फसवणूक करणारे आणि यामध्ये त्यांना सल्ला देणारे जे कोणी असतील त्या सर्वांना कडक शिक्षा करावी, तरच सर्वसामान्य माणसाला न्याय मिळेल. आता मुख्यमंत्री फडणवीस यांनी शेतकऱ्यांना दोन लाख रुपये कर्जमाफी देण्याची घोषणा केली आहे. त्यामुळे कर्ज देणाऱ्या संस्थाही संकटात येऊ शकतात आणि यातही असे गैरप्रकार होणार नाहीत कशावरून? तेव्हा वेळीच सावध राहावे.

■ **प्रभाकर कदम,** मुलुंड (मुंबई)

बॉलीवूड राजकारणात अपयशी का ठरते?

तमिळनाडूत चित्रपटगृहे केवळ मनोरंजनापुरती सीमित नसून ती एखाद्या ‘राजकीय वर्गखोली’एवढी परिणामकारक आहेत. बॉलीवूड मात्र जनतेचे नेतृत्व करू शकणारे राजकीयदृष्ट्या प्रभावी महानायक निर्माण करण्यात अपयशी ठरले आहे...

हरीश एस. वानखेडे
‘जेएनयू’तील सहयोगी प्राध्यापक
enarish@gmail.com

सिनेकारण

दक्षिण भारतातील राज्य असलेल्या तमिळनाडूमध्ये एक वैशिष्ट्यपूर्ण आणि प्रबळ राजकीय परंपरा दीर्घकाळापासून अस्तित्वात आहे. येथे चित्रपटांकडे केवळ मनोरंजनाचे साधन म्हणून पाहिले जात नाही, तर मतदारांच्या राजकीय निवडींना आणि त्यांच्या जाणिवांना आकार देणारे एक प्रभावी माध्यम म्हणून त्याचा वापर केला जातो. एम. जी. रामचंद्रन आणि जे. जयललिता यांच्यासारख्या युगप्रवर्तक नेत्यांच्या कारकीर्दीपासून ते रजनीकांत, कमल हासन, खुशबू आणि विजयकांत यांच्यासारख्या कलाकारांच्या संमिश्र राजकीय प्रयोगांपर्यंत, तमिळनाडूने रुपेरी पडद्यावरील अभिनेत्यांना लोकप्रिय राजकीय नेत्यांच्या भूमिकेत वारंवार पाहिले आहे.

याच परंपरेचा आधुनिक विस्तार म्हणून तमिळ चित्रपटसृष्टीतील महानायक सी. जोसेफ विजय- ज्याला त्याचे चाहते आदराने ‘थलपती’ (सेनापती) म्हणतात- तो विधिमंडळाच्या पायऱ्या चढणारा नवा चेहरा ठरला. विधानसभा निवडणुकीतील त्यांचा नेत्रदीपक विजय हे सिद्ध करतो की, पडद्यावरील लोकप्रियतेला प्रामाणिक राजकीय महत्त्वाकांक्षेची जोड मिळते, तेव्हा लोकशाही व्यवस्थेत आमूलाग्र राजकीय बदल घडू शकतात.

याच्या अगदी उलट परिस्थिती बॉलीवूडमध्ये दिसते. हिंदी चित्रपटसृष्टीनेही अनेक दिग्गज अभिनेते आणि पडद्यावर लोकप्रिय ठरलेली नायकपात्रे निर्माण केली, परंतु हे नायक मुख्य प्रवाहातील राजकीय प्रक्रियेत केवळ परिघावर राहिले. हिंदी चित्रपटांचे प्रेक्षक अभिनेत्याला आपला तारणहार मानण्याऐवजी, बहुतांश वेळा चित्रपटांच्या वैचारिक वर्चस्वाला बळी पडतात आणि त्यातून प्रस्थापित सत्ताधारी वर्गाच्या सांस्कृतिक आणि वर्गीय हितसंबंधांचे रक्षण होते.

‘जेन झी’ स्थित्यंतर

राजकीय विश्लेषकांच्या मते, अभिनेता विजयचा हा झंझावाती उदय ही केवळ एक राजकीय घटना नसून ते ‘जेन झी’ स्थित्यंतर आहे. तमिळनाडूतील तरुण मतदारांचा मोठा वर्ग राज्यातील प्रस्थापित द्रविडीय पक्षांना कंटाळला आहे. हे पक्ष संकुचित प्रादेशिक गतिशीलता आणि सामाजिक न्यायाच्या जुन्याच घोषणांमध्ये अडकले आहेत, अशी या तरुणांची धारणा झाली आहे. या पोकळीमध्ये, विजयची लोकप्रियता आणि त्याचा धर्मनिरपेक्ष, सर्वसमावेशक दृष्टिकोन यांनी बदलासाठी उत्सुक असलेल्या तरुण पिढीला आकर्षित केले.

तमिळनाडूची ही चित्रपट-राजकारण संस्कृती जागतिक स्तरावर अद्वितीय आहे. जगातील इतर कोणत्याही चित्रपटसृष्टीने चित्रपट आणि राजकारण यांच्यात इतका दृढ आणि लोकशाहीला ढवळून काढणारा बंध निर्माण केलेला नाही. अनेक दशकांपासून तेथील स्थानिक चित्रपटगृहे ही केवळ मनोरंजनाची ठिकाणे नसून ती एक प्रकारची ‘राजकीय वर्गखोली’ बनली आहेत. या वर्गखोल्यांनी तमिळ अस्मिता आणि जातिअंताचा संदेश अत्यंत प्रभावी आणि भावुक कथानकांच्या माध्यमातून जनमानसात रुजवला.

तमिळ चित्रपटांमधील अवास्तव मारामारी, पुरुष-प्रधानिता आणि अति-नाट्यमयता यांच्यापलीकडे एक महत्त्वाची गोष्ट आहे, ती म्हणजे त्यांतील सामाजिक वास्तववाद. एमजीआर, रजनीकांत आणि विजय यांसारख्या नायकांनी पडद्यावर स्वतःची अशी प्रतिमा निर्माण केली, जी भ्रष्ट व्यवस्थेविरुद्ध आणि खलनायकी सत्ताधाऱ्यांविरुद्ध गरिबांच्या व शोषितांच्या हक्कासाठी लढणारा एक प्रामाणिक आणि धाडसी तारणहार दाखवते. परिणामी, जेव्हा हे अभिनेते प्रत्यक्ष राजकारणात प्रवेश करतात, तेव्हा जनता त्यांच्याकडे केवळ नट म्हणून पाहत नाही; तर ते आपल्या पडद्यावरील न्याय्य पात्राचेच प्रत्यक्ष रूप आहेत, असा दृढ विश्वास मतदारांमध्ये निर्माण होतो.

बॉलीवूडचे विश्लेषणात्मक अपयश

याउलट, हिंदी चित्रपटसृष्टी जनतेचे नेतृत्व करू शकणारे असे राजकीयदृष्ट्या प्रभावी महानायक निर्माण करण्यात अपयशी ठरली आहे. अमिताभ बच्चन, सुनील दत्त, धर्मेंद्र, हेमा मालिनी आणि अलीकडच्या काळात कंगना रणौत यांसारख्या कलाकारांनी संसदेत प्रवेश केला असला, तरी त्यांच्याकडे स्वतंत्र लोकचळवळ उभी करण्यासाठी लागणारा जमिनीवरचा जनाधार नव्हता. हिंदी चित्रपटांमधील नायकांनीही तमिळ नायकांप्रमाणेच व्यवस्थाविरोधी लढाऊ भूमिका साकारल्या आहेत. उदाहरणादाखल, ‘इन्कलाब’मधील अमिताभ बच्चन यांचा प्रस्थापित व्यवस्थेविरुद्धचा संताप, ‘घायल’मध्ये सनी देओलने भांडवलशाही शोषणाविरुद्ध पुकारलेले बंड वा ‘गब्बर’ चित्रपटात अक्षय कुमारने भ्रष्ट संस्थांमध्ये केलेली सुधारणा आठवते. परंतु बॉलीवूडच्या प्रेक्षकांनी काल्पनिक आणि वास्तव यांमधील अंतर काटेकोरपणे पाळले आहे. शाहरुख खानच्या वाढदिवसाला त्याच्या बंगल्याबाहेर लाखो चाहत्यांची गर्दी होत असली, तरी ही गर्दी केवळ सेलिब्रिटीच्या कौतुकासाठी असते. हे फॅन क्लब्स सामाजिक किंवा राजकीय चळवळींसाठी संघटित झालेले वैचारिक कार्यकर्ते नसतात. बॉलीवूडने चित्रपटाला एक व्यावसायिक उत्पादन म्हणून पाहिले, ज्यामुळे वंचित समूहांमध्ये दीर्घकालीन सामाजिक जाणीव निर्माण करण्यात ही चित्रपटसृष्टी असमर्थ ठरली.

वैचारिक आणि रचनात्मक फरक

चित्रपट हे निश्चितच व्यावसायिक नफ्यासाठी तयार केले जातात; परंतु प्रेक्षकांशी भावनिक बंध निर्माण करण्यामागील सामाजिक आणि राजकीय दृष्टिकोन काय आहे, हीच गोष्ट या दोन्ही चित्रपटसृष्टींना भिन्न ठरवते. बॉलीवूडने अगदी अलीकडच्या काळापर्यंत सामाजिक आणि राजकीय जबाबदाऱ्यांपेक्षा मनोरंजन आणि व्यावसायिक गणितांना प्राधान्य देण्यात कोणताही संकोच बाळगला नाही. दुसरीकडे, तमिळ चित्रपटसृष्टीने जरी मनोरंजनाच्या याच गणितांना स्वीकारले असले, तरी ती आपल्या सामाजिक आणि राजकीय संदेशांच्या माध्यमातून प्रेक्षकांना तितकीच आकर्षित करते, ज्यामध्ये अनेकदा सामाजिक न्याय, घटनात्मक नैतिकता आणि धर्मनिरपेक्षता या मूल्यांचा हिरिरीने पुरस्कार केला जातो.

या फरकाचा प्रेक्षकांच्या आकलनावरही खोल परिणाम होतो; तमिळ प्रेक्षक पडद्यावरील तारणहाराला त्यांच्या वास्तविक राजकीय हेतूचाच थेट विस्तार मानतात, तर हिंदी चित्रपटांचे प्रेक्षक कलाकारांचे कौतुक त्यांच्या अभिनय कौशल्यांपुरते मर्यादित ठेवतात आणि त्यांच्या राजकारणावर विश्वास ठेवत नाहीत. ही दरी फॅन क्लब्सच्या रचनेतही स्पष्टपणे प्रतिबिंबित होते. तमिळनाडूमध्ये अत्यंत शिस्तबद्ध आणि संघटित फॅन क्लब्सचे जाळे थेट राजकीय पक्षाच्या सक्षम कार्यकर्त्यांमध्ये रूपांतरित होते, मात्र बॉलीवूडचे फॅन क्लब्स केवळ उत्सवप्रेमी, व्यावसायिक आणि सामाजिक-राजकीय सक्रियतेपासून अलिप्त दिसतात.

उजव्या विचारसरणीचा उदय

चित्रपटाचा राजकीय साधन म्हणून वापर करण्याचे काही निश्चित तोटेही आहेत. जेव्हा चित्रपट राजकीय अजेंडा चालवण्याचे साधन होतो, तेव्हा कलाकारांचे स्वातंत्र्य, सर्जनशीलता आणि त्यांची चिकित्सक विचार करण्याची क्षमता धोक्यात येते. परंतु जेव्हा हा चित्रपट गरीब आणि शोषितांच्या समस्या मांडतो, तेव्हा त्याला एक नैतिक अधिष्ठान प्राप्त होते आणि तो कलेचे एक जबाबदार रूप बनतो. बॉलीवूडने प्रदीर्घ काळ राजकारणापासून अंतर राखल्यामुळे त्याला आपली सर्जनशील स्वायत्तता टिकवून ठेवता आली. त्यामुळे चित्रपटसृष्टी सत्ताधारी वर्गासमोर लाळघोटेपणा करण्यापासून दूर राहिली. डाव्या विचारसरणीचा प्रभाव असलेल्या ‘समांतर चित्रपटांनी’देखील प्रस्थापित राजकीय व्यवस्थेवर कडाडून टीका केली, लोकांमध्ये बौद्धिक जाणीव जागृत केली आणि म्हणूनच त्यांना प्रामाणिक कला मानले गेले.

परंतु अलीकडच्या काळात हिंदी चित्रपटसृष्टीत हिंदुत्ववादी चित्रपटांचा जो आक्रमक उदय झाला आहे, त्यामुळे ही ऐतिहासिक स्वायत्तता झपाट्याने नष्ट होत चालली आहे. हिंदी सिनेमाच्या या नव्या लाटेने तमिळ चित्रपट मॉडेलची अति-नाट्यमय आणि भावुक शैली तर आत्मसात केलीच, परंतु त्याचा वैचारिक दृष्टिकोन पूर्णपणे उलटा केला.

तमिळ चित्रपटसृष्टीने आर्थिक दुर्बल आणि कनिष्ठ जातींच्या वेदनांना वाचा फोडून आपले नैतिक स्थान निर्माण केले होते. याउलट, हिंदीतील नवा हिंदुत्ववादी चित्रपट प्रकार सत्ताधारी राजवटीच्या वर्चस्वाला कायदेशीर ठरवण्याची धडपड करताना दिसतो. हा प्रकार अल्पसंख्याकांच्या (विशेषतः मुस्लीम) विरोधात प्रतिगामी नरेटिव्ह उभा करतो आणि गरिबांच्या आर्थिक वास्तवापासून पूर्णपणे तुटलेला आहे.

नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री विजय जेव्हा आपल्या वास्तविक राजकीय प्रवासाला सुरुवात करत आहेत, तेव्हा ते चित्रपट माध्यमाच्या त्या ताकदीची आठवण करून देतात, जी प्रगतिशील आणि तळागाळातील सहानुभूतीशी जोडलेली आहे. दुसरीकडे, बॉलीवूड आज अशा वळणावर उभे आहे, जिथे बहुसंख्याकवादाशी तडजोड केल्यामुळे ते आपली सर्जनशील स्वायत्तता आणि लोकशाही प्रासंगिकता दोन्ही गमावण्याच्या उंबरठ्यावर आहे.

कुतूहल

वादळं कशी निर्माण होतात?

वेगाने वारा वाहू लागतो, ढगांचा गडगडाट होतो, त्यात धूळ, पाऊस, गारा यापैकी काही किंवा सर्वच गोष्टींचा अंतर्भाव होतो, त्याला ‘वादळ’ म्हणतात.

हवेचा दाब, तापमान आणि आर्द्रता यामध्ये जेव्हा मोठा फरक निर्माण होतो, तेव्हा हवेत वेगाने हालचाल होते आणि वादळ तयार होतं. मेघगर्जनेसह मुसळधार पाऊस किंवा गारपीट करणारं वादळ, कोरड्या प्रदेशात वाऱ्यामुळे धूळ उडवणारं धुळीचं वादळ, थंड प्रदेशात जोरदार वाऱ्यांसह बर्फवृष्टी करणारं हिमवादळ आणि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रातलं समुद्रावर तयार होणारं चक्रीवादळ, हे सगळे वादळांचे प्रकार आहेत. या सर्वांमध्ये चक्रीवादळं जास्त विध्वंसक असतात.

कर्कवृत्त आणि मकरवृत्त यामधल्या क्षेत्रावर म्हणजे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रावर वादळं निर्माण होण्यास अनुकूल परिस्थिती असते. जास्त उष्णतेमुळे कमी दाबाचं क्षेत्र निर्माण होऊन पोकळी तयार होते आणि इतर भागांतली हवा या कमी दाबाच्या क्षेत्राकडे खेचली जाते. पृथ्वीच्या स्वतःभोवती फिरण्याने या हवेला गती मिळते. इतर भागांतली हवा कमी दाबाकडे सरळ न जाता, चक्राकार फिरत राहते. कमी दाबाकडे जाणारी हवा समुद्रावरचं बाष्प घेऊन जाते. मध्यभागी पोकळी व भोवती फिरणारे बाष्पयुक्त वारे, यामुळे भोवऱ्यासारखं वादळ तयार होतं. यालाच चक्रीवादळ म्हणजेच ‘सायक्लॉन’ म्हणतात.

हिंदी महासागर, अटलांटिक महासागर, प्रशांत महासागर आणि ऑस्ट्रेलियाचा समुद्र इथे मोठ्या प्रमाणात चक्रीवादळं निर्माण होतात. हिंदी महासागरातल्या वादळांना ‘सायक्लॉन’, अटलांटिक महासागरातल्या वादळांना ‘हरिकेन’ तर प्रशांत महासागरातल्या वादळांना ‘टायफून’ म्हणतात.

समुद्रावरून पुढे सरकताना या वादळांच्या ऊर्जेत वाढ होऊन, ती विस्तारतात आणि अधिक तीव्रही होतात. त्यामुळे त्यांचा पुढे सरकण्याचा वेग वाढतो.

या वादळांचा वेग ताशी ५० ते २०० किलोमीटर, व्याप्ती १०० ते हजार किलोमीटर आणि उंची दहा ते १५ किलोमीटर असते. २०० किलोमीटरच्या पुढे वेग असलेल्या चक्रीवादळाला ‘सुपर सायक्लॉन’ म्हणतात. ही चक्रीवादळं मोठ्या प्रमाणात नुकसान करतात.

चक्रीवादळं भारतीय हवामानाचा महत्त्वाचा भाग आहेत. भारतात नैर्ऋत्य मोसमी पावसापूर्वी आणि मोसमी पावसानंतर चक्रीवादळं निर्माण होतात. मोसमी पावसापूर्वीची वादळं कमी प्रमाणात असतात. पावसाळ्यानंतर ऑक्टोबर व नोव्हेंबर महिन्यातली वादळं भारताच्या पूर्व व पश्चिम किनाऱ्यावर येऊन धडकतात.

जागतिक हवामानशास्त्र संघटनेच्या म्हणजेच ‘वर्ल्ड मिटिऑरॉलॉजिकल ऑर्गनायझेशन’च्या मार्गदर्शक तत्त्वांनुसार वादळांच्या प्रदेशातले देश सुपर सायक्लॉनला नावं सुचवतात आणि त्यातलं एक नाव त्या वादळाला दिलं जातं.

– अनघा शिराळकर
मराठी विज्ञान परिषद
ईमेल : office@mavipa.org
संकेतस्थळ : www.mavipa.org

उलटा चष्मा

हातभट्टीवाल्यांचे संमेलन...

*‘**हातभट्टीवर प्रेम** करणाऱ्या सर्वांचे स्वागत असो!’ असा फलक लावलेल्या शामियान्यासमोर रामदास आठवलेंचा ताफा थांबला. जमलेल्यांकडून टाळ्यांचा प्रचंड कडकडाट झाला. गर्दीतील काहींनी हातातल्या बाटल्या फोडत आठवलेंचे स्वागत केले. झोकांड्या खाणाऱ्यांच्या घोळक्यातून रामदासजी कसेबसे व्यासपीठावर पोहोचले. तिथे बसलेल्यांच्या तोंडातून येणाऱ्या तीव्र घमघमाटामुळे नाकाला रुमाल लावावा अशी त्यांची इच्छा झाली, पण बरे दिसणार नाही म्हणून त्यांनी ते टाळले. मग डुलत डुलत एक जण ध्वनिक्षेपकासमोर आला. तो कलंडू नये यासाठी एकाने त्याला धरून ठेवले होते. ‘हातभट्टीवाले मेरे यारो, या संकटात आपल्या बाजूने उभे राहण्याची हिंमत दाखवणारे आठवले साहेब हातभट्टीवाल्यांच्या संमेलनाला हजर झाले आहेत. त्यांचे दिलसे स्वागत’. तेवढ्यात खालून एक जण वर आला व त्याने दारूच्या शिशीच्या झाकणांचा हार आठवलेंच्या गळ्यात घातला. त्याला खाली ढकलून संयोजकाने बोलायला सुरुवात केली. ‘पिंपरी चिंचवडमध्ये हातभट्टीची पिऊन २१ लोक ठार झाल्यापासून सारेच आमच्याकडे वाईट नजरेने बघू लागले आहेत. आम्ही हातभट्टीची का पितो याचा कोणी विचार करत नाही. (एक उठतो व ‘अड्डा उद्ध्वस्त करणाऱ्या रोहित पवारांचा निषेध असो’ अशी घोषणा देतो). आम्ही दिवसभर कष्ट करून रात्री पितो व एकमेकांना सांभाळत घरी जातो. कुणालाही त्रास देत नाही. काही लोक मेले असतील, पण भट्टीवाल्यावर आमचा पूर्ण विश्वास आहे. चोरून, लपून मिश्रण करताना होते कधी चूक. सरकारने हातभट्टीला अधिकृत केले तर चुका होणारच नाही. (टाळ्या) आमची कमाईच एवढी कमी की आम्ही साधी देशी दारूसुद्धा पिऊ शकत नाही. स्वस्तात मिळणाऱ्या हातभट्टीकडे सरकारने करुणेने बघावे, अशी विनंती मी याप्रसंगी करतो. पोलीस कारवाई सुरू असूनसुद्धा हातभट्टीवाल्यांनी या कार्यक्रमासाठी आर्थिक सहकार्य केले त्याबद्दल त्यांचे आभार मानतो व आठवले साहेबांना मार्गदर्शनासाठी निमंत्रित करतो.’*

डोळे बंद करून ऐकत बसलेले साहेब उठले. घोषणांच्या निनादात त्यांनी भाषणाला सुरुवात केली. ‘तुमचे हातभट्टीवरचे प्रेम बघून मी गहिवरून गेलो. हे मला ठाऊक होते म्हणूनच मी या दारूला अधिकृत दर्जा द्या अशी मागणी केली. आजकाल आपल्या विचारांशी, कृतीशी प्रामाणिक राहणाऱ्यांची संख्या कमी होत आहे. तुम्ही गरीब असूनही प्रामाणिकपणा पाळता याबद्दल तुमचे कौतुक करावे तेवढे थोडे. (प्रचंड टाळ्या). आज देशी-विदेशी दारूचे चलन खूप वाढले आहे. तुलनेने तुम्ही मागास. अशांच्या बाजूने उभे राहण्यातच माझे आयुष्य गेले. मी ही मागणी करून तुमच्या दुःखाला वाचा फोडली. ती मान्य झाली तर हातभट्टीला स्कॉचपेक्षा चांगले दिवस येतील. (प्रेक्षकांमधून सामूहिक आवाज येतो.‘येऽऽ बात’) माझ्या पक्षाला कार्यकर्त्यांची गरज आहे. तेव्हा तुम्ही सर्व जण त्यात प्रवेश करा व सरकारविरोधात लढा उभारा. रोज सायंकाळी एक तास आंदोलन केले तरी चालेल. तुमच्या पाठीशी माझ्या कविता असतील.’ असे म्हणून त्यांनी कविता सादर केली.

काळ बदलला आहे, नव्या विचारांची कास धरा
मजुरांचा जीव वाचवायचा असेल तर हातभट्टी अधिकृत करा.

राजवाडे विचारविश्व

प्रस्तावनाविरहित खंडांचा धावता आढावा

राजवाड्यांनी ‘मराठ्यांच्या इतिहासाची साधने’ या शीर्षकाचे एकूण २२ खंड प्रकाशित केले, त्यांतील सर्व खंडांना काही त्यांनी प्रस्तावना लिहिल्या नाहीत. सहाव्या खंडांपर्यंतच्या प्रस्तावनांचा आपण शक्य तितका परिचय करून घेतला आहे. आता एकाच आठव्या खंडाच्या मोठ्या प्रस्तावनेचा आणि तीन खंडांच्या अगदीच छोट्या प्रस्तावनांचा आढावा घेणे शिल्लक राहिले आहे. याच टप्प्यावर त्यांनी उरलेल्या खंडांमधून वाचकांना काय काय उपलब्ध करून दिले, हे समजून घेणे आवश्यक आहे.

सातवा खंड १९०४ साली मुंबईहून प्रकाशित झाला होता, त्या खंडाची एकूण पृष्ठसंख्या ४३४ असली, तरीही ती ३८ अधिक १० अधिक २२६ अधिक ३२ अधिक १२८ अशा पाच विभागांत विखुरलेली होती. बहुधा तो संपूर्ण खंड एकाच मुद्रणालयात छापला न जाता वेगवेगळ्या छापखान्यांच्या सहकार्याने तयार केला गेला असावा. ‘या खंडाच्या कामकाजात म्हणजे साधनांच्या संकलनात व लिप्यंतरामध्ये ना. कृ. गद्रे, ज. र. घारपुरे, वा. रा. जोशी या तिघांचे आपल्याला साहाय्य झाले’, अशी राजवाड्यांनी नोंद मात्र केली होती. हैदराबाद येथील पेशव्यांचे वकील गोविंदराव काळे यांच्या संग्रहातील पत्रे या खंडात समाविष्ट होती, तसाच खर्ड्याच्या लढाईसंबंधीचा काही पत्रव्यवहारही समाविष्ट होता. सरंजामे सरदारांची यादी, दुसऱ्या बाजीरावाविषयीची टिपणे व काही मराठी शब्दांची व्युत्पत्ती कशी झाली, याबद्दलचा खुलासाही या खंडामध्ये होता.

नववा खंड १९०६ साली धुळ्याहून प्रकाशित झाला. तो पृष्ठसंख्येच्या दृष्टीने अगदीच लहान होता, त्यामध्ये फक्त एकाच शिलालेखावरचा मजकूर देण्यात आला होता; पण मराठ्यांच्या इतिहासाच्या दृष्टीने तो खूप महत्त्वाचा होता. ‘सत्कार्योत्तेजक सभे’च्या ‘प्रभात’मासिकात प्रसिद्ध झालेला तो तंजावरचा शिलालेख तेथील बृहदीश्वर देवालयात कोरलेला असून राजवाड्यांनी तेथे जाऊन प्रचंड सायासाने तो मिळवला म्हणजे शब्दबद्ध केला. एवढा मोठा शिलालेख अन्यत्र कुठेही पाहण्यात नाही, हे तर त्या शिलालेखाचे एक वैशिष्ट्य होतेच; परंतु तंजावर येथील राजघराण्यामधील अधिकारी पुरुषांच्या आज्ञेवरून तो कोरला गेलेला असल्यामुळेही तो अत्यंत महत्त्वाचाही ठरला. समग्र राजवाडे साहित्याच्या चौथ्या खंडात सर्वांत शेवटी छापलेला तो मजकूर सलग ५९ पानांचा आहे, हे लक्षात घेता शिलालेख म्हणून त्याची असणारी भव्यता आपल्या सहज लक्षात येऊ शकते आणि तो शोधून काढल्याबद्दल व सुबोध लिपीबद्ध स्वरूपात उपलब्ध करून दिल्याबद्दल राजवाड्यांचे अपार ऋण मान्य करावेसे वाटते.

साधनांचा तेरावा व चौदावा खंड बऱ्याच वर्षांनी म्हणजे १९१८ साली राजवाड्यांनी पुण्यातून एकाच वेळी प्रसिद्ध केले. रायरीकर व खासगीवाले यांच्या दफ्तरांतील थोरल्या माधवरावांच्या काळातील पत्रे या खंडांमध्ये समाविष्ट होती. त्यांची पृष्ठसंख्या अनुक्रमे १६५ व ८२ होती.

पंधरावा खंड पृष्ठसंख्येच्या दृष्टीनेही मोठा होता (४८८) आणि समाविष्ट कागदपत्रांच्या संख्येच्या दृष्टीनेही दखलपात्र होता (४५३) धुळ्याहून १९१२ सालीच प्रकाशित झालेल्या या खंडात राजवाड्यांनी जगदाळे, जेधे देशमुख, गुप्ते, देशपांडे, राजोपाध्ये व ब्रह्मे या सहा घराण्यांतील शिवकालीन पत्रव्यवहाराचा समावेश केला होता.

सोळावा-सतरावा-अठरावा हे तीन छोटे-छोटे खंड मुंबईहून १९१२, १९१३ व १९१४ साली प्रसिद्ध झाले. त्यांची पृष्ठसंख्या अनुक्रमे ८७ (कागदपत्रेही ८७); ५४ (कागदपत्रे ४४) आणि ९३ (कागदपत्रे ६४ व जेधे शकावलीची काही पाने) अशी होती. शिवकालीन विविध घराण्यांची ही कागदपत्रे होती.

एकोणिसावा खंड १९१४मध्येच मुंबईहूनच राजवाड्यांनी प्रसिद्ध केला, तोही पृष्ठसंख्येच्या दृष्टीने लहानच होता (१३८); परंतु हैदर व टिपू यांच्या दरबारातील पत्रांचा व श्रीरंगपट्टण येथील पेशव्यांचे वकील कृष्णाजी नारायण जोशी यांच्या पत्रव्यवहाराचा समावेश असल्यामुळे ऐतिहासिक दृष्टीने तो अधिक महत्त्वाचा होता. पुढे १९१५ साली १६ ठिकाणच्या शिवकालीन कागदपत्रांचे संकलन असणारा ४७६ पृष्ठांचा विसावा खंड पुण्याहून तर ३६० पृष्ठांचा एकविसावा खंड त्यांनी धुळ्याहून १९१९ साली प्रसिद्ध केला. बाविसावा खंड मध्यंतरी १९१७ मध्ये मुंबईहून प्रसिद्ध झाला, तो फक्त १३७ पृष्ठांचाच होता.

– आनंद हर्डीकर
anand47.hardikar@gmail.com

‘माफी’चे साक्षीदार!

राज्यातील महिलांनी ना अशा सरकारी भाऊबिजेची मागणी केली होती, ना शेतकऱ्यांनी कर्जमाफीची. तरीही या योजना प्रत्यक्षात आल्या.

मराठीतील ‘ऋण काढून सण साजरा करणे’, ‘घरात नाही आणा आणि बाजीराव म्हणा’, ‘आयजीच्या जिवावर बायजी उदार’ इत्यादी वाक्प्रचारांचा उगम महाराष्ट्र सरकारचे मुख्यालय असावे. या सरकारने शेतकऱ्यांसाठी जाहीर केलेली ताजी तब्बल ३६ हजार कोटी रुपयांची कर्जमाफी या सत्याची प्रचीती देते. ही पाचवी कर्जमाफी. पहिल्या चारांनी काय साधले; काय नाही याचा कसलाही हिशेब नाही. तरीही आणखी एका कर्जमाफी योजनेचा मोह काही सरकारला आवरला नाही. अशी कर्जमाफी काँग्रेसकाळात दोन वेळा झाली आणि विद्यमान सत्ताधीशांच्या काळात तीन वेळा. या दोहोंतील एक लक्षणीय फरक म्हणजे या अशा माफी योजनांचे नामकरण. मनमोहन सिंग आणि १९८० सालच्या माफी योजनेचे जनक माजी मुख्यमंत्री अब्दुल रहमान अंतुले यांनी ‘नुसती’ कर्जमाफी केली. मात्र भाजपच्या आणि त्याच कळपातील शिवसेनेच्या काळात मात्र या कर्जमाफी योजनांस छत्रपती शिवाजी महाराज शेतकरी सन्मान योजना (२०१७), महात्मा जोतिबा फुले कर्जमुक्ती योजना (२०१९) आणि आता पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर शेतकरी कर्जमुक्ती योजना (२०२६) अशी महनीय व्यक्तींची नावे देऊन आपण काही उदात्त कर्म करत असल्याचा आभास केला जातो. हा फरक सूचक. खरे तर छत्रपती शिवाजी महाराज आज हयात असते तर त्यांनी जनतेच्या पैशांची अशी लूट करणाऱ्यांचे हात कलम केले असते. पण महापुरुषांस फक्त पुतळे, योजना नामकरण इत्यादींपुरतेच जिवंत ठेवले जाण्याच्या आजच्या काळात अशा स्वप्नरंजनात काही अर्थ नाही. इतरांना दानधर्म करण्यासाठी मुळात स्वतःकडे काही असावे लागते या किमान विवेकाकडे दुर्लक्ष करणारे आणि अशा दुर्लक्षास बुद्धिमत्ता मानणारे राज्यकर्ते जेव्हा असतात आणि जेव्हा बहुसंख्य त्यांचा हा आर्थिक स्वैराचार गोड मानून घेतात तेव्हा अधोगती अपरिहार्य ठरते. महाराष्ट्राबाबत ही अपरिहार्यता हे वास्तव बनत असल्याची चिन्हे दिसतात.

ज्याप्रमाणे बऱ्याचदा पूल वगैरे (कथित) पायाभूत सुविधांची कंत्राटे ही स्थानिक नागरिकांपेक्षा शासक-कंत्राटदार यांची अधिक गरज असते तद्वत शेतकरी कर्जमाफी ही प्रत्यक्ष शेतकऱ्यांपेक्षा त्यांच्या मतांवर डोळा असणाऱ्या राजकारण्यांची निकड असते. नुकतीच जाहीर झालेली कर्जमाफी योजनाही तशीच. गेल्या निवडणुकीत मताधिक्याबाबत साशंक असणाऱ्या राज्यकर्त्यांनी दोन आश्वासने दिली. लाडक्या बहिणींना एक आणि बळीराजास दुसरे. राज्यातील महिलांनी ना अशा सरकारी भाऊबिजेची मागणी केली होती, ना शेतकऱ्यांनी कर्जमाफीची. तरीही या योजना प्रत्यक्षात आल्या. कारण या दोनही घटकांस जे द्यायला हवे ते देण्याची ऐपत आणि कुवत दोन्ही नसल्याने राज्य सरकार या असल्या खिरापती वाटते आणि आपण बरेच काही कसे करतो हे दाखवून त्याचे राजकीय लाभ उपटते. बरे, अशा योजनांमुळे अपेक्षित राजकीय लाभ मिळत असल्याने आपण जे काही करत आहोत, त्यात काही गैर आहे असे सरकारला वाटण्याची शक्यताच नाही. गेल्या दहा वर्षांत जाहीर झालेल्या, अमलात आलेल्या कथित कल्याणकारी योजना आणि त्यानंतरच्या निवडणुकांचे परिणाम यांची सांगड घातल्यास ही बाब पुरेशी स्पष्ट व्हावी. एकदा का राजकीय यश हेच यशाचे परिमाण मानावयाचे ठरले की ते मिळवण्यासाठी नेसूचे सोडून डोक्यास बांधणे ओघाने आलेच. मग सत्ताधीशांनीच नेमलेला ‘नीती’ आयोग असो वा अन्य कोणी. या असल्या वायफळ खर्चास आळा घालण्याचा या तज्ज्ञांनी दिलेला सल्ला ऐकण्याची गरज काय? आणि कोणास? जर खुद्द पंतप्रधानच बिहार जिंकण्यासाठी निवडणुकीआधी त्या राज्यातील ‘बहेनां’च्या बँक खात्यात सरसकट दहा हजार रुपये भरण्याचे औदार्य दाखवणार असतील तर आणि सगळ्यांनाच भिकेच्या डोहाळ्यात समाधान वाटणार असेल तर शेतकरी कर्जमाफी अयोग्य वगैरे शहाणपण सांगणार कोण आणि त्याप्रमाणे शहाणे वर्तन

...कारण या दोनही घटकांस जे द्यायला हवे ते देण्याची ऐपत आणि कुवत दोन्ही नसल्याने राज्य सरकार या असल्या खिरापती वाटते आणि आपण बरेच काही कसे करतो हे दाखवून त्याचे राजकीय लाभ उपटते.

करणार कोण, हा प्रश्न. आता महाराष्ट्राविषयी.

एकेकाळचे हे आघाडीचे राज्य उद्योग, गुंतवणूक, क्रीडा, मनोरंजन आदींतील आपली आघाडी घालवून बसले त्यासही बराच काळ लोटला. केंद्राच्या आशीर्वादामुळे गुजरात आणि धडाडीमुळे दक्षिणी राज्ये महाराष्ट्रास उद्योगांत मागे टाकू लागली, भांडवली बाजाराची आंतरराष्ट्रीय शाखा आणि ‘गिफ्ट’ सिटी यामुळे गुजरात हे महाराष्ट्रापेक्षा अधिक आकर्षक असल्याचे दाखवण्याची वेळ केंद्राने आणली. कसलीही आणि कोणतीही क्रीडा संस्कृती नसलेले अहमदाबाद आता क्रिकेटसह अन्य अनेक खेळांचे केंद्र बनू लागले आणि मुंबईकेंद्रित ‘बॉलीवूड’ला दक्षिणी चित्रपट उद्योगाने कधीच मागे टाकले. आज नवीन महत्त्वाचे उद्योग, गुंतवणूक, क्रीडा सामने महाराष्ट्रात होत नाहीत. गुजरात-धार्जिणे केंद्र आणि त्यावर मात करण्याची क्षमता दाखवणारी दक्षिणी राज्ये यांच्या बेचक्यात आज महाराष्ट्र आहे. जागतिक पातळीवर अनेक बड्या कंपन्यांचे प्रमुख (उदाहरणार्थ गूगल, मायक्रोसॉफ्ट इत्यादी) हे दक्षिणी आहेत आणि ते आपापल्या प्रांतांत गुंतवणुकीची बेगमी करतात. महाराष्ट्रामागे आज ना केंद्र आहे, ना आंतरराष्ट्रीय कंपन्यांत वरिष्ठ पदांवरून गायब झालेला मराठी चेहरा. अशा प्रतिकूल परिस्थितीत हे राज्य राजकारणात रमण्यात धन्यता मानू लागले. हा पक्ष फोडला, त्याला पाडला इतक्यापुरताच पुरुषार्थ मिरवणारे केंद्रीय नेते आणि त्या आनंदात सहभागी होणारे राज्यस्तरीय नेतृत्व यामुळे महाराष्ट्र आज स्पर्धात्मकता हरवून बसलेला आहे. अशा वेळी खरे तर येथील राज्यकर्त्यांनी अधिक विवेक, गुणग्राहकता दाखवत भविष्य घडवणाऱ्या धोरणांवर लक्ष केंद्रित करायला हवे. पण कसचे काय!

त्यांचा आनंद लाडक्या बहिणींना कसे शांत केले आणि शेतकऱ्यांची कर्जमाफी करून विरोधकांस कसे गारद केले यातच. हे होईलही. पण महाराष्ट्राचे काय? जे राज्य शिक्षणापेक्षा वा आरोग्यापेक्षा अशा बाष्कळ योजनांवर अधिक खर्च करते त्याची प्रगती कदापि शक्य नाही. आपल्या सरकारचे खर्चाचे विषय पाहा. लाडक्या बहिणींवर २६ हजार कोटी रु, कर्जमाफीसाठी ३६ हजार कोटी रु, कृषिपंपांच्या वीज बिलांसाठी २० हजार कोटी रु. हे ढोबळ खर्च. त्याचीच बेरीज होते ८२ हजार कोटी रु. इतकी. अधिक सुमारे दहा लाख कोटी रुपये इतक्या अवाढव्य कर्जाच्या व्याजावर जाणारे ७० हजार कोटी रुपये जमेस धरले तर ही रक्कम दीड लाख कोटी रुपयांवर जाते. परत शासकीय कर्मचाऱ्यांचे वेतन, निवृत्तिवेतन, भत्ते यांवरील खर्च वेगळाच. म्हणजे राज्याचा निम्म्यापेक्षा अधिक, जवळपास दोनतृतीयांश इतका अर्थसंकल्प हा केवळ अशा अनुत्पादक कारणांवर खर्च होणार. हे वास्तव असेल-आणि ते तसेच आहे- तर राज्यातील शिक्षणाचा दर्जा ‘भिकार’पेक्षाही वाईट होणार असेल आणि आरोग्य व्यवस्था मरणासन्न असेल तर त्यात आश्चर्य वाटून घेणे फक्त मूढांनाच शोभेल. यातही आर्थिकदृष्ट्या धोरणात्मक लाजिरवाणी बाब अशी की शेतकऱ्यांस कर्जमाफी करणे हे सत्ताधीशांच्या डोक्यात घोळत होते तरी त्यासाठी अर्थसंकल्पात तरतूद करण्याचा प्रामाणिकपणाही सरकारने दाखवलेला नाही. आता त्यामुळे या रकमेची तरतूद करावी लागणार. म्हणजे राज्याचा गाडा हाकण्यासाठी पुरवणी मागण्यांचा वाडगा पुढे करणे ओघाने आले.

गुन्हा करणारे आणि तो घडत असताना पाहणारे हे दोघेही सदर गुन्ह्यासाठी तितकेच जबाबदार असतात. या तत्त्वानुसार जे सुरू आहे त्यास राज्यलुटीचा गुन्हा मानले तर त्याकडे काणाडोळा करणारे नागरिक हेही राज्याच्या दुरवस्थेस राज्यकर्त्यांइतकेच जबाबदार. गुन्ह्यांच्या तपासात बऱ्याचदा माफीचे साक्षीदार निर्णायक भूमिका बजावतात आणि कायद्याच्या कचाट्यातून सुटू पाहतात. सद्यःस्थितीत महाराष्ट्राचे नागरिक हे या ‘माफी’च्या अर्थगुन्ह्याचे साक्षीदार आहेत. तेही सुटतील. पण राज्यास अप्रगतीची शिक्षा भोगावीच लागेल.

धोरणांना बळकटी देणारे सर्वेक्षण!

लेख

डॉ. प्रदीप सुभाष साळवे,
डॉ. अनिल जगन हिवाळे

लेखकद्वय अनुक्रमे सहायक प्राध्यापक, लोकसंख्या व विकास विभाग, आंतरराष्ट्रीय लोकसंख्या विज्ञान संस्था, मुंबई तसेच सहयोगी प्राध्यापक, भूगोल विभागप्रमुख, भुसावळ कला, विज्ञान आणि पु. ओ. नाहाटा वाणिज्य महाविद्यालय, भुसावळ
pradeep_ salve@iipsindia. ac.in
hiwaleanil@gmail.com

केंद्र सरकारतर्फे ९० च्या दशकापासून दर काही वर्षांनी घेतल्या जाणाऱ्या ‘राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण’च्या सहाव्या फेरीची काही निरीक्षणे नुकतीच प्रसिद्ध करण्यात आली आहेत. त्यानिमित्ताने देशाच्या धोरणनिर्मितीत महत्त्वाची भूमिका बजावणाऱ्या या सर्वेक्षणाविषयी...

केंद्रीय आरोग्य आणि कुटुंब कल्याण मंत्रालयाने शुक्रवार, २६ मे २०२६ रोजी ‘राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण’ (नॅशनल फॅमिली हेल्थ सर्वे -एनएफएचएस -६) २०२३-२४ च्या सर्वेक्षणाची काही प्राथमिक निरीक्षणे प्रसिद्ध केली आहेत. या सर्वेक्षणातून येणाऱ्या संख्यात्मक आकडेवारीचे देश आणि जागतिक पातळीवर आरोग्य, सामाजिक आणि लोकसंख्याशास्त्राच्या नियोजनात अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. सध्या शासनातील विविध विभाग त्यांनी केलेल्या सुधारणा, रोडमॅप आणि प्रगतीचे मूल्यमापन आणि मूल्यांकन सर्वेक्षणांतील निष्कर्षांशी तुलना करून पाहातात. त्यामुळे या सर्वेक्षणांची कार्यपद्धती, अंमलबजावणी, देखरेख व निरीक्षण तसेच विश्लेषण यांविषयी माहिती करून घेणे गरजेचे आहे.

सर्वेक्षण आणि निष्कर्ष

भारताने १९९० च्या दशकाच्या सुरुवातीला म्हणजे १९९२-९३ मध्ये पहिले लोकसंख्याशास्त्रीय आणि आरोग्य सर्वेक्षण आधारित ‘राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण’ केले. तेव्हापासून हे सर्वेक्षण ‘आंतरराष्ट्रीय लोकसंख्या विज्ञान संस्था’ (इंटरनॅशनल इन्स्टिट्यूट फॉर पॉप्युलेशन सायन्स -आयआयपीएस) ही मुंबईतील लोकसंख्याशास्त्रातील एक प्रमुख संशोधन आणि प्रशिक्षण संस्था पार पाडते. भारत सरकारच्या आरोग्य आणि कुटुंब कल्याण मंत्रालयाअंतर्गत ही संस्था काम करते. १९९० पासून या सर्वेक्षणाच्या सहा फेऱ्या झालेल्या आहेत. हे सर्वेक्षण भारतातील आरोग्य क्षेत्रातील सद्यःस्थिती आणि प्रगती मोजण्यासाठी जगभरात सर्वात विश्वसनीय साधन मानले जाते. पहिले सर्वेक्षण (एनएफएचएस-१) १९९२-९३ मध्ये केले गेले. त्यानंतर सातत्याने प्रत्येक पाच आणि २०१९-२१ पासून तीन वर्षांनी आपण हे सर्वेक्षण पार पाडत आहोत. तसेच प्रत्येक सर्वेक्षणामध्ये परिस्थिती आणि धोरणांच्या गरजेनुसार काही नवीन विषयाची भर पडत आहे. सुरुवातीला एनएफएचएस १५-४९ या वयोगटातील महिलांच्या एकंदरीत आरोग्याबद्दल माहिती गोळा केली होती. त्यात वय, वैवाहिक स्थिती, शिक्षण, धर्म आणि जात, प्रजनन, मृत जन्म आणि गर्भपात या मुद्द्यांचा समावेश करण्यात आला होता. हे पहिले सर्वेक्षण ८८ हजार ५६२ घरांची नमुन्यामार्फत निवड करून करण्यात आले. त्यातून सरकारने राष्ट्रीय व राज्य स्तरावर प्रजनन दर, कुटुंब नियोजन, मातृ व बाल आरोग्य आणि मृत्युदर याची माहिती लोकांपुढे आणली.

एनएफएचएस-२ च्या दुसऱ्या टप्प्यामध्ये ‘महिलांचे आरोग्य आणि घरगुती हिंसाचार’ यांसारख्या विषयांवर अधिक लक्ष केंद्रित करण्यात आले. त्यातून प्रथमच भारतात महिलांवर होणाऱ्या घरगुती हिंसेची, शारीरिक हिंसेची व लैंगिक संबंधांदरम्यान होणाऱ्या हिंसेची माहिती उपलब्ध झाली. त्याच बरोबर संसर्गासह प्रजनन, आरोग्याच्या समस्यांवरील लक्ष, एचआयव्ही/एड्स जागरूकता-एड्सविषयी माहिती व त्याची प्रतिबंधक उपाययोजना आणि माहितीचे स्रोत इत्यादी बद्दलही सखोल माहिती मिळाली.

एनएफएचएस- ३ (२००५-०६) मध्ये पहिल्यांदाच पुरुषांच्या मुलाखतींचाही समावेश करण्यात आला आणि एचआयव्ही चाचणी आणि जागृतीबद्दल पुरुषांकडून सविस्तर माहिती घेतली गेली. एनएफएचएसने तेव्हा भारतातील १५-५४ या वयातील पुरुषांची माहिती गोळा केली. एनएफएचएस- ४ (२०१५-१६) पासून हे सर्वेक्षण जिल्हा स्तरावरील माहिती जाहीर करीत आहे. कालांतराने भारतातील संशोधन संस्था आणि संशोधकांनी यात काही महत्त्वाचे बदल सुचवले, जेणेकरून हे सर्वेक्षण फक्त आरोग्य आणि कुटुंब यांच्यापुरते मर्यादित न राहता सरकारच्या काही धोरण आणि कार्यक्रमाबद्दल परीक्षण आणि मूल्यमापन करेल. या सर्वेक्षणामुळे आपल्याला आपल्या परिस्थितीत किती सुधारणा झाली आहे, हे समजते. एखादा आजार वाढत असेल, तर वेळेत सावध होऊन पावले उचलणे यामुळे शक्य होते. भारत सरकारने हे सर्वेक्षण २०१६ पासून प्रत्येकी तीन वर्षांनी करायचे ठरवले, जेणेकरून प्रत्येक तीन वर्षांनंतर ध्येय-धोरणांचा पाठपुरावा करता यावा. एनएफएचएस- ५ (२०१९-२१) नुसार देशाचा एकूण प्रजनन दर २.२ वरून २.० वर आला. तो लोकसंख्या स्थिर ठेवण्यासाठी आवश्यक असलेल्या २.१ या प्रमाणाहून कमी आहे. केवळ पाच राज्यांमध्ये (बिहार, मेघालय, उत्तर प्रदेश, झारखंड आणि मणिपूर) हा दर २.१ पेक्षा जास्त होता. तसेच महाराष्ट्राचा एकूण प्रजनन दर १.७ वर आल्याचे आढळले. यात राज्यातील पायाभूत सुविधा आणि माता आरोग्यामध्ये मोठी सुधारणा झाल्याचे दिसून आले तरी कुपोषण आणि रक्तक्षयाचे मोठे आव्हान कायम होते. कुटुंब नियोजनाच्या साधनांचा वापर ६६ टक्के होता. यामध्ये महिला नसबंदी हा सर्वात जास्त वापरला जाणारा मार्ग होता. लहान मुलांमधील कुपोषणाची समस्या गंभीर होती. उंची खुंटण्याचे प्रमाण ३४.४ टक्क्यांवरून ३५.२ टक्क्यांवर गेले होते, तर तीव्र कुपोषण ९.४ टक्क्यांवरून वाढून १०.९ टक्के झाले होते. वय वर्ष ६ ते ५९ महिन्यांच्या बालकांमधील रक्तक्षय प्रमाण ५३.८ टक्क्यांवरून थेट ६८.९ टक्क्यांवर गेले होते. तसेच राज्यात ५४ टक्के महिला आणि २२ टक्के पुरुष ॲनिमियाने ग्रस्त होते. यात राज्यात महिलांमध्ये १२.४ टक्के आणि पुरुषांमध्ये १३.६ टक्के मधुमेह आढळला.

नुकत्याच जाहीर झालेल्या ‘राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण’- ६ (२०२३-२४) च्या अधिकृत अहवालानुसार राज्यात लहान मुलांमधील कुपोषणात लक्षणीय घट झाली असली तरी प्रौढांमधील लठ्ठपणा, मधुमेह आणि उच्च रक्तदाब यांसारख्या असंसर्गजन्य आजारांमध्ये चिंताजनक वाढ होत आहे. अहवालानुसार राज्यातील पाच वर्षांखालील मुलांमध्ये वयाच्या मानाने उंची कमी असण्याचे प्रमाण ३५.२ टक्क्यांवरून घटून २९.५ टक्क्यांवर आले आहे. उंचीच्या मानाने वजन कमी असणाऱ्या मुलांचे प्रमाण २५.६ टक्क्यांवरून १९.९ टक्क्यांपर्यंत खाली आले आहे. तसेच लोकसंख्येमध्ये मधुमेह आणि उच्च रक्तदाबाचा धोका वेगाने वाढला आहे. राज्यात सिझेरियन शस्त्रक्रियेद्वारे होणाऱ्या प्रसूतींचे प्रमाण २५.४ टक्क्यांवरून वाढून ३३.६ टक्के झाले आहे. जागतिक आरोग्य संघटनेच्या निर्देशानुसार कुठल्याही देशामध्ये सिझेरियन शस्त्रक्रिया ही १०-१५ टक्क्यांच्या मानकापेक्षा जास्त असेल तर हे आरोग्य आपत्कालीन परिस्थिती सारखेच आहे. थोडक्यात, एनएफएचएस- ६ नुसार महाराष्ट्रातील मुले पूर्वीपेक्षा अधिक सुदृढ होत आहेत, मात्र जीवनशैलीतील बदलांमुळे राज्यातील प्रौढ नागरिक अधिक आजारी पडत आहेत. आगामी अहवाल प्रथमच सर्व राज्यातील स्थलांतराबद्दल काही ठरावीक माहिती देणार आहे.

धोरण आणि कायदे निर्मितीत योगदान

१९९२-९३ पासून राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण हे भारत सरकार आणि राज्य सरकारे कोणते कायदे, योजना, धोरणे किंवा कार्यक्रम राबवायचे यासाठी आवश्यक पुरावे आणि आकडेवारी उपलब्ध करून देते. एनएफएचएसला भारतातील आरोग्य, पोषण, लोकसंख्या आणि सामाजिक क्षेत्रातील धोरणनिर्मितीचा एक महत्त्वाचा पाया मानले जाते. भारतातील कुटुंबनियोजन धोरण, राष्ट्रीय आरोग्य अभियान, जननी सुरक्षा योजना व सुरक्षित मातृत्व कार्यक्रम, पोषण अभियान, अंगणवाडी आणि आयसीडीएस सुधारणा, मिशन इंद्रधनुष्य आणि लसीकरण धोरण, स्वच्छ भारत अभियान, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत आणि आरोग्य विमा इत्यादीसारख्या लोक कल्याणकारी योजना आणि जवळपास सर्व मोठ्या सरकारी धोरणांच्या मागे एनएफएचएसची आकडेवारी आणि निष्कर्ष आहेत, हे येथे अधोरेखित केले गेले पाहिजे. एनएफएचएसची आकडेवारी आणि त्यातील निष्कर्ष संसदेतील चर्चांना, न्यायालयांतील निकालांना आणि अनेक कायद्यांच्या निर्मितीसाठी सैद्धांतिक आधार देतात. भारतातील बालविवाह प्रतिबंध कायदा, महिलांवरील घरगुती हिंसाचार कायदा इत्यादी अनेक नवीन कायद्यांच्या निर्मितीच्या मागे ‘राष्ट्रीय कुटुंब आरोग्य सर्वेक्षण’ आहे. एनएफएचएसचा प्रभाव केवळ आरोग्य धोरणांपुरता मर्यादित राहिला नाही. या सर्वेक्षणाने भारतातील राजकारण, अर्थकारण, प्रशासन, सामाजिक न्याय, महिला सक्षमीकरण, जिल्हानिहाय विकास आणि सार्वजनिक चर्चेची दिशादेखील बदलली आहे. यामुळे ‘विकास’ मोजण्याची पद्धत बदलली. पूर्वी विकास म्हणजे जीडीपी, उद्योग किंवा रस्ते असे मानले जात होते. एनएफएचएसमुळे सरकार आणि संशोधकांनी बालकांचे कुपोषण, महिलांमधील अशक्तपणा, लसीकरण, स्वच्छता, मातामृत्यू व बालमृत्यू, महिलांचे शिक्षण या बाबींना विकासाचे निकष मानायला सुरुवात केली आहे. यामुळे भारतात मानवी आणि सामाजिक विकासात अधिक भर पडली.

एनएफएचएस-४ आणि एनएफएचएस-५ नंतर प्रथमच आरोग्य, सामाजिक आणि भारतातील दारिद्र्यरेषा निर्देशांक जिल्हास्तरावर उपलब्ध झाले. त्यामुळे जिल्हास्तरीय स्पर्धा वाढली, कोणते जिल्हे मागे आहेत हे स्पष्ट झाले. परिणामी ‘एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम’सारख्या उपक्रमांना आधार मिळाला. जिल्हाधिकारी, आरोग्य विभाग आणि राज्य सरकारांचे उत्तरदायित्व वाढले. कुपोषण हा राष्ट्रीय राजकारणाचा मुद्दा बनला. एनएफएचएसने दाखवून दिले की, खुंटलेली वाढ, कमी वजन, बालकांमधील अशक्तपणा या समस्या आर्थिक वाढ असूनही कायम आहे. त्यामुळे पोषण हा केवळ आरोग्याचा नव्हे तर राष्ट्रीय विकासाचा विषय बनला. एनएफएचएसमुळे महिलांच्या स्थितीकडे नव्याने लक्ष गेले, या आकडेवारीने बालविवाह, घरगुती हिंसा, महिलांचे निर्णयस्वातंत्र्य, बँक खाते वापर, गर्भनिरोधकांवरील नियंत्रण याचे चित्र देशापुढे ठेवले. ज्यामुळे महिला सक्षमीकरण, स्वयं-साहाय्य गट, आर्थिक समावेशन आणि लिंग-समानतेच्या कार्यक्रमांना अधिक बळ मिळाले. याच अर्थाने एनएफएचएसने भारताला केवळ आकडे दिले नाहीत, तर विकास मोजण्याचा नवा सामाजिक आरसा दिला. नीती आयोगाकडून २०२१ पासून भारतातील दारिद्र्य निर्देशांक पारंपरिक पद्धतीने न मोजता एनएफएचएसच्या बहुतांश माहितीचा वापर करून, जगप्रसिद्ध ‘बहुआयामी दारिद्र्य निर्देशांक’ पद्धतीचा वापर करून मोजला आणि प्रकाशित केला जातो. असे असले तरी महाराष्ट्रातील विद्यापीठे आणि संशोधकांमध्ये अजूनही या जागतिक पातळीवर मान्यताप्राप्त आणि दर्जेदार संख्यात्मक आकडेवारीचा वापर करून लक्षात घेण्याजोग्या प्रमाणात संशोधन केले जात नाही. या अनुषंगाने ही आकडेवारी देश आणि राज्याच्या विकासासाठी मोठ्या प्रमाणात वापरली जावी ही अपेक्षा.

अन्वयार्थ

म्यानमार मैत्रीचा नवा आयाम

युद्धजन्य आणि टंचाईग्रस्त आसमंतात म्यानमारच्या नवनियुक्त अध्यक्षांच्या भारतभेटीकडे माध्यमांचे काही प्रमाणात दुर्लक्ष होणे साहजिक आहे. पण सरकारी आणि राजनयिक पातळीवर या भेटीचे महत्त्व अमान्य करण्यासारखे नाही. दक्षिण आशियात पाकिस्तान वगळता इतर सर्व देशांशी संबंधांची फेरआखणी (रिसेट) करण्याचे धोरण आपण आग्रहाने राबवत आहोत. बांगलादेश आणि नेपाळमध्ये सरकारबदलामुळे येणारी स्वतंत्र आव्हाने आहेत. श्रीलंकेत तो बदल सध्या तरी भारताच्या पथ्यावर पडलेला दिसतो. एके काळी तालिबान संघटनेच्या पहिल्या राजवटीला मान्यता देण्यास निक्षून नकार देणारे आपण त्याच तालिबानच्या दुसऱ्या राजवटीशी मात्र अनेक आघाड्यांवर वाटाघाटी सुरू करत आहोत. दक्षिण आशियातील बहुतेक देशांमध्ये लोकशाही व्यवस्था आजारी असते. त्यातही तालिबानसंचालित अफगाणिस्तान आणि ‘जुंटा’ शासित म्यानमार यांची कीर्ती लोकशाहीच्या गुणांकनात शेवटचे दोन क्रमांक द्यावेत अशीच. तरीदेखील दोहोंशी संबंध सुरळीत करण्याची लवचीकता आपण दाखवत आहोत हे नोंदणीय. विद्यमान अविश्वासाच्या जगात मैत्रीसेतू आणि आघाड्या बांधणे किती आवश्यक असते हेही यानिमित्ताने अधोरेखित होते.

म्यानमारचे अध्यक्ष मिन आँग लाइन नुकतेच तीन दिवसांच्या भारतभेटीवर येऊन गेले. म्यानमारचे अध्यक्ष बनल्यानंतर त्यांचा हा पहिलाच परदेश दौरा ठरला. ते चीनऐवजी भारतात आले याची नोंद काही विश्लेषकांना घ्यावीशी वाटते.

म्यानमारमध्ये सन २०२१मध्ये नोबेल पारितोषिक विजेत्या लोकनेत्या आँग सान स्यू ची यांच्या नेतृत्वाखालील लोकनियुक्त सरकार लष्करी ताकदीच्या जोरावर उलथवून मिन आँग लाइन सत्ताधीश झाले. त्यावेळी त्यांना चीनने निधी आणि शस्त्रपुरवठा केला होता. हे उपकार ते इतक्यात विसरण्याची शक्यता नाही. तरीदेखील पंचक्रोशीतील इतर काही शासकांप्रमाणेच त्यांनीही दोन मोठ्या सत्तांशी जुळवून स्वहित साधण्याचा निर्णय केला असू शकतो. भारतविरोधी कारवायांसाठी म्यानमारच्या भूमीचा वापर करू देणार नाही, असे आश्वासन मिन आँग लाइन यांनी पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांना दिल्याचे समजते. त्याविषयी म्यानमारचे अध्यक्ष गंभीर असतील तर या पवित्र्याचे स्वागतच. म्यानमार आणि भारत यांच्यादरम्यान १,६४३ किलोमीटर लांबीची सीमा आहे. अरुणाचल प्रदेश, नागालँड, मणिपूर आणि मिझोराम ही ईशान्येकडील चार संवेदनशील राज्ये या सीमेवर आहेत. ही सीमा सच्छिद्र असल्यामुळे भारतविरोधी कारवाया करणाऱ्या बंडखोरांचा त्यावर मुक्त संचार असतो. भारताच्या आणि म्यानमारच्या दृष्टीने आणखी एक नाजूक बाब म्हणजे, या सीमावर्ती भागातच म्यानमारच्या लष्करी राजवटीला विरोध करणाऱ्यांचा जोर आहे. यात आँग सान स्यू ची यांच्या समर्थकांचाही समावेश आहे. म्यानमारमधील लष्कराने २०२१ मध्ये आँग सान स्यू ची यांचे लोकनिर्वाचित सरकार उलथवून टाकले आणि सत्ता ग्रहण केली. पण त्यांना संपूर्ण म्यानमारवर ताबा मिळवता आलेला नाही. किंबहुना, २०२३ पासून मिन आँग लाइन यांची या भागावरील पकड सुटत चालली आहे. लष्करशहा अशी प्रतिमा जगासमोर राहू नये यासाठी त्यांनी गेल्या वर्षी म्यानमारमध्ये निवडणुकांचा फार्स घडवून आणला. तो फार्स म्हणावा लागतो, कारण प्रमुख विरोधी पक्षांना निवडणूक लढवण्याची संधीच मिळाली नाही. त्या ‘निवडून आलेल्या’ सदस्यांनीच मग एकत्र येऊन ‘लष्करशहा’ लाइन यांना ‘अध्यक्ष’ लाइन बनवले.

तरीदेखील तूर्त अशा म्यानमारशी जुळवून घ्यावे लागते, कारण भूराजकीय परिस्थिती झपाट्याने बदलत आहे. मध्यंतरी बांगलादेशच्या हंगामी सरकारने भारताच्या ‘बंदिस्त’ ईशान्य राज्यांचा वारंवार उल्लेख करून, बंगालच्या उपसागरात आणि पुढे हिंदी महासागरात वस्तुमाल पोहोचवण्यासाठी बांगलादेशच कसा योग्य पर्याय आहे याचा डिंडीम पिटला होता. त्या पार्श्वभूमीवर भारत आणि म्यानमार यांच्यादरम्यान प्रस्तावित कालादान सागरी-भूमध्य मार्गिकेचा उल्लेख झाला. कोलकात्याहून म्यानमारपर्यंत जहाजाने, तेथून खुष्कीच्या मार्गाने म्यानमारमधून मिझोराम सीमेपर्यंत ही मार्गिका ईशान्य भारताच्या दृष्टीने अत्यंत महत्त्वाची आहे. यात म्यानमारला शुल्काच्या रूपाने घबाड मिळेल. अशा मार्गिका प्रकल्पांसाठी संबंधित देशाच्या सरकारशी मैत्री प्रस्थापित करणे प्रथम प्राधान्याचे ठरते. आपण तेच करत आहोत. त्यामुळे तालिबानी अफगाणिस्तानप्रमाणेच लष्करशासित म्यानमारशी जुळवून घेणे हे आर्थिकदृष्ट्या कळीचे ठरते.

भारतीय शेअर बाजाराची पीछेहाट का? दक्षिण कोरिया- तैवान पुढे कसे गेले?

विश्लेषण

गौरव मुठे
gaurav.muthe@expressindia.com

गेल्या काही आठवड्यांत तैवान आणि दक्षिण कोरियाच्या शेअर बाजाराने भारताला मागे टाकत जागतिक बाजार भांडवल क्रमवारीत अनुक्रमे पाचवे आणि सहावे स्थान पटकावले. हा बदल केवळ आकडेवारीचा नसून जागतिक गुंतवणुकीच्या प्रवाहात होत असलेल्या मोठ्या बदलांचा संकेत मानला जात आहे.

भारत जागतिक बाजारात का घसरला?

गेल्या काही आठवड्यांत प्रथम तैवान आणि त्यानंतर दक्षिण कोरियाच्या भांडवली बाजाराने भारताला मागे टाकले. दक्षिण कोरियाचे बाजार भांडवल पाच ट्रिलियन (पाच लाख कोटी) डॉलर्सच्या पुढे गेले, तर भारताचे सुमारे ४.८ ट्रिलियन डॉलरपर्यंत खाली घसरले आहे. तैवान ५.१५ ट्रिलियन डॉलरसह जागतिक क्रमवारीत पाचव्या स्थानावर आहे, तर द. कोरिया सहाव्या. परदेशी गुंतवणूकदारांकडून विक्री, रुपयावरील दबाव, कंपन्यांची मंदावलेली नफावाढ आणि कृत्रिम प्रज्ञा (एआय) क्षेत्रातील मर्यादित उपस्थिती यामुळे भारत पिछाडीवर गेला.

एआय क्रांतीचा सर्वाधिक फायदा?

एआय डेटा सेंटर, क्लाऊड कॉम्प्युटिंग, रोबोटिक्स आणि प्रगत संगणकीय प्रणालींसाठी लागणाऱ्या चिप्सची मागणी सध्या विक्रमी पातळीवर पोहोचली आहे. तैवानची तैवान सेमीकंडक्टर मॅन्युफॅक्चरिंग कंपनी आणि दक्षिण कोरियाच्या सॅमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स आणि एसके हायनिक्स या कंपन्या जगातील अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर आणि मेमरी चिप्सच्या उत्पादनात अग्रस्थानी आहेत. एआय क्षेत्रातील जागतिक गुंतवणुकीचा मोठा हिस्सा या कंपन्यांकडे वळला आहे. परिणामी तैवान आणि दक्षिण कोरियाच्या शेअर बाजारांनी विक्रमी तेजी अनुभवली.

भारताची नेमकी अडचण काय?

भारत माहिती तंत्रज्ञान सेवा क्षेत्रात बलाढ्य असला तरी एआय हार्डवेअर, सेमीकंडक्टर उत्पादन आणि प्रगत चिप डिझाइनमध्ये अद्याप मागे आहे. देशात जागतिक पातळीवरील मोठी चिप उत्पादक कंपनी नाही. त्यामुळे एआय गुंतवणुकीचा थेट फायदा भारतीय बाजाराला मिळत नाही. भारतीय आयटी कंपन्या एआय सेवा पुरवतात; मात्र एआय क्रांतीतून सर्वाधिक पैसा कमावणाऱ्या चिप कंपन्या भारतीय भांडवली बाजारात सूचिबद्ध नाहीत. परिणामी जागतिक निधी एआय-केंद्रित बाजारांकडे वळताना भारताकडे तुलनेने कमी प्रमाणात येत आहे.

विदेशी गुंतवणूकदारांची माघार का?

पहिले कारण म्हणजे भारतीय समभागांचे उच्च मूल्यांकन. अनेक क्षेत्रांतील समभाग त्यांच्या ऐतिहासिक सरासरीपेक्षा महाग झाले होते. दुसरे म्हणजे कंपन्यांच्या नफावाढीचा वेग अपेक्षेपेक्षा कमी राहिला. तिसरे म्हणजे अमेरिकेतील उच्च व्याजदरांमुळे उदयोन्मुख बाजारांमधील गुंतवणुकीवर दबाव वाढला. तसेच भारत हा जगातील सर्वात मोठ्या खनिज तेल आयातदार देशांपैकी एक आहे. पश्चिम आशियातील संघर्षामुळे तेलाच्या किमती १०० डॉलर प्रति पिंपाच्या वर गेल्याने देशाचा आयात खर्च वाढला आहे. याचा परिणाम व्यापारी तूट, रुपयावरील दबाव आणि महागाईवर होत आहे. त्यामुळे शेअर बाजारातील गुंतवणूकदार अधिक सावध झाले आहेत.

भारतीय अर्थव्यवस्था कमकुवत आहे?

भारताची अर्थव्यवस्था सुमारे ४.१५ ट्रिलियन डॉलरची असून ती द. कोरियाच्या अर्थव्यवस्थेपेक्षा दुपटीहून अधिक मोठी आहे. तसेच भारत अजूनही जगातील सर्वाधिक वेगाने वाढणाऱ्या प्रमुख अर्थव्यवस्थांपैकी एक आहे. भारताकडे मजबूत देशांतर्गत मागणी, उत्पादन क्षेत्रातील गुंतवणूक, डिजिटल अर्थव्यवस्था आणि मोठा ग्राहकवर्ग ही बलस्थाने आहेत. मात्र अल्पकालात परदेशी गुंतवणूक परत आकर्षित करण्यासाठी कॉर्पोरेट नफावाढ, स्थिर चलन, कमी महागाई आणि तंत्रज्ञान क्षेत्रातील नवीन संधी महत्त्वाच्या ठरणार आहेत. भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत, दीर्घकालीन वाढीची क्षमता असलेली असली तरी एआय हार्डवेअर आणि सेमीकंडक्टर क्षेत्रातील मर्यादित उपस्थितीमुळे सध्या तो मागे पडला आहे. मात्र पुढील वर्षांतील तंत्रज्ञान आणि उत्पादन क्षेत्रातील गुंतवणूक भारतासाठी निर्णायक ठरू शकते.

संपादकीय

कर्जमुक्ती की माफीची साक्ष?

लाभार्थी योजना आणि शेतकरी कर्जमाफीच्या घोषणांशिवाय भविष्यात निवडणुका पार पडतील असे आता वाटत नाही. महायुतीने २०२४ च्या विधानसभा निवडणुकीत शेतकरी कर्जमाफीचे आश्वासन दिले होते. त्यानुसार पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर शेतकरी कर्जमुक्ती योजना काल जाहीर झाली. राज्यातील ५५ लाख ७२ हजार शेतकऱ्यांवर पीक कर्जाची माफी व प्रोत्साहन म्हणून ३६ हजार कोटी खर्च करणार असे आकडे सरकारने सांगितले. २०१९ साली ठाकरेंच्या महाविकास आघाडी सरकारने 'महात्मा ज्योतिराव फुले शेतकरी कर्जमुक्ती योजना' आणली होती. तेव्हा, राज्यात १ कोटी ५३ लाख शेतकरी होते. आज शेतकऱ्यांची संख्या १ कोटी ७१ लाखांवर गेली आहे. एकूण शेतकऱ्यांची नव्या योजनेतील लाभार्थ्यांशी तुलना केल्यास साधारण ३२ टक्के शेतकऱ्यांना लाभ मिळेल, असे ढोबळमानाने दिसते. देवेंद्र फडणवीस मुख्यमंत्री असताना, त्यांनी २०१७ साली 'छत्रपती शिवाजी महाराज शेतकरी सन्मान योजना' जाहीर केली होती. त्यात कर्जमाफीची मर्यादा दीड लाख होती. ठाकरे सरकारने दोन लाखांपर्यंत थकबाकी असणाऱ्या शेतकऱ्यांना कर्जमाफी दिली. दोन लाखांपेक्षा अधिक रकमेचे थकबाकीदार त्या योजनेत पात्र नव्हते. कालची योजना विचारात घेता गत दहा वर्षांत तिसऱ्यांदा कर्जमाफी आली. नव्या योजनेत अनेक अटी, शर्थी आहेत. त्यांचा अर्थ लावण्यासाठी शेतकऱ्यांना 'चार्टर्ड अकाउंटंट' नेमावे लागतील एवढ्या त्या जाचक व क्लिष्ट आहेत. म्हणायला दोन लाखांपर्यंतचे कर्ज माफ होईल. पण, वास्तव तसे नाही. कर्जमाफीचे सगळे शासन आदेश वाचल्यास शेतकऱ्यांनी शिक्षण घ्यावे, हा आग्रह महात्मा फुले का धरत होते हे कळते. कारण, आदेशच तेवढे किचकट असतात. शेतकरी कर्जमाफीला पात्र होण्याऐवजी अपात्र कसा होईल, या तरतुदी अधिक दिसतात. नवा आदेश स्पष्ट सांगतो की, ज्यांनी २०१९ च्या योजनेत कर्जमाफीचा लाभ घेतला त्यांना आता पूर्ण कर्जमाफी नाही. या शेतकऱ्यांनी १ एप्रिल २०१९ नंतर घेतलेले पीक कर्ज थकले असेल, तरच त्यांना केवळ पन्नास हजारांची कर्जमुक्ती मिळेल. २०१९ साली कर्जमाफी घेतलेल्या शेतकऱ्यांची संख्या तब्बल ३२ लाख २९ हजार होती. त्यातील आज थकबाकीत असलेले किती?, त्यांनाच पन्नास हजारांची माफी आहे. ज्या शेतकऱ्यांनी २०१९ च्या योजनेचा लाभ घेतला नव्हता, त्यांना आता दोन लाखांची कर्जमुक्ती आहे. अर्थात २०१९ नंतर कर्ज उचलून ते थकबाकीदार असतील तरच. एकाच शेतकऱ्याला पुन:पुन्हा कर्जमाफी देऊ नये, असे सरकारचे धोरण दिसते. जे नियमित कर्ज फेडतात त्यांच्यावर मात्र याही आदेशात अन्यायच दिसतो. कारण, नियमित कर्जफेड करणाऱ्यांनी सन २०२२-२३ ते २०२४-२५ या दरम्यान दोन आर्थिक वर्षांत नियमित कर्ज फेडले असेल व गेल्या आणि चालू आर्थिक वर्षातही ते थकबाकीदार नसतील, तरच त्यांना पन्नास हजारांचा प्रोत्साहनपर लाभ आहे. त्यातही पूर्वी कर्जमाफीचा लाभ घेतला असेल, तर लाभ नाही. हे सगळे अर्थ लावताना शेतकरी घामाधूम होतील. राज्यात २०१७ साली कर्जमाफीसाठी १८ हजार ७६२ कोटी, तर २०१९ साली १९ हजार ५०० कोटी खर्च झाले होते. यावेळी चाळण्या एवढ्या आहेत की, सरकारने ३६ हजार कोटींच्या माफीचा आकडा कसा काढला, हाही प्रश्नच आहे. सहकार विभाग सर्व निकषांवर लाभार्थी ठरवेल तेव्हा खरे आकडे समोर येतील. सहकारी क्षेत्रात २५ हजारांपेक्षा अधिक वेतन असणारे कर्मचारीही कर्जमाफीसाठी अपात्र आहेत. थोडक्यात त्यांनी तोट्यातील शेती सहन करायची. मधाचे पोळे आत कधीकधी पोकळ निघते. शेतकरी संघटनांनी या योजनेवर तशीच टीका केली आहे. निवडणुकीत लाडक्या बहिणींना खुश करण्यासाठी सरसकट अर्ज भरले गेले. आता ८० लाख महिलांना 'चले जाव' म्हटले गेले. शेतकरी कर्जमाफीही असाच दिखावा आहे. प्रत्यक्षात कोणतेच सरकार शेतकऱ्यांचा सातबारा कोरा करत नाही. छत्रपती शिवाजी महाराज, महात्मा फुले, अहिल्यादेवी होळकर या महापुरुषांच्या नावाने कर्जमाफी योजना आली. या महापुरुषांनी 'बळीराजाची लूट थांबवा', हे सांगितले. आमची सरकारे आधी लूट होऊ देतात, नंतर योजना काढतात. गुन्ह्यातील एखादा आरोपी स्वत:चा बचाव करण्यासाठी माफीचा साक्षीदार बनतो. तशातलाच हा प्रकार. कर्जमाफी योजना म्हणजे शेती सुधारण्यास आम्ही असक्षम ठरलो, अशी माफीची साक्षच आहे.

न्यायालयीन भ्रष्टाचाराची कुजबुज आणि सत्याचा शोध

'न्यायाधीशांना Holy Cow समजू नये. न्यायव्यवस्थेत भ्रष्टाचार आहे, हे कोणीही नाकारू शकत नाही' अशी टिप्पणी मद्रास हायकोर्टाने केली आहे..

डॉ. खुशालचंद बाहेती
व्यवस्थापक, लोकमत मीडिया
सहायक पोलिस आयुक्त (निवृत्त)

एका न्यायालयीन सुनावणीत न्यायाधीशांनी वरिष्ठ वकिलांना प्रश्न विचारला होता, "तुमच्या मते न्यायव्यवस्थेत भ्रष्टाचार आहे का?" (अनेकांच्या मते हे वरिष्ठ वकील फली एस. नरिमन होते.) त्यावर वरिष्ठ वकिलांचे उत्तर होते, "माय लॉर्ड, मी या प्रश्नाचे उत्तर देऊ शकत नाही, कारण 'हो' म्हटले तर तो न्यायालयाचा अवमान (Contempt of Court) ठरेल आणि 'नाही' म्हटले, तर तो न्यायालयात खोटी साक्ष दिल्याचा (Perjury) गुन्हा ठरेल." - हा किस्सा खरा असो वा नसो, न्यायव्यवस्थेतील भ्रष्टाचाराबाबत असलेली अस्वस्थता आणि मौन याचे तो प्रभावी चित्रण करतो.

हे अस्वस्थ सत्य पुन्हा एकदा चर्चेत आले आहे. मद्रास हायकोर्टाने 'न्यायाधीशांना पवित्र गायी (Holy Cow) समजू नये. न्यायव्यवस्थेत भ्रष्टाचार आहे, हे कोणीही नाकारू शकत नाही', अशी स्पष्ट टिप्पणी केली आहे.

स्वातंत्र्योत्तर भारतात लाचखोरी व भ्रष्टाचाराच्या आरोपांखाली एकाही सर्वोच्च अथवा उच्च न्यायालयातील न्यायाधीशांना फौजदारी न्यायालयात दोषी ठरवण्यात आलेले नाही. जिल्हा न्यायालयातील काही मोजक्या न्यायाधीशांवर भ्रष्टाचाराचे गुन्हे सिद्ध झाल्याच्या घटना आहेत.

वरिष्ठ न्यायाधीशांच्या लाचखोरीची काही गाजलेली प्रकरणे आजही चर्चेत आहेत. माजी न्यायमूर्ती व्ही. रामास्वामी हे महाभियोगाला सामोरे जाणारे सर्वोच्च न्यायालयातील पहिले न्यायाधीश. १९९३ मध्ये त्यांच्यावर आर्थिक अनियमिततेच्या आरोपातून आलेला महाभियोग संसदेत टिकला नाही व रामास्वामी पुढे दीर्घकाळ न्यायाधीश पदावर राहिले. कलकत्ता हायकोर्टाचे न्यायमूर्ती सौमित्र सेन यांच्यावर ते न्यायाधीश होण्यापूर्वी न्यायालयाने नेमलेले रिसिव्हर म्हणून नियुक्त असताना निधीचा गैरवापर केल्याचा आरोप झाला. त्यांच्याविरुद्धचा महाभियोग राज्य सभेत मंजूर झाला. लोकसभेत येण्यापूर्वीच त्यांनी राजीनामा दिला.

न्यायमूर्ती पी. डी. दिनाकरन यांच्यावर जमीन बळकावल्याचे आरोप झाल्यावर त्यांनीही राजीनामा दिला. २००८ मध्ये "कॅश ॲट जजेसडोअर" प्रकरणाने देशाला हादरवले होते. अलीकडेच दिल्लीतील न्यायमूर्ती यशवंत वर्मा यांच्या सरकारी निवासस्थानाच्या परिसरातील आउटहाऊसमध्ये लागलेली आग विझवताना मोठ्या प्रमाणात नोटांची बंडले आढळली. माजी सरन्यायाधीश एस. पी. भरुचा यांनी "सुमारे २० टक्के न्यायाधीश भ्रष्ट असू शकतात", असे निरीक्षण नोंदवले होते. सुप्रीम कोर्टाने "न्यायव्यवस्थेत भ्रष्टाचार कर्करोगासारखा पसरत आहे", असे गंभीर निरीक्षण यापूर्वी केले आहे.

सामान्य नागरिकांचा थेट संबंध येतो, त्या कनिष्ठ न्यायालयांमध्ये भ्रष्टाचाराच्या तक्रारी अधिक प्रमाणात ऐकू येतात. तहकूबी-स्टे मिळवणे, जामीन,

अनुकूल आदेश, प्रक्रियात्मक सवलती, प्रकरणांचे वाटप, राजकीय किंवा आर्थिक दबाव, अशा अनेक बाबींमध्ये भ्रष्टाचाराच्या आरोपांची चर्चा वारंवार होत असते. भारतातील बहुतांश न्यायाधीश अत्यंत प्रामाणिकपणे आणि प्रचंड ताणतणावाखाली आपले कर्तव्य पार पाडतात, हेही तितकेच खरे आहे. मात्र, काही मोजक्या घटनांमुळे संपूर्ण न्यायसंस्थेच्या विश्वासार्हतेवर परिणाम होतो.

लोकशाहीसाठी न्यायपालिकेचे स्वातंत्र्य अत्यावश्यक असले, तरी उत्तरदायित्वाचा अभाव कधी कधी अपारदर्शकतेला कारणीभूत ठरू शकतो. भ्रष्टाचाराचे आरोप कमी करण्यासाठी न्यायव्यवस्थेत महत्त्वाच्या सुधारणा आवश्यक आहेत.

१. न्यायाधीश नियुक्तीच्या कोलेजियम पद्धतीमध्ये न्यायपालिकेचे स्वातंत्र्य कायम राखत सकारात्मक बदल शक्य आहेत का, यावर विचार होणे आवश्यक आहे.

२. १९९७ मध्ये सरन्यायाधीश जे. एस. वर्मा यांच्या अध्यक्षतेखाली सर्वोच्च न्यायालयाच्या सर्व न्यायाधीशांच्या बैठकीत प्रत्येक न्यायाधीशानी आपली मालमत्ता सरन्यायाधीशांकडे जाहीर करावी, असे ठरले होते. मात्र, ही माहिती गोपनीय ठेवण्यात आली. ८ सप्टेंबर २००९ रोजी न्यायाधीशांना आपली मालमत्ता स्वेच्छेने कोर्टाच्या संकेतस्थळावर प्रसिद्ध करण्यास परवानगी देण्यात आली. २०२५ मधील अहवालानुसार सुमारे ७७० हायकोर्ट न्यायाधीशांपैकी केवळ ९७ न्यायाधीशांनीच मालमत्ता सार्वजनिकरीत्या जाहीर केली. सुप्रीम कोर्टाच्या संकेतस्थळावर फक्त २८ न्यायाधीशांची माहिती उपलब्ध होती, तीही अनेक वर्षे अद्ययावत करण्यात आलेली नव्हती.

३. न्यायव्यवस्थेविरोधातील भ्रष्टाचाराच्या तक्रारींची निष्पक्ष चौकशी करण्यासाठी स्वतंत्र आणि प्रभावी यंत्रणा आवश्यक आहे.

४. ई-फायलिंग, स्वयंचलित केस वाटप, ऑनलाइन आदेश, व्हर्च्युअल सुनावण्या आणि डिजिटल पेमेंट्स यामुळे मानवी हस्तक्षेप कमी होतो आणि तंत्रज्ञानामुळे मध्यस्थांची भूमिका घटते. भारतीय न्यायालये या दिशेने पुढे जात आहेत; मात्र ही प्रक्रिया अधिक वेगाने राबविण्याची गरज आहे.

५. सुनावणी कितीवेळा स्थगित करावी व कुठल्या परिस्थितीत करावी, याची एसओपी केल्यास भ्रष्टाचाराच्या संधी कमी होतील.

६. न्यायालयीन भ्रष्टाचारात सहभागी वकील, न्यायालयीन कर्मचारी आणि दलाल यांच्याविरोधात कठोर कारवाईसाठी प्रभावी यंत्रणा महत्त्वाची आहे.

७. निवृत्तीनंतर न्यायाधीशांना राज्यपालपदे, आयोग, न्यायाधिकरणे, संसदीय नियुक्त्या किंवा राजकीय पदे देण्याबाबतही प्रश्न उपस्थित होतात.

न्यायव्यवस्था लोकशाहीचा अत्यंत महत्त्वाचा स्तंभ आहे. मद्रास हायकोर्टाची निरीक्षणे महत्त्वाची आहेत, कारण त्यांनी अस्वस्थ करणारे वास्तव नाकारण्याऐवजी स्वीकारले. समस्येची कबुली हीच सुधारणेची पहिली पायरी असते.

khushalchand.baheti@lokmat.com

अन्वयार्थ

शाळेला कुलूप लागते, तेव्हा कोणकोणते दरवाजे बंद होतात?

गेल्या दहा वर्षांत देशातील लाखभर शाळा बंद झाल्या. सरकारने मुलांच्या हातात पुस्तक द्यायचे, की त्यांच्या खांद्यावर संघर्षाचे ओझे टाकायचे?

डॉ. विवेक बी. कोरडे
शिक्षणविषयक जाणकार

नुकताच केंद्र शासनाच्या नीति आयोगाने "School Education System in India : Temporal Analysis and Policy Roadmap for Quality Enhancement" हा अहवाल प्रसिद्ध केला. त्यातून देशातील शालेय शिक्षण व्यवस्थेचे एक अस्वस्थ करणारे वास्तव समोर आले आहे. २०१४-१५ ते २०२४-२५ या दशकभरातील शाळांची संख्या, विद्यार्थी प्रवेश, शिक्षक-विद्यार्थी गुणोत्तर, शाळेत टिकून राहण्याचे प्रमाण, पायाभूत सुविधा आणि विद्यार्थ्यांच्या अध्ययन निष्पत्ती अशा अनेक घटकांचा या अहवालात अभ्यास करण्यात आला. गेल्या दहा वर्षांत देशातील तब्बल एक लाख शाळा गायब झाल्या आहेत. यामध्ये सुमारे ९४ हजार सरकारी आणि ४ हजार अनुदानित शाळांचा समावेश आहे. याच काळात ५१ हजार खासगी शाळांची वाढ झाली आहे. हा निव्वळ आकडा नाही; तर तो शिक्षण व्यवस्थेच्या बदलत्या चेहऱ्याचा आणि सरकारी शिक्षणावरील कमी होत चाललेल्या विश्वासाचा गंभीर इशारा आहे.

विद्यार्थ्यांच्या प्रवेशातही मोठी घट झाली आहे. २०१४-१५ मध्ये देशभरातील शाळांमध्ये २६.९५ कोटी विद्यार्थी शिकत होते; ती संख्या २०२४-२५ मध्ये २४.६९ कोटींवर आली आहे. म्हणजेच, दशकभरात सुमारे आठ टक्क्यांची घट. या घसरणीमागे शालेय वयोगटातील लोकसंख्या कमी होणे, सरकारी शाळांचे विलीनीकरण किंवा काही शाळा बंद करणे, अशी कारणे पुढे केली जात आहेत. परंतु, हा प्रश्न केवळ आकड्यांचा नाही, तर शिक्षणाच्या उपलब्धतेचा, गुणवत्तेचा आणि विश्वासाचा आहे. एखादी शाळा बंद होते तेव्हा फक्त एक इमारत बंद होत नाही, तर त्या परिसरातील शेकडो मुलांच्या भविष्यातील शक्यता संकुचित होतात. गावातून शाळा नाहीशी होणे, म्हणजे त्या गावातून शिक्षणाची आशा हळूहळू मरणे होय. सरकारी शाळाच कमी होत गेल्या, शिक्षण अधिक खर्चीक झाले आणि ग्रामीण विद्यार्थ्यांसाठी संधींचे दरवाजे बंद झाले, तर 'सर्वांसाठी शिक्षण' ही संकल्पना केवळ कागदावरील घोषणा बनून राहण्याची भीती आहे.

महाराष्ट्रातील शाळांची स्थिती तर अधिक विदारक आणि चिंताजनक म्हणावी लागेल. गेल्या काही वर्षांपासून राज्यात 'पटसंख्या कमी आहे' हे कारण पुढे करून सरकारी शाळा बंद करण्याचा सपाटा सुरू आहे. विद्यार्थ्यांची संख्या कमी झाली म्हणून शाळा बंद करायच्या, की शिक्षणव्यवस्था सक्षम करून विद्यार्थ्यांना परत शाळेकडे आकर्षित करायचे? कारण शिक्षण हा बाजारातील नफा-तोट्याचा व्यवहार नसून, तो राज्यघटनेने दिलेला मूलभूत अधिकार आहे. किमान प्राथमिक आणि उच्च प्राथमिक शिक्षण मुलांना त्यांच्या घराजवळ उपलब्ध असावे, हा शिक्षण व्यवस्थेचा मूलभूत निकष आहे; पण महाराष्ट्रात हा निकष सर्रास पायदळी तुडवला जात आहे. राज्यातील शिक्षणाची ही दैन्यावस्था शासकीय कागदपत्रांमधूनच समोर आली आहे. त्यानुसार राज्यातील जवळपास चार हजार गाव-पाड्यांमध्ये घराजवळ शाळाच नसल्याने तब्बल २४ हजार विद्यार्थ्यांना दुसऱ्या गावातील शाळा गाठावी लागत आहे. काही भागांत, लहान मुलांना प्राथमिक शिक्षणासाठीच दररोज १० ते २० किलोमीटरचा खडतर प्रवास करावा लागत आहे. हा शिक्षणाचा प्रवास आहे की, मुलांच्या सहनशक्तीची परीक्षा?

शिक्षण हक्क कायद्यानुसार विद्यार्थ्यांच्या घरापासून एक किलोमीटरच्या परिसरात प्राथमिक शाळा आणि पाच किलोमीटरच्या परिसरात माध्यमिक शाळा असणे बंधनकारक आहे. पण, शासन ही जबाबदारी पूर्ण करण्याऐवजी विद्यार्थ्यांना वाहतूक किंवा प्रवास भत्ता देऊन आपली जबाबदारी झटकण्याचा प्रयत्न करत आहे. परंतु, प्रश्न इतकाच आहे का?, केवळ काही रुपये हातात देऊन शिक्षणापर्यंत पोहोचण्याच्या सर्व अडचणी संपतात का?, शासनाला मुलांच्या हातात पुस्तक द्यायचे आहे, की त्यांच्या खांद्यावर दररोज संघर्षाचे ओझे टाकायचे आहे?, कारण शाळा बंद करण्याचे निर्णय मंत्रालयातील वातानुकूलित दालनांमध्ये सहज घेतले जातात; पण त्याचे परिणाम मात्र चिखलातून चालणाऱ्या, खाडी पार करणाऱ्या आणि जंगलातून शाळा गाठणाऱ्या ग्रामीण मुलांच्या आयुष्यावर उमटत असतात. गावातून शाळा काढून घेणे, म्हणजे त्या गावाच्या भविष्यातील प्रकाशच हिरावून घेणे होय.

vivekkorde0605@gmail.com

जगभर

८०व्या वर्षी ट्रम्प यांचं हृदय १४ वर्षांनी तरुण!

अमेरिकेचे राष्ट्राध्यक्ष डोनाल्ड ट्रम्प यांचा हट्टीपणा, त्यांचे उटपटांग निर्णय, त्यांच्या कोलांटउड्या आणि त्यांचं मानसिक स्वास्थ्य.. याबाबत जगभरात कायमच चर्चा सुरू असते. पण व्हाइट हाऊसनं त्यांच्या तब्येतीबाबत नुकताच नवा वैद्यकीय अहवाल जाहीर केला आहे. काय म्हणतो हा अहवाल?..

ट्रम्प १४ जून रोजी ८० वर्षांचे होणार आहेत. नुकतीच त्यांची शारीरिक, मानसिक तपासणी करण्यात आली. मानसिक क्षमतेची तपासणी करण्यासाठी मॉन्ट्रियल कॉग्निटिव्ह असेसमेंट (एमओसीए) चाचणी घेण्यात आली. या चाचणीमुळे स्मृतिभ्रंश, अल्झायमर किंवा इतर मानसिक समस्यांची लक्षणं ओळखता येतात. ट्रम्प यांना या चाचणीत तीसपैकी तीस गुण मिळाले! एवढंच नाही, त्यांचं 'कार्डियाक एज' म्हणजेच त्यांच्या हृदयाचं प्रत्यक्ष वयदेखील त्यांच्या वास्तव वयापेक्षा तब्बल १४ वर्षांनी कमी आढळलं! या अर्थानं त्यांच्या वयापेक्षा ते बरेच तरुण आहेत!व्हाइट हाऊसचे डॉक्टर शॉन पी. बारबाबेला यांनी सांगितलं, राष्ट्राध्यक्षपदाच्या जबाबदाऱ्या पार पाडण्यासाठी ट्रम्प पूर्णपणे सक्षम आहेत. त्यांचं हृदय, फुप्फुसं, मेंदू आणि शरीर अत्यंत मजबूत आहे. ट्रम्प हे अमेरिकेच्या इतिहासातील सर्वाधिक वयाचे राष्ट्राध्यक्ष आहेत. २२ तज्ज्ञ डॉक्टरांनी त्यांच्या विविध शारीरिक आणि मानसिक तपासण्या केल्या. यामध्ये सीटी स्कॅन, हृदयाची प्रतिमा तपासणी, कर्करोग तपासणी आणि अनेक प्रतिबंधात्मक चाचण्यांचा समावेश होता.

गेल्यावर्षी त्यांच्या हृदय व रक्तवाहिनीसंबंधी प्रणालीची तपासणी करण्यात आली होती. त्यावेळी त्यांना 'क्रॉनिक व्हेनस इन्सफिशियन्सी' हा आजार असल्याचं सांगण्यात आलं होतं. या स्थितीत पायांतील शिरांना रक्त पुन्हा हृदयापर्यंत

पोहोचविण्यात अडचण येते. अहवालात म्हटले आहे, ट्रम्प यांची संज्ञानात्मक क्षमता म्हणजे स्मरणशक्ती आणि निर्णयक्षमता, तसेच शारीरिक कार्यक्षमता उत्कृष्ट आहे. डॉक्टरांनी नमूद केलं की, ट्रम्प यांचं व्यस्त वेळापत्रक, सातत्यानं होणाऱ्या बैठका, सार्वजनिक कार्यक्रम आणि शारीरिक हालचाली त्यांच्या एकूण आरोग्याला पूरक ठरतात.

ट्रम्प यांचं वजन आता २३८ पाउंड म्हणजेच सुमारे १०८ किलो आहे. वैद्यकीय दृष्टीनं हे लठ्ठपणाच्या जवळचं मानलं जातं. गेल्यावर्षी वैद्यकीय तपासणीत त्यांचं वजन २२४ पाउंड म्हणजे सुमारे १०१.६ किलो होतं. डॉ. बारबाबेला यांनी ट्रम्प यांना वजन कमी करण्याचा, आरोग्यदायी आहार स्वीकारण्याचा आणि अधिक शारीरिक हालचाली करण्याचा सल्ला दिला आहे.

ट्रम्प यांच्या प्रकृतीबाबत गेल्या काही काळापासून प्रश्न उपस्थित होत आहेत. अनेकांनी त्यांच्या हातांवर वारंवार दिसणाऱ्या निळ्या खुणा पाहिल्या आहेत. सुरुवातीला व्हाइट हाऊसनं या खुणा सतत हस्तांदोलन केल्यानं पडल्याचं म्हटलं होतं. नंतर ट्रम्प यांनी सांगितलं की, डाव्या हातावरील खुण टेबलाला धडकल्यामुळे आणि ॲस्पिरिन घेतल्यानं पडली. डॉ. बारबाबेला यांनी अहवालात या दोन्ही कारणांचा उल्लेख करत सांगितलं की, ॲस्पिरिन घेणाऱ्या व्यक्तींमध्ये अशा खुणा पडणं सामान्य असून, त्यामुळे कोणतीही हानी होत नाही. २०१५ मध्ये त्यांचे वैयक्तिक डॉक्टर हॅरॉल्ड बॉर्नस्टिन यांनी म्हटलं होतं, ट्रम्प हे राष्ट्राध्यक्ष म्हणून निवडून येणारे सर्वांत निरोगी व्यक्ती ठरतील!

जनमन

..तरच महाराष्ट्र 'शिकारमुक्त' होईल!

वन्यजीव तस्करीला तसेच वन्य पशुपक्षी यांच्या शिकारीला आळा घालण्याच्या उद्देशाने 'शिकारमुक्त महाराष्ट्र' ही वनविभागाने राबवलेली संकल्पना नागरिकांनी सहकार्य केले तरच फलदायी होईल आणि वन्यजीवांचे संरक्षण होईल. एकीकडे डोंगररांगा, वनक्षेत्रात वनवे मोठ्या प्रमाणात लागत असल्याने अनेक वन्यप्राणी जीव वाचविण्यासाठी सैरभर होत असताना दिसून येते.

वनातील पाणीसाठा मोठ्या प्रमाणात आटत असल्याने पाण्याच्या शोधात अनेक वन्यप्राणी मानवी वस्तीत तसेच शेतशिवारात येताना दिसतात. त्यातील काही वन्यप्राण्यांपासून शेतीचे नुकसान होत असल्याची कारणे पुढे करून नागरिकांकडून वेगवेगळ्या मार्गाने काही प्राण्यांची शिकार घडवून आणल्याच्या घटना दिसून येत आहेत. वास्तविक वन्यजीवांची शिकार हा अतिशय गंभीर गुन्हा आहे. वन्यजीवांचे संरक्षण करणे, अवैध शिकार रोखणे, जैवविविधता टिकून ठेवणे ही फक्त वनविभागाची जबाबदारी नसून सजग नागरिक म्हणून सर्वसामान्य लोकांचेही ते कर्तव्य आहे. वन्यजीवांच्या संरक्षणासाठी जागरूकता वाढवणे, संशयास्पद घटनांची माहिती वनविभागास कळवणे, जंगल आणि वन्यजीवांच्या बाबतीत काळजी घेणे.. अशा बाबतीत नागरिकांनी 'शिकारमुक्त महाराष्ट्र' या वनविभागाच्या मोहिमेत स्वयंस्फूर्तीने हातभार लावणे काळाची गरज बनली आहे. निसर्गाचे संवर्धन आणि वन्यजीवांच्या हत्या रोखणे ही सर्वांचीच जबाबदारी आणि कर्तव्य आहे. तरच ही जीवसाखळी जिवंत राहील, अन्यथा भविष्यात त्याचे फार मोठे परिणाम सगळ्यांनाच भोगावे लागतील.

- नितीन कुंभार, पिंपरी, पुणे

समकालीन महत्त्वाचे मुद्दे मांडणारी, नवी चर्चा सुरू करणारी वाचक-पत्रे या स्तंभामध्ये प्रसिद्ध केली जातील. आपली पत्रे येथे पाठवा : **janman@lokmat.com**

सेतू

'..माझं नाव केईको फुरुतानी. मी तुमच्या शेजारी ६०१ मध्ये राहते!'

कधीही गाणी लावतात, फुलबाज्या उडवतात म्हणून जपानी लोकांचा भारतीयांवर राग, पण आमच्या शेजारणीला भाजी-आमटीचे वास आवडले !

मयुरेश कुलकर्णी
जपानी भाषा, साहित्य, इतिहासाचा अभ्यासक, अनुवादक

'६०२ मध्ये राहता का आपण?' लिफ्टमध्ये शिरताना एका जपानी बाईंनी मला विचारलं. मी किंचित बिचकून म्हणालो, 'अं? हो.. ६०२ मध्ये!'

तोक्योच्या या उपनगरात राहायला येऊन एव्हाना दोन-अडीच वर्षं उलटली होती. आम्ही राहात होतो त्या दहा मजली इमारतीत सगळी कुटुंबं तद्दन जपानी वळणाची, अत्यंत शांत! त्यात आम्ही दोघेच परदेशी - भारतीय. कधीही गाणी लावतात, फुलबाज्या उडवतात, कचरा करतात म्हणून जपानी लोकांचा भारतीयांवर विशेष राग. माझ्या ऑफिसचा 'एचआर' विभाग 'हा जपान आहे. इथल्या शांतताप्रिय आणि नियमबद्ध समाजात राहायचं असेल, तर तुम्हालाही तसंच राहावं लागेल', हे वारंवार सांगत असे. आपला कोणाला त्रास नको हा आमचाही प्रयत्न असे. त्यामुळे '६०२ मध्ये राहता का?' या प्रश्नामागे त्या बाईंची काहीतरी तक्रारच असणार असं मी गृहीत धरलं, पण तेवढ्यात त्या उत्साहाने म्हणाल्या, "ओहोहो! तुम्ही होय ते? व्वा, बरं झालं आपली भेट झाली!"

हे ऐकून मला जरा 'हुश्श' झालं. लिफ्टमधून बाहेर पडताना त्या म्हणाल्या, 'तुमच्या घरावरून पुढे जाताना मसाल्यांचा इतका सुंदर घमघमाट जाणवतो.. आपले शेजारी कोण हे बघायला हवं, त्यांच्या मसालेदार पदार्थांची चव चाखून बघावी, असं आम्ही अनेकदा म्हणायचो, पण ओळख कशी काढायची कळत नव्हतं. आत्ता तुम्ही भेटलात, मला छान वाटलं! माझं नाव केईको फुरुतानी. मी तुमच्या शेजारी ६०१ मध्ये राहते.'

त्या इमारतीच्या प्रत्येक फ्लॅटच्या किचनचा

'एक्सहॉस्ट' समोरच्या कॉरिडॉरमध्ये होता. त्यामुळे आमच्या घरावरून पुढे जाताना फुरुतानी सानना आमटी भाजी फोडणीचे खमंग अपरिचित सुवास जाणवत असणार! त्या सुवासांनी त्यांना (म्हणजे आणखी एका जपानी कुटुंबाला!) वेड लावलं.. आमचा त्यात थोडासा हातभार! फुरुतानी सानच्या कौतुकाने आम्ही खुश झालो.

बीफ, कांदा, बटाटा, गाजर आणि टोमॅटो घालून शिजवलेली करी (जपानी उच्चार : कारेऽ) आणि त्याबरोबर वाफाळणारा भात हे जपानचं लाडकं जेवण. आपल्याकडच्या टू मिनिट नूडल्समधल्या मसाल्यांच्या जवळच्या चवीची घट्टसर 'करी' ऊर्फ 'कारेऽ' ही 'भारताने आपल्याला दिली' असं जपानी माणूस मानतो. भारतीय कढी आंग्लरूपात 'करी' झाली. मेईजी राज्यक्रांतीनंतर नव्या दमाच्या जपानी आरमाराला आधुनिकीकरणाचे धडे देण्यासाठी ब्रिटिश आरमारी अधिकारी जपानला गेले. त्यांच्या बरोबर 'करी'सुद्धा गेली आणि अल्पावधीतच लोकप्रिय झाली. रासबिहारी बोस हे भारतीय स्वातंत्र्यलढ्यातील महान सेनानी भारतातून निसटून जपानमध्ये स्थायिक झाले होते. तोक्योच्या 'नाकामुराया' भागात त्यांनी 'करी रेस्टॉरंट' काढलं होतं. त्यांच्यामुळे 'करी'ची खरी चव जपानला कळली, असंही म्हणतात. त्यानंतर आज इतक्या वर्षांनी जपानी माणसाशी मैत्री करण्याची कोंडी दाण्याचं कूट घालून केलेल्या कांदा टोमॅटो बटाट्याच्या रश्श्याने फोडली. ६०२ चे कुलकर्णी आणि ६०१ च्या फुरुतानी त्याबद्दल आयुष्यभर 'कारेऽ'च्या ऋणात राहणार होते.

- जपान हे एक कोडं आहे. ते दिसतं तितकं सोडवायला सोपं नाही. आता दर गुरुवारी थोड्या कहाण्या सांगीन म्हणतो!

m.kulkarni2611@gmail.com

सेतू : जगभरातील मराठी माणसांच्या जगण्यातले रूपरंग शोधणारा हा स्तंभ. तुम्ही स्वत:, तुमचे आप्त परदेशात राहात असाल, तर तुमचे अनुभव जरूर पाठवा. निवडक लेखनाला प्रसिद्धी. **ईमेल करा :** setu@lokmat.com

तिरकस आणि चौकस

गजानन घोंगडे

हे पत्र लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेडच्या वतीने मुद्रक व प्रकाशक **बालाजी मुळे** यांनी प्लॉट नं. ए - ८१८ इंडस्ट्रियल एरिया, एम.आय.डी.सी., महापे, नवी मुंबई येथे मुद्रित करून 'लोकमत', पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई कार्यालय - ४००७०५ येथून प्रसिद्ध केले. ● दूरध्वनी क्र : ०२२ ४६०४१७८४
● **मुंबई कार्यालय :** लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेड, तिसरा मजला, पारिजात हाउस, प्लॉट नं. १०७६, आपटे इंडस्ट्रियल इस्टेट, लक्ष्मीनरसिंग पपन मार्ग, डॉ. ई मोझेस रोडसमोर, गांधीनगर, वरळी, मुंबई, ४०००१८. ● दूरध्वनी क्र : ०२२- ४६०३५९३०, ०२२- ४७५०७९४६ ● **ठाणे कार्यालय :** वेस्टर्न व्ह्यू, श्री गजानन महाराज चौक, वारकरी भवनाजवळ, ठाणे, फोन : २५४४१९०५, २५३८१७७४ ● **नवी मुंबई कार्यालय :** पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई ४००७०५. फोन : ०२२ ४६०४१७८४ ● संस्थापक संपादक : **स्व. जवाहरलाल दर्डा** ● मानद संपादिका : **श्रीमती उषाताई दर्डा** ● चेअरमन, एडिटोरियल बोर्ड : **डॉ. विजय दर्डा** ● एडिटर इन चिफ : **राजेंद्र दर्डा** ● समूह संपादक : **विजय बाविस्कर**
● संपादक : **अतुल कुलकर्णी*** (*पी. आर. बी. कायद्यानुसार संपादकीय जबाबदारी यांची आहे.) 'लोकमत'मधील लेखांचे हक्क राखून ठेवले आहेत. लोकमत ® हे चिन्ह लोकमत मीडिया प्रायव्हेट लि. चे. व्यापारचिन्ह आहे.

चिंतन

अनियोजित निर्माण दे रहे हादसों को न्योता

शहरों में अनियोजित निर्माण लगातार बड़े हादसों को न्योता दे रहे हैं। इसके कारण राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली सहित देश के कई बड़े शहरों में सैकड़ों लोगों की जान जा चुकी है। बुधवार को ही दिल्ली के मालवीय नगर स्थित फ्लरिश स्टे होटल में लगी आग ने एक बार फिर शहरी विकास मॉडल की भयावह सच्चाई सामने ला दी है। इस हादसे में 21 लोगों की मौत हो गई, जिनमें 17 विदेशी नागरिक शामिल थे। इससे दो दिन पहले भी एक इमारत गिरने से 6 लोगों की मौत हो गई थी। आंकड़ों को देखें तो दिल्ली में पिछले 6 महीनों में ऐसी घटनाओं में 70 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। मालवीय नगर में यह केवल आगजनी की घटना नहीं, बल्कि उन खामियों का दर्दनाक परिणाम है जो वर्षों से हमारी प्रशासनिक व्यवस्था, भवन निर्माण प्रणाली और सुरक्षा तंत्र में मौजूद हैं। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि जिस होटल में यह हादसा हुआ, उसके पास फायर एनओसी तक नहीं थी। सवाल यह है कि बिना आवश्यक सुरक्षा प्रमाणपत्र के होटल आखिर चल कैसे रहा था? देश के बड़े शहरों में अनियोजित निर्माण अब अपवाद नहीं, बल्कि सामान्य प्रवृत्ति बन चुके हैं। ऐसे हादसे दिल्ली के अलावा मुंबई, हरियाणा, नागपुर और आंध्रप्रदेश में भी हो चुक हैं। जैसे आबादी बढ़ रही है, जमीन सीमित है और मुनाफे की होड़ में नियमों को कागजों तक सीमित कर दिया गया है। नतीजा यह है कि बहुमंजिला इमारतें तो खड़ी हो रही हैं, लेकिन सुरक्षा व्यवस्था धराशायी होती जा रही है। कहीं आपातकालीन निकास नहीं हैं, कहीं अग्निशामक यंत्र निष्क्रिय पड़े हैं, तो कहीं पानी की पर्याप्त व्यवस्था तक नहीं है। जब तक सब कुछ सामान्य रहता है, ये खामियां दिखाई नहीं देतीं, लेकिन जैसे ही कोई दुर्घटना होती है, इनकी कीमत इंसानी जानों से चुकानी पड़ती है। विडंबना यह है कि जिन भवनों को सुरक्षा मानकों का पालन करना चाहिए, वे स्वयं जोखिम के केंद्र बने हुए हैं। आग लगने की घटनाओं में एक और बड़ी समस्या दमकल विभाग की सीमित क्षमता है। आज शहरों में 10, 15 और 20 मंजिल तक की इमारतें खड़ी हो रही हैं, लेकिन कई स्थानों पर फायर ब्रिगेड के पास सिर्फ 4 से 5 मंजिल से अधिक ऊंचाई तक पहुंचने वाले आधुनिक हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म और स्काईलिफ्ट तक उपलब्ध नहीं हैं। जब आग बहुमंजिला इमारतों में फैलती है, तब बचाव कार्य समय के खिलाफ लड़ाई बन जाता है। संकरी गलियां, अव्यवस्थित पार्किंग और अवैध निर्माण इस लड़ाई को और कठिन बना देते हैं। दमकल की गाड़ियां मौके तक समय पर नहीं पहुंच पातीं और तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। यह समस्या केवल सरकारी तंत्र तक सीमित नहीं है। आम नागरिकों और भवन मालिकों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है। अक्सर लोग अतिरिक्त कमरे बनाने, अधिक किराया कमाने या ज्यादा जगह घेरने के लिए सुरक्षा नियमों की अनदेखी कर देते हैं। आपातकालीन निकास बंद कर दिए जाते हैं, सीढ़ियों पर सामान रख दिया जाता है और बिजली की असुरक्षित वायरिंग को नजरअंदाज किया जाता है। दुर्घटना होने तक किसी को खतरे का एहसास नहीं होता। ऐसे में लोगों को खुद भी जागरूक होना चाहिए, क्योंकि कोई भी आपदा बताकर नहीं आती। यानी बचाव के उपाय पहले से ही किए जाएं तो ऐसी गंभीर आपदाओं से बचा जा सकेगा। इसलिए जवाबदेही तय करनी ही होगी। तभी हम ऐसी विपदाओं से पार पा सकेंगे।

आर्थिकी
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

मानसून और कच्चे तेल की चुनौतियां

आम आदमी और किसान से लेकर संपूर्ण अर्थव्यवस्था के सामने कमजोर मानसून से सूखे की आशंका और महंगे कच्चे तेल से महंगाई संबंधी आर्थिक चुनौतियां चिंता का कारण बन गई हैं। 2 जून को संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने रिपोर्ट जारी करते हुए बताया है कि इस वर्ष अल नीनो के कारण भारत में मानसून के अत्यधिक कमजोर होने और भीषण सूखे की आशंका है। इससे देश में सामान्य से कम बारिश का खतरा बढ़ गया है। कम बारिश और सूखे के कारण खरीफ फसलों की बुवाई प्रभावित हो सकती है, जिससे खाद्यान्न उत्पादन और महंगाई पर सीधा असर पड़ने की आशंका है।

इन दिनों देश के आम आदमी और किसान से लेकर संपूर्ण अर्थव्यवस्था के सामने कमजोर मानसून से सूखे की आशंका और महंगे कच्चे तेल से महंगाई संबंधी आर्थिक चुनौतियां चिंता का कारण बन गई हैं। हाल ही में 2 जून संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने रिपोर्ट जारी करते हुए बताया है कि इस वर्ष अल नीनो के कारण भारत में मानसून के अत्यधिक कमजोर होने और भीषण सूखे की आशंका है। इससे देश में सामान्य से कम बारिश का खतरा बढ़ गया है और इससे देश के कई हिस्सों में लू और भीषण गर्मी की स्थिति पैदा हो सकती है। कम बारिश और सूखे के कारण खरीफ फसलों की बुवाई प्रभावित हो सकती है, जिससे खाद्यान्न उत्पादन और महंगाई पर सीधा असर पड़ने की आशंका है। इसी तरह एक जून को हाल ही में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आयएमडी) ने देश की धड़कन माने जाने वाले दक्षिण-पश्चिम मानसून को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं।

मौसम विभाग ने साल 2026 के मानसून के अपने पुराने अनुमान को और घटा दिया है। पहले जहां आयएमडी ने लॉन्ग पीरियड एवरेज (एलआरए) की 92 फीसदी बारिश होने का अनुमान लगाया था, वहीं अब इसे घटाकर 90 फीसदी कर दिया गया है। इसका सीधा मतलब यह है कि देश में इस साल 'सामान्य से कम' बारिश होने की पूरी आशंका है। अगर मौसम विभाग का यह ताजा अनुमान सच साबित होता है, तो भारत पिछले एक दशक के सबसे सूखे मानसून का सामना करेगा। इससे पहले साल 2015 में भारत में इतनी कम बारिश रिकॉर्ड की गई थी, जब मानसून सामान्य से लगभग 13 फीसदी कम था। चूंकि मानसून के दौरान अल-नीनो की स्थिति मजबूत होने की वजह से बारिश कम होगी। अब अल-नीनो के खतरे और कमजोर मानसून की आशंका से जलाशय के सूखने और खेती के लिए पानी की कमी की चिंता बढ़ गई है। वास्तव में देश के किसानों और कृषि क्षेत्र की चिंताएं बढ़ाने वाला यह परिदृश्य देश के वर्तमान सुकूनदायक कृषि क्षेत्र के समक्ष एक चुनौती बनकर दिखाई दे रहा है।

उल्लेखनीय है कि कमजोर मानसून व सूखे की आशंका के साथ एक बार फिर इसी माह जून की शुरुआत से अमेरिका-ईरान के बीच पश्चिम एशिया में लगातार बढ़ते तनाव और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों की वजह से देश में पेट्रोल-डीजल की कीमतें और बढ़ने की आशंका बनी हुई है। पिछले माह मई 2026 में चार बार पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। पेट्रोलियम मंत्रालय के मुताबिक सरकारी क्षेत्र की तीनों तेल कंपनियों इंडियन आयल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम, भारत पेट्रोलियम को संयुक्त तौर पर प्रतिदिन करीब 750 हजार करोड़ रुपये का घाटा हो रहा है और पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ने की आशंका बनी हुई है। साथ ही भारत में महंगाई बढ़ रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत में अप्रैल 2026 में थोक महंगाई बढ़कर 8.3 प्रतिशत और खुदरा महंगाई बढ़कर 3.48 प्रतिशत हो गई है। प्रमुख कंसल्टेंसी फर्म ईवाई इंडिया की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम एशियाई संकट के कारण भारत में वित्त वर्ष 2026-27 में महंगाई दर 6 प्रतिशत के ऊपरी स्तर को छू सकती है। एशियाई विकास बैंक के द्वारा

प्रस्तुत रिपोर्ट के मुताबिक इस वर्ष 2026-27 में भारत में महंगाई 6.9 प्रतिशत के स्तर पर पहुंच सकती है। यह उभरकर दिखाई दे रहा है कि पेट्रोल और डीजल के महंगे होने का सबसे बड़ा असर आम लोगों की जेब पर पड़ने लगा है। निजी वाहन चलाने वालों का खर्च बढ़ गया है। डीजल महंगा होने से ट्रक, बस और माल ढुलाई का खर्च भी बढ़ गया है। इसका असर सब्जियों, फल, दूध और रोजमर्रा के सामानों की कीमतों पर दिखाई देने लगा है। ऐसे में एक ओर कमजोर मानसून और सूखे से निर्मित होने वाली चिंताओं पर ध्यान देना होगा, वहीं दूसरी ओर कच्चे तेल की ऊंची की मतों और महंगाई की चिंताओं पर भी ध्यान देना होगा। ऐसे में अल-नीनो के बढ़ते असर को देखते हुए केंद्र सरकार रणनीतिपूर्वक आगे बढ़ी है। किसानों को इस बड़े मौसमी संकट से बचाने के लिए सरकार ने 1 जून 2026 से देशव्यापी "खेत बचाओ" अभियान के तहत रणनीतिपूर्वक कदम आगे बढ़ाए हैं। इसके तहत किसानों को उनके इलाके और फसल के हिसाब से खास सलाह (क्रॉप-स्पेसिफिक एडवाइजरी) दी जाएगी, ताकि वे मौसम के जोखिमों को समझकर सही फैसला ले सकें। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सिर्फ जानकारी बांटना नहीं है, बल्कि जमीन पर जाकर किसानों को यह बताना है कि उन्हें कम बारिश या सूखे के खतरे वाले इलाकों में कौन सी फसल बोनी चाहिए, किस फसल की तरफ बदलाव करना चाहिए और उनके पास पारंपरिक खेती के क्या बेहतर विकल्प मौजूद हैं। किसानों को उनके इलाके के मौसम, वहां की मिट्टी और बाजार की मांग के हिसाब से व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया जाएगा। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि इस कमजोर मानसून और सूखे की आशंका के बड़े संकट से निपटने के लिए सरकार ने एक व्यापक और सहयोगी ढांचा तैयार किया है। इस अभियान में स्थानीय पंचायतों, राज्य सरकारों, कृषि विज्ञान केंद्रों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों और स्थानीय कृषि विभागों को एक साथ जोड़ा गया है। देश के कोने-कोने तक अपनी पहुंच मजबूत करने के लिए 1,600 से ज्यादा विशेष टीमें बनाई गई हैं। इनमें से 500 टीमें विशेष रूप से देश के उन 100 जिलों में तैनात की जाएंगी, जहां रासायनिक खादों की खपत सबसे ज्यादा है। चूंकि वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ रही है, अतएव सरकार के नीतिगत हस्तक्षेप की गुंजाइश सीमित है, लेकिन मौजूदा हालात को देखते हुए सरकार के साथ-साथ उद्योग-कारोबार और हर वर्ग के सभी लोगों के द्वारा हरसंभव तरीके से महंगाई का मुकाबला करने के लिए आगे बढ़ना होगा।

देश के नागरिकों के द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा की गई उस अपील पर अमल किया जाना होगा, जिसमें उन्होंने पेट्रोल-डीजल का किफायत से उपयोग करने की जरूरत बताई है। सरकार के द्वारा पेट्रोल में इथेनाल का मिश्रण 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 30 प्रतिशत किया जाना होगा। तेल की मांग में कमी करने हेतु इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) के उपयोग में तेजी लाई जानी होगी। उम्मीद करें कि सरकार संयुक्त राष्ट्र के विश्व मौसम विज्ञान संगठन और भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के द्वारा इस वर्ष 2026 के लिए प्रस्तुत किए गए मौसम अनुमानों के मद्देनजर कमजोर मानसून, अलनीनो और कृषि की बढ़ी हुई लागत संबंधी चुनौतियों से सफलतापूर्वक मुकाबले के लिए बहुआयामी उपायों के साथ आगे बढ़ेगी। साथ ही सरकार कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों से भारत में बढ़ती महंगाई से आम आदमी के लिए तात्कालिक राहत और भविष्य में नवीकरणीय ऊर्जा को पेट्रोल-डीजल का विकल्प बनाने जैसे दीर्घकालीन उपायों के साथ रणनीतिपूर्वक आगे बढ़ेगी। इससे देश के आम आदमी और किसानों सहित संपूर्ण अर्थव्यवस्था लाभांवित होगी।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

सियासत
महेन्द्र तिवारी

क्या नए राजनीतिक युग की शुरुआत करेंगे अन्नामलाई

तमिलनाडु की राजनीतिक भूमि हमेशा से भारतीय राजनीति के मानचित्र पर एक विशिष्ट और पृथक पहचान बनाए हुए है। देश के अन्य राज्यों के विपरीत यहां राष्ट्रीय विचारधारा वाले दलों की तुलना में क्षेत्रीय अस्मिता और क्षेत्रीय संगठनों का प्रभाव कहीं अधिक गहरा रहा है। बीते अनेक दशकों से द्रविड़ आंदोलन की कोख से निकली राजनीति ने ही इस राज्य की सत्ता की दिशा और दशा को पूरी तरह नियंत्रित और संचालित किया है। इस समय तमिलनाडु के राजनीतिक आकाश में जिस एक नाम को लेकर सबसे अधिक चर्चाएं और कयास लगाए जा रहे हैं, वे हैं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई। पिछले कुछ समय से राज्य के समाचारों और राजनीतिक चर्चाओं में इस बात ने अत्यधिक जोर पकड़ लिया है कि वे अपने वर्तमान दल से नाता तोड़कर एक नए क्षेत्रीय राजनीतिक दल का गठन कर सकते हैं। यद्यपि उन्होंने अभी तक इस विषय में कोई आधिकारिक या स्पष्ट घोषणा नहीं की है, परंतु उनके हालिया वक्तव्य, उनके समर्थकों द्वारा लगाए गए विज्ञापन पत्र, महत्वपूर्ण बैठकों से उनकी दूरी और जमीनी स्तर पर चल रही संगठनात्मक गतिविधियों ने राज्य की राजनीति को एक नए विमर्श की ओर मोड़ दिया है। इस नए राजनीतिक घटनाक्रम की सुगबुगाहट तब और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी जब कोयंबटूर शहर में अचानक कई प्रमुख स्थानों पर उनके समर्थकों द्वारा बड़े-बड़े विज्ञापन पत्र लगाए गए। सामान्य राजनीतिक विज्ञापनों से सर्वथा भिन्न इन पत्रों पर अंकित संदेश ने सभी का ध्यान आकर्षित किया, जिसमें लिखा था कि निडर सोच की कोई सीमा नहीं होती। इस वाक्य को राजनीतिक विश्लेषकों और जनता द्वारा एक बड़े बदलाव के संकेत के रूप में देखा गया। इसके तुरंत बाद जनसंचार के आधुनिक माध्यमों और मुख्यधारा की राजनीति में यह बात तेजी से फैल गई कि वे किसी नए और स्वतंत्र राजनीतिक मंच की आधारशिला रखने की तैयारी कर रहे हैं। उनके इस संभावित कदम को तब और बल मिला जब उनके प्रशंसकों और समर्थकों के संगठन, जिसका नाम अन्नामलाई अन्बू कूट्टम है, उसने अचानक अपनी गतिविधियों को तेज करते हुए नए सदस्यों और पदाधिकारियों को जोड़ना आरंभ कर दिया। इसके साथ ही भीतरखाने से यह समाचार भी आ रहे हैं कि मक्कल शक्ति इयक्कम नाम से एक विशाल जनआंदोलन या सामाजिक संगठन की रूपरेखा तैयार की जा रही है, जो आने वाले समय में एक पूर्ण राजनीतिक दल का रूप धारण कर सकता है। वर्ष 2021 में उन्हें तमिलनाडु में दल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। बहुत ही अल्प समय में वे राज्य की राजनीति का एक अपरिहार्य और चर्चित चेहरा बनकर उभरे। उनकी संवाद शैली अत्यंत सीधी और सीधे प्रहार करने वाली रही है, जिसके कारण उन्होंने वर्तमान द्रमुक सरकार की नीतियों पर लगातार तीखे हमले किए और अपने दल को राज्य में एक स्वतंत्र राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने की पुरजोर कोशिश की। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में यद्यपि उनका दल राज्य में कोई भी निर्वाचन क्षेत्र जीतने में सफल नहीं हो सका, परंतु उनके नेतृत्व में दल का मत प्रतिशत पहली बार दो अंकों तक पहुंचने में कामयाब रहा, जिसे राज्य की राजनीति में एक बड़ी घटना माना गया। इस सफलता का श्रेय मुख्य रूप से उनकी जनसभाओं और उनके द्वारा आयोजित की गई एन मन्न, एन मक्कल नामक व्यापक यात्रा को दिया गया, जिसने उन्हें युवाओं और शहरी मतदाताओं के बीच बेहद लोकप्रिय बना दिया। राजनीतिक क्षेत्र के जानकारों का मानना है कि केंद्रीय नेतृत्व ने भविष्य के गठबंधनों को बचाने और राजनीतिक संतुलन बहाल करने के लिए उन्हें प्रदेश अध्यक्ष के पद से मुक्त करने का निर्णय लिया। इसी क्रम में वर्ष 2025 में उनके स्थान पर नैनार नागेंद्रन को तमिलनाडु में दल की कमान सौंपी गई। पद से हटाए जाने के बाद भी उनके प्रति निष्ठा रखने वाले समर्थकों और युवाओं की संख्या में कोई कमी नहीं आई, बल्कि उनके समर्थकों ने इसे उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता के एक नए अध्याय के रूप में देखा। यही कारण है कि जब हाल के दिनों में उन्होंने दल की दो अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य केंद्रीय समिति की बैठकों से पूरी तरह दूरी बना ली, तो उनके अलग रास्ते पर जाने की अटकलों को अत्यधिक हवा मिली। वर्तमान समय में तमिलनाडु की राजनीति एक बड़े संक्रमण काल से गुजर रही है। आने वाले कुछ दिन निश्चित रूप से इस बात का निर्धारण करेंगे कि तमिलनाडु का राजनीतिक भविष्य किस करवट बैठने वाला है।

(लेखिक स्वतंत्र स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

आत्मबल पाने ईश्वर के सान्निध्य में जाना पड़ता है

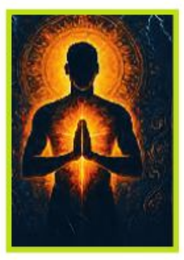

संकलित
दर्शन

जब व्यक्ति किसी कार्य को करने चलता है, तो उसके मन-हृदय में बारंबार विचार-भाव उठते हैं कि वह कार्य करें या नहीं, उससे होगा या नहीं और परिणाम भी सफलता और असफलता के रूप में सामने आता है। किसी कार्य को करने के लिए बल की आवश्यकता होती है। इसके बिना उसको गति देना असंभव है। कई बार किसी कार्य को करते समय नाना-प्रकार के संकट उसमें बाधा बन खड़े हो जाते हैं। ऐसे में कोई व्यक्ति उस कार्य को बीच में ही छोड़ देता है। परिणामस्वरूप उसे असफलता हाथ लगती है। असफलता यह सिद्ध करती है कि अमुक कार्य को पूरे मनोयोग से नहीं किया गया। मनोयोग का अर्थ होता है-तन, मन और हृदय से समर्पित होकर किसी कार्य को करना। किसी कार्य में सफल होने के लिए व्यक्ति में मानसिक संतुलन, विश्वास, जिज्ञासा, लगन, संघर्ष करने की क्षमता और तन्मयता जैसे गुणों का होना जरूरी होता है। इनकी प्राप्ति आत्मबल से होती है। आत्मबल की प्राप्ति के लिए ईश्वर के सान्निध्य में जाना पड़ता है। सान्निध्य पाने के लिए ईश्वर का विश्वास आवश्यक है। विश्वास पाने के लिए तप-साधना करनी पड़ती है। चूंकि आत्मबल में ईश्वर की शक्ति निहित होती है, इसीलिए इसे ब्रह्मबल भी कहते हैं। आत्मबल से संपन्न मनीषी के लिए कोई कार्य असंभव नहीं रहता है। उसका कोई कार्य बीच में नहीं रुकता है। जब शरीरबल और मनोबल टूट जाता है तो उस समय आत्मबल सहारा देता है। आत्मबल से युक्त व्यक्ति कभी हताश-निराश नहीं होता है।

साधु संगत से चोर ने चोरी छोड़ी

संकलित
प्रेरणा

एक डाकू था, जो लूट पाट करता था। एक बार एक गांव से धन लूटकर वो भाग रहा था कि घोड़े पर से गिर कर घायल हो गया। उसने देखा पास में ही एक साधू की कुटिया है, धन को जमीन मे गाढ कर वो साधु की कुटिया में गया। साधु रात्रि भोजन के लिए ही बैठे थे। दरवाजे पर दस्तक सुन उन्होंने कहा, जो कोई भी है, अन्दर आ जाओ। डाकू अन्दर गया तो साधु ने उसे भी बैठने के लिए आसन दिया, और पहले उसके समक्ष भोजन परोसा, फिर स्वयं लिया। साधु ने उसे भोजन प्रारम्भ करने को कहा- आप अतिथि है इसलिए आप ईश्वर सामान है, आप पहले भोजन आरंभ करे। डाकू को आजतक किसी ने इतने सम्मान से ना कहा था और ना ही खिलाया था। डाकू ने भोजन किया। साधु ने एक चटाई उसके लिए बिछा दी और कहा रात में आप कहां जाइएगा तो यही विश्राम कर लीजिए। डाकू थोड़ा घायल था, तो चलने में उसे तकलीफ़ हो रही थी, जैसे ही साधु को उसके ज़ख्म का पता चला, उसका उपचार करने लगे। कुछ पत्तो को पीसकर उसका रस लेप करके एक कपड़े से उसके ज़ख्म पर बांधा। और सहारा देकर उसे चटाई पर लिटाया। डाकू साधु की उदारता से बहुत प्रभावित हुआ, उसने कहा, बाबा आप कितने संतुष्ट और उदार व्यक्तित्व के स्वामी है। आप में दया की भावना है। क्या आपको कभी धन की लालसा नहीं होती? साधु बोले- धन तो नश्वर है बालक, और जो चीज नष्ट हो जाए उसके लिए लालसा करना विनाश की ओर अग्रसर होना है।

अंतर्मन

आज की पाती

खेतों की सेहत की फिक्र जरूरी

हाल ही में कृषि मंत्रालय ने 1 जून से 30 जून तक एक बहुत ही अच्छा अभियान 'खेत बचाओ' चलाया है, जिसका मकसद खेतों की उपजाऊ क्षमता को रासायनिक खादों से होने वाले नुकसानों से बचाना भी है। कहते हैं कि जब जागो, तब सवेरा, लेकिन देर तक सोना हमेशा हानिकारक ही होता है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है, लेकिन बहुत ही निराशाजनक है कि सरकारों की गलत नीतियों और संबंधित विभागों का कृषि के प्रति ढुलमुल रवैया आज खेतों पर भारी पड़ रहा है। उनकी उपजाऊ क्षमता रासायनिक खादों के कारण कम हो रही है। भूमि बंजर होने की आशंका है। सरकार का बहुत अच्छा प्रयास है कि उसने खेतों की बीमार होती सेहत के लिए खेत बचाओ अभियान चलाया है।

– सतीश मरकाम, जगदलपुर

ट्रेंड

डीके शिवकुमार को बधाई

कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ग्रहण करने पर डीके शिवकुमार को हार्दिक बधाई। उन्हे उनके कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं। केंद्र सरकार जन कल्याण के लिए कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर काम करेगी। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

लोगों की सेवा करते रहेंगे

कर्नाटक के लोगों ने हम पर भरोसा किया और वह भरोसा हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार और मंत्रिपरिषद को हार्दिक बधाई, जो कर्नाटक के लोगों की आकांक्षाओं को आगे बढ़ाएंगे। हम कर्नाटक के लोगों की बात सुनते रहेंगे, उनकी सेवा करते रहेंगे।

-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

हर पात्र को लाभ मिले

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी और डबल इंजन सरकार की प्रतिबद्धता से ही 3,000 रुपये की सहायता राशि देने का वादा पूरा किया गया है। जैसे-जैसे फॉर्म मिलते जाएंगे, उनका सत्यापन किया जाएगा व पैसे खातों में अंतरित किए जाएंगे। हमारा लक्ष्य है कि हर पात्र महिला को यह लाभ मिले।

-शुभेंदु अधिकारी, मुख्यमंत्री, बंगाल

जैविक खेती अपनाएं

मैंने स्वयं जैविक खेती अपनाने का फैसला किया है। मैं चाहती हूं कि दूसरे भी ऐसा ही करें। पहले साल मुझे नुकसान हो सकता है। मैं अपनी जमीन जोतने जा रही हूं। हर साल 12 दिसंबर को मैं मजदूरों के साथ खेतों में गन्ने की कटाई करूंगी।

-पंकजा मुंडे, पर्यावरण मंत्री, महाराष्ट्र

करंट अफेयर

अमेरिकी वैज्ञानिकों पर मंकीपॉक्स वायरस की तस्करी का आरोप

अमेरिका की एक सरकारी प्रयोगशाला के दो वैज्ञानिकों पर अफ्रीका से निष्क्रिय मंकीपॉक्स वायरस की शीशियां देश में तस्करी करके लाने और मिशिगन के एक हवाई अड्डे पर जांचकर्ताओं से झूठ बोलने का आरोप लगाया गया है। प्राधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। डेट्रॉइट की संघीय अदालत में विंसेंट मुंस्टर और क्लॉड क्वे के खिलाफ आपराधिक शिकायत दर्ज की गई। मुंस्टर, मोंटाना के हैमिल्टन स्थित 'रॉकी माउंटेन लैबोरेटरीज' में वायरस पारिस्थितिकी अनुभाग के प्रमुख हैं और क्वे उनके साथ काम करते हैं। मुंस्टर और क्वे को जनवरी में डेट्रॉइट मेट्रोपॉलिटन हवाई अड्डे पर उस समय रोक लिया गया था, जब वे पेरिस से लौटे थे और उससे पहले कांगो गणराज्य में नौ दिन बिताकर आए थे। मध्य अफ्रीका के विशाल देश कांगो में एमपॉक्स बीमारी के प्रकोप के कारण दो हजार से अधिक लोगों की मौत हो गई थी। हालांकि, करीब दो वर्षों से जारी यह प्रकोप अप्रैल में समाप्त घोषित कर दिया गया था। संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) ने अदालत में दाखिल दस्तावेज में कहा कि मुंस्टर ने इस बात से इनकार किया था कि वह किसी जैविक सामग्री या नमूने के साथ अमेरिका लौटा है। लेकिन बाद में जांच में पता चला कि दोनों के पास निष्क्रिय मंकीपॉक्स वायरस की शीशियां थीं।

ऑफ बीट

जब बच्चा डर के कारण पीछे हटे, तो माता-पिता क्या करें?

अगर आपका बच्चा कभी स्कूल के खेल दिवस या दौड़ प्रतियोगिता वाले दिन सुबह अड़ियल रवैया अपनाने लगता है, तो आप अकेले नहीं हैं जो इस तरह की चिंता से जूझ रहे हैं। कुछ बच्चों में ऐसे अवसर गहरी चिंता और घबराहट पैदा कर देते हैं। उनके मन में सवाल उठते हैं- अगर मैं सबसे धीमा निकला तो? माता-पिता के लिए ऐसे समय में यह समझना मुश्किल हो सकता है कि क्या किया जाए। बहुत ज्यादा दबाव डालने पर सुबह का माहौल तनावपूर्ण हो सकता है, जबकि बच्चे को छूट देने पर यह चिंता सताती है कि कहीं उसे चुनौतियों से बच निकलना तो नहीं सिखा रहे। ऐसे में क्या कभी बच्चे की इच्छा के अनुसार चलना ठीक है? और अगली बार उसे कोशिश करने का बेहतर अवसर कैसे दिया जाए? जब हम किसी ऐसी चीज से बचते हैं जिससे हमें डर लगता है, तो तुरंत राहत महसूस होती है। यह राहत बहुत असरदार होती है और हमारे मस्तिष्क को यह संदेश देती है कि बचना कारगर रहा। समय के साथ डर और बढ़ जाता है और उससे बचने की प्रवृत्ति भी मजबूत हो जाती है। यह केवल बच्चों के साथ नहीं, बल्कि हम सभी के साथ होता है। इसीलिए सामान्य तौर पर बच्चों के लिए यह बेहतर होता है कि वे अपने डर का सामना जल्द करें, उससे पहले कि उससे बचने की आदत बन जाए।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

दैनिक जागरण

कार्य की उपेक्षा के बाद अनुकूल परिणाम की अपेक्षा न करें

अंधेरगर्दी की आग

दिल्ली में अवैध तरीके से विस्तारित हो रहे एक भवन के गिरने की चर्चा थमी भी नहीं थी कि एक होटल में आग लगने से 21 लोग मारे गए और कई गंभीर रूप से घायल हो गए। मरने वालों में अधिकांश वे हैं, जो पड़ोस के अस्पताल में अपने स्वजनों के उपचार के लिए आए थे। इनमें कई विदेशी भी थे। आग होटल के बेसमेंट में स्थित रेस्त्रां में लगी। आग लगने का कारण कुछ भी हो, उसने इसलिए विकराल रूप ले लिया, क्योंकि रेस्त्रां और 25 कमरों वाले इस होटल में निकास का दरवाजा एक ही था। इससे भी खतरनाक बात यह थी कि न तो आग से बचाव के उपाय थे और न ही अग्निशमन विभाग का अनापत्ति प्रमाणपत्र। साफ है कि अग्निशमन विभाग ने यह देखने की जहमत नहीं उठाई कि इस होटल में आग से बचाव के उपाय हैं या नहीं? तथ्य यह भी है कि इस होटल में कई कमरे अवैध तरीके से निर्मित हुए। छह की जगह 25 कमरे बना दिए गए और इस तरह एक छोटा होटल बड़े होटल में तब्दील हो गया। कहीं पर किसी भी भवन में अवैध निर्माण इस तरह करना संभव नहीं कि वह किसी को दिखे नहीं, पर दिल्ली ही नहीं, देश भर में स्थानीय निकायों के अधिकारी-कर्मचारी कुछ ले-देकर न केवल अवैध निर्माण होने देते हैं, बल्कि सुरक्षा उपायों की उपेक्षा भी। नतीजा यह है कि रह-रह कर आग लगने की जानलेवा घटनाएं होती रहती हैं।

जनहानि वाली हर घटना के बाद गहन जांच और दोषियों को सख्त सजा देने की बड़ी-बड़ी बातें होती हैं, पर होता कुछ नहीं है। इस बार भी कुछ न हो तो हैरानी नहीं, क्योंकि हमारे औसत शासक-प्रशासक गंभीर हादसों से भी सबक न लेने के आदी हो गए हैं। स्थानीय निकायों के वे अधिकारी-कर्मचारी कभी कठोर दंड का पात्र नहीं बनते, जो अवैध निर्माण और सुरक्षा उपायों की अनदेखी के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार होते हैं। संबंधित मंत्री की भी कोई जवाबदेही नहीं तय होती। बहुत होता है तो एक-दो अधिकारियों-कर्मियों का निलंबन हो जाता है। इसके बाद सब शांत हो जाता है और जांच रपटें धूल फांकती रहती हैं एवं हादसों को निमंत्रण देने वाला निर्माण होता रहता है। नगर निकायों के बेलगाम भ्रष्टाचार के कारण होने वाले अवैध निर्माण के चलते ही देश भर में रिहायशी इलाके व्यावसायिक गतिविधियों के केंद्र बनते जा रहे हैं। सरकारें बदल जाती हैं, नगर निकायों के अधिकारी भी बदल जाते हैं, लेकिन यदि कुछ नहीं बदलता तो अवैध निर्माण और सुरक्षा उपायों की अनदेखी का सिलसिला। यह जानलेवा और शर्मनाक सिलसिला लोगों की जानें ही नहीं ले रहा है, देश की बदनामी कराने के साथ विकसित भारत की अपेक्षाओं पर पानी भी फेर रहा है। बार-बार पहले जैसे कारणों से हादसे होना अंधेरगर्दी, नाकारापन और नियामकीय बेशर्मी के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

निगरानी का अभाव

अपने सेवा भाव के कारण डाक्टरी पेशा सदा समादृत रहा है। कोरोना जैसी महामारी में इस सेवा भाव को दुनिया देख चुकी है। लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं, जो इस पेशे को अपने आचरण से कलुषित करते हैं। ताजा मामला किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) का है, जहां कमीशन के लिए पांच हजार रुपये का लेंस बाहर से 18 हजार रुपये में मंगवाकर रोगियों को लगाया गया। संस्थान के एक सीनियर प्रोफेसर को पूरे प्रकरण में जांच समिति ने दोषी पाया है। अभी कुछ दिन पूर्व राजर्षि दशरथ मेडिकल कालेज, अयोध्या में भी कमीशन के चक्कर में 40 लाख रुपये की बिना जरूरत की खरीद का मामला सामने आया। इस मामले में यह पाया गया था कि महज 50 रुपये की सुई सात सौ रुपये में खरीदी गई। मृत मरीजों के नाम पर दवाइयों की खरीद और केजीएमयू के ही यूरोलाजी विभाग में कैंसर की दवाओं की खरीद में धांधली जैसा प्रकरण स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभागों के निगरानी तंत्र की कार्यशैली पर बड़ा सवाल है। स्वास्थ्य मंत्री और विभाग को चाहिए कि राज्य के अन्य चिकित्सा संस्थानों में भी ऐसी खरीद की तत्काल जांच कर दोषी को दंडित करे। डाक्टर अपने ज्ञान, सेवा-भाव और अनुभव कौशल से लोगों का जीवन बचाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे समाज में रोजाना सामने आते हैं। समाज में इस पेशे का सम्मान कुछ लोभी डाक्टरों के अपकृत्य से कलंकित होने से बचाया जाना चाहिए।

पांच हजार रुपये का लेंस 18 हजार में मरीजों से खरीदवाना स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा विभागों के निगरानी तंत्र की विफलता है

समुद्री रणनीति का प्रमुख केंद्र ग्रेट निकोबार

डीके जोशी

ग्रेट निकोबार परियोजना आर्थिक विकास के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा एवं वैश्विक प्रभाव के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है

अवधेश राजपूत

सदियों पहले कौटिल्य ने कहा था कि 'जो राज्य अपनी सीमाओं, साझेदारियों और व्यापार मार्गों की सुरक्षा नहीं करता, वह अपने भविष्य को भी सुरक्षित नहीं रख सकता।' कौटिल्य की यह सीख आज कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है। आज देशों की परीक्षा केवल उनकी अर्थव्यवस्था के आकार या सैन्य ताकत से नहीं हो रही, बल्कि इससे हो रही है कि वे भूगोल को कितनी अच्छी तरह समझते हैं, भविष्य का कितना सही अनुमान लगाते हैं और अवसर के खतरे में बदलने से पहले कितनी तेजी से निर्णय लेते हैं। ग्रेट निकोबार परियोजना भारत के लिए ऐसी ही एक बड़ी परीक्षा है। इस क्षेत्र को दशकों से उसके हाल पर छोड़कर उपेक्षित बना दिया गया था। स्वतंत्रता के पश्चात भी लंबे समय तक भारत का सामरिक सोच मुख्य रूप से स्थल-आधारित रहा। जबकि इस दौरान दुनिया बहुत बदल भी गई है।

ग्रेट निकोबार भारत की अग्रिम समुद्री चौकी है। इसके प्रस्तावित विकास को केवल एक अवसंरचना परियोजना के रूप में नहीं देखा जा सकता। यह मात्र एक बंदरगाह, हवाई अड्डा, टाउनशिप या बिजली संयंत्र बनाने का प्रश्न नहीं है। वास्तव में यह भारत के लिए एक परीक्षा है कि क्या भारत इस विलक्षण भौगोलिक बढ़त को सामरिक शक्ति में रूपांतरित करने के लिए तैयार है या नहीं। ग्रेट निकोबार अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह के सबसे बड़े द्वीपों में से एक है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 910 वर्ग किलोमीटर है। प्रस्तावित परियोजना का कुल क्षेत्रफल 166.10 वर्ग किमी है, जो समूचे द्वीप समूह के कुल क्षेत्रफल का केवल लगभग दो प्रतिशत है। इसमें से 130.75 वर्ग किमी वन भूमि को परियोजना के लिए उपयोग में लाने का प्रस्ताव है, जो द्वीप समूह के कुल वन क्षेत्र का लगभग 1.82 प्रतिशत है। यह हिस्सा दक्षिण-पूर्व एशिया के निकट स्थित है तथा मलक्का स्ट्रेट, 60 चैनल, सुंडा स्ट्रेट और लोंबोक स्ट्रेट जैसे प्रमुख वैश्विक समुद्री मार्गों के समीप आता है। सामरिक दृष्टि से देखें तो इस क्षेत्र को भारत की पूर्वी समुद्री चौकी की संज्ञा दी जा सकती है। इसका महत्व तब और स्पष्ट हो जाता है जब इसे केवल भूभाग के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि महासागरीय रणनीति के व्यापक परिप्रेक्ष्य से देखा जाए। जिस तरह से हिंद महासागर क्षेत्र अब एक बड़ी वैश्विक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन चुका है, उसे देखते हुए भविष्य की रणनीति के लिहाज से इस क्षेत्र की महत्ता और बढ़ गई है।

हाल की एक महत्वपूर्ण प्रगति यह है कि अंडमान सागर को थाईलैंड की खाड़ी से जोड़ने वाली दशकों पुरानी कैनल परियोजना को स्थगित कर दिया गया है। इसके स्थान पर अब लगभग 90 किमी लंबे मल्टी-मोडल लैंड ब्रिज की योजना अंतिम स्वीकृति की प्रतीक्षा में है। यह परियोजना टेंथ पैरेलल के साथ दो गहरे समुद्री बंदरगाहों को जोड़ेगी। एक अंडमान सागर के किनारे रणोंग में और दूसरा थाईलैंड की खाड़ी के किनारे चुंफोन में। इसके अलावा हाई स्पीड रेल, मल्टी लेन सड़क, तेल एवं गैस के लिए ऊर्जा पाइपलाइनें तथा वायु एवं डिजिटल ग्रिड भी प्रस्तावित हैं। ये सभी कारक हिंद-प्रशांत व्यापार मार्गों को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं और आर्थिक शक्ति का केंद्र सीधे अंडमान बेसिन की ओर स्थानांतरित कर रहे हैं। मलक्का स्ट्रेट की बात करें तो यह विश्व के सबसे महत्वपूर्ण सामुद्रिक चोक पाइंट्स में से एक है। यह हिंद महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है और अत्यंत मूल्यवान ऊर्जा संसाधनों की आवाजाही तथा वैश्विक व्यापार का प्रमुख मार्ग है। ग्रेट निकोबार की गलाथिया खाड़ी 60 चैनल से लगभग 45 किमी दूर है, जो मलक्का स्ट्रेट को अफ्रीका, पश्चिम एशिया और यूरोप की ओर जाने वाले समुद्री मार्गों से जोड़ती है। अनुमान है कि हर साल लगभग एक लाख जहाज मलक्का स्ट्रेट 60 चैनल मार्ग से गुजरते हैं। मलक्का, सुंडा और लोंबोक जैसे सामरिक चोक पाइंट्स के निकट होने के कारण यह द्वीप भारत को अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक बढ़त प्रदान करता है। कोई भी गंभीर सामुद्रिक शक्ति ऐसे भौगोलिक तथ्यों की उपेक्षा करने का जोखिम नहीं उठा सकती।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल यानी एनजीटी ने समुचित जांच-पड़ताल और आपत्तियों के निस्तारण के बाद यह स्वीकार किया कि यह परियोजना केवल द्वीप और उसके आसपास के सामरिक क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक प्रभाव के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामुद्रिक शक्ति केवल भूगोल से नहीं बनती, वह भौगोलिक परिस्थितियों का उपयोग करने की आवश्यक क्षमता विकसित करने से निर्मित होती है। ग्रेट निकोबार भारत को यह सब एक संतुलित एवं विशिष्ट भारतीय दृष्टिकोण के साथ साकार करने का अवसर प्रदान करता है। यह व्यापार को बढ़ावा दे सकता है और राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ कर सकता है। विदेशी ट्रांसशिपमेंट केंद्रों पर निर्भरता कम कर सकता है। साथ ही भारत की सामुद्रिक पहुंच को विस्तारित कर सकता है तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए एक प्रवेश द्वार और व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए एक सामरिक मंच के रूप में कार्य कर सकता है। ग्रेट निकोबार में एक ट्रांसशिपमेंट पोर्ट भारत की उस सामग्री पर निर्भरता को कम कर सकता है, जिसे वर्तमान में विदेशी बंदरगाहों के माध्यम से ट्रांसशिप किया जाता है। इस परियोजना से आपूर्ति श्रृंखला सुदृढ़ होगी, निवेश आकर्षित होगा, रोजगार के अवसर सृजित होंगे और भारत को अपनी सामग्री की आवाजाही पर अधिक नियंत्रण एवं निश्चितता प्राप्त होगी।

निःसंदेह ग्रेट निकोबार पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है। इस स्तर की किसी भी परियोजना को पारिस्थितिकीय सावधानी, वैज्ञानिक निगरानी और हरसंभव उपायों के साथ लागू किया जाना चाहिए। विकास लापरवाह नहीं हो सकता, लेकिन पर्यावरणीय संवेदनशीलता को सामरिक चिंतन पर स्थायी वीटो का आधार भी नहीं बनाया जा सकता। इस संदर्भ में वास्तविक चुनौती राष्ट्रीय सुरक्षा को पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ आगे बढ़ने की दिशा में संतुलन साधने की है।

(लेखक अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह के उपराज्यपाल और द्वीप विकास एजेंसी के उपाध्यक्ष तथा पूर्व नौसेना प्रमुख हैं)
response@jagran.com

फिर से ज्ञान का केंद्र बने भोजशाला

धार की परमारवंशकालीन भोजशाला पर आए इंदौर हाई कोर्ट के निर्णय ने गौरवशाली मालवा संस्कृति के ख्यातिप्राप्त राजा भोज की सांस्कृतिक विरासत और उपलब्धियों को याद दिलाने का भी काम किया है। धारा नगरी में विद्वता का सम्मान, कला का उत्कर्ष और संस्कृति का वैभव था। राजा भोज ने जब धारा नगरी को अपनी राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित किया तो उसे केवल शासन का केंद्र नहीं, बल्कि ज्ञान-परंपरा, संस्कृति, पारस्परिक सौहार्द का भव्य नगर बना दिया। यहां निर्मित भव्य महल, देवालय और शिक्षा केंद्र भारत की समृद्ध सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। इनमें मां सरस्वती का मंदिर सर्वप्रमुख है। सरस्वती मंदिर के निकट एक विजय-स्तंभ स्थापित कराया गया था। भोपाल के दक्षिण-पूर्व में राजा भोज ने 250 वर्ग मील लंबी भोज सरोवर नामक झील का निर्माण करवाया। चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर बनवाया, मेवाड़ के नागोद क्षेत्र में भूदान किया। 1034 में सरस्वती मंदिर परिसर में उन्होंने एक संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना कराई, जिसे आज भोजशाला के नाम से जाना जाता है। यह संस्थान नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय की समृद्ध परंपरा के समकक्ष था और लगभग 271 वर्षों तक यह संस्थान विश्वस्तरीय शिक्षा केंद्र के रूप में बहुत प्रतिष्ठित बना रहा।

यह उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश सरकार ने भोजशाला परिसर को 'सरस्वती लोक' और एक भव्य शोध संस्थान के रूप में विकसित करने का फैसला किया है। इस परियोजना के तहत भोजशाला परिसर में 'राजा भोज शोध संस्थान' स्थापित किया जाएगा, जो राजा भोज की ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने का कार्य करेगा। उचित यह होगा कि भोजशाला में अंतरराष्ट्रीय महत्व का ऐसा शैक्षिक संस्थान बने, जो प्राच्य विद्या के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे। ऐसा इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि सम्राट भोज केवल प्रतापी राजा नहीं, बल्कि विद्या, कला, साहित्य और स्थापत्य के महान संरक्षक थे। उनकी राजसभा में विभिन्न कलाओं में निष्णात पांच सौ विद्वानों को आश्रय प्राप्त था। राजा भोज ने धर्म, संस्कृति, खगोल विद्या, वास्तुकला, ज्योतिष, व्याकरण, कोश रचना, काव्य और आयुर्वेद-औषधि जैसे विभिन्न विषयों पर 84 ग्रंथों की रचना की।

डा. विनोद यादव

भोजशाला में प्राचीन नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय सरीखी समृद्ध परंपरा विकसित की जानी चाहिए

आवश्यक है अतीत के गौरव की वापसी। फाइल

इतिहास के पन्नों को पलटने पर ज्ञात होता है कि राजा भोज वीरता और विद्वता के अद्भुत संगम थे। वे रणभूमि में पराक्रमी सम्राट ही नहीं थे, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपरा, संस्कृति और विद्वता के महान संरक्षक थे। संस्कृत के प्रतिष्ठित विद्वान और प्रमुख इतिहासकार बल्लाल ने अपने ग्रंथ 'भोज-प्रबंध' तथा जैन आचार्य-कवि धनपाल ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'तिलकमंजरी' में उन्हें 'कविराज' की उपाधि से विभूषित किया। पुरातत्वविदों को भोज शासनकाल की ऐतिहासिक जानकारी देने वाले आठ अभिलेख (1011 से 1046 ई.तक के) प्राप्त हुए हैं। इनमें प्रमुख है उदयपुर-प्रशस्ति अभिलेख। इसमें उनके सफल सैन्य-अभियानों एवं तुर्कों और हूणों के विरुद्ध विजय प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है। उदयपुर प्रशस्ति के साथ-साथ मेरुतुंग कृत 'प्रबंधचिंतामणि' से पता चलता है कि राजा भोज ने अपने समकालीन अनेक शक्तिशाली राज्यों को पराजित कर उदयाचल से अस्ताचल तक शासन किया। इस ग्रंथ में राजा भोज की विद्वता, दानशीलता और उनके द्वारा धारा नगरी में बनवाए गए 104 मंदिरों का उल्लेख मिलता है। वसंत पंचमी के दिन यहां मां वाग्देवी की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा हुई। वर्तमान में वाग्देवी की प्रतिमा लंदन के एक म्यूजियम में रखी हुई है। आशा है कि हाई कोर्ट के फैसले के बाद इस प्रतिमा को लंदन से वापस लाने के प्रयास किए जाएंगे और वे सफल भी होंगे।

इतिहासकारों और विद्वानों ने राजा भोज को केवल प्रजावत्सल सम्राट ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठतम साहित्यकार, कवि-सम्राट और विद्यानुरागी नरेश के रूप में वर्णित किया था। 1055 में जब राजा का देहांत हुआ तो समकालीन विद्वानों ने लिखा, 'आज राजा भोज के स्वर्ग सिधार जाने से धारा नगरी निराधार हो गई है, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती निराश्रित हो गई हैं और समस्त विद्वतजन आहत हो गए हैं।' राजा भोज के निधन के साथ केवल एक शासक का अवसान नहीं हुआ था, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और विद्वता के उस युग का भी क्षय हुआ, जिसने धारा नगरी को भारतीय सभ्यता का आलोक-स्तंभ बना दिया था।

धारा नगरी का इतिहास बताता है कि किसी राष्ट्र की वास्तविक समृद्धि केवल भवनों, सेनाओं या अर्थव्यवस्था से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से तय होती है कि वहां ज्ञान-परंपरा कितनी सम्मानित है, संस्कृति को कितना संरक्षण प्राप्त है और विद्वानों को कितना आदर दिया जाता है। जिस समाज में शिक्षा, संस्कार, विचार और नवाचार को सम्मान मिलता है, वही समाज स्थायी रूप से उन्नत और सभ्य बनता है। राजा भोज का युग हमें यह प्रेरणा देता है कि सत्ता का सर्वोच्च स्वरूप वही है, जो शस्त्र के साथ-साथ शास्त्र का भी संरक्षक बने। आवश्यक हो जाता है कि धार की भोजशाला के सांस्कृतिक गौरव को बहाल किया जाए।

(लेखक इतिहासकार हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

व्यक्तित्व का आधार है विचार

मनुष्य का जीवन परिस्थितियों से कम और उसके विचारों से अधिक निर्मित होता है। विचार केवल मानसिक तरंगें नहीं, अपितु चेतना की ऊर्जा, व्यक्तित्व की दिशा और नियति का आधार भी हैं। जिस प्रकार बीज में विशाल वृक्ष बनने की संभावना छिपी होती है, उसी प्रकार विचारों में जीवन को ऊंचाइयों तक ले जाने अथवा पतन की ओर धकेलने की शक्ति निहित होती है। विचार ही मन और आत्मा के बीच सेतु का कार्य करते हैं तथा हमारे भाव, व्यवहार एवं चरित्र को आकार देते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो मनुष्य मूलतः प्रकाश, पवित्रता और दिव्यता का स्रोत है, किंतु जब उसके विचार नकारात्मकता, भय, क्रोध, ईर्ष्या और स्वार्थ से भर जाते हैं, तब उसकी अंतर्निहित ऊर्जा क्षीण होने लगती है। जबकि प्रेम, करुणा, मैत्री, कृतज्ञता और आत्मविश्वास जैसे सकारात्मक विचार नई चेतना का संचार करते हैं। यही विचार मनुष्य की जीवनी-शक्ति को जागृत कर उसे संघर्षों के बीच भी प्रसन्न और संतुलित बनाए रखते हैं। यही कारण है कि हमारे मनीषियों ने सदैव विचार-शुद्धि को आत्म-विकास का प्रथम सोपान माना है। शुभ संकल्प विचारों को दिशा देने का प्रभावी माध्यम है। जब व्यक्ति यह संकल्प करता है कि वह अपने भीतर प्रेम, सहिष्णुता, क्षमा और सद्भाव को विकसित करेगा, तब उसके जीवन में परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है।

हम अपने विचार-जगत को आध्यात्मिक मूल्यों से संपन्न करें। ध्यान, स्वाध्याय, सत्संग और आत्मचिंतन के माध्यम से विचारों को परिष्कृत बनाएं। ऐसा इसलिए, क्योंकि विचार ही ऊर्जा हैं, विचार ही व्यक्तित्व हैं और विचार ही जीवन की सबसे बड़ी संपदा हैं। जिस दिन मनुष्य अपने विचारों को उज्ज्वल बना लेता है, उसी दिन उसके भीतर सन्निहित दिव्यता का सूर्य उदित हो जाता है।

ललित गर्ग

सुलझने के करीब हाकिंग की पहेली

प्रदीप

ब्लैक होल हाकिंग विकिरण से पूर्णतया नष्ट नहीं होते, वे सूक्ष्म और स्थिर अवशेषों में बदल जाते हैं

सैद्धांतिक भौतिकी की बहुचर्चित पहेलियों में से स्टीफन हाकिंग का 'ब्लैक होल सूचना विरोधाभास' (इंफोर्मेशन पैराडाक्स) फिर वैज्ञानिक बहस के केंद्र में है। हाल ही में 'जनरल रिलेटिविटी एंड ग्रेविटेशन' जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में यह दावा किया गया है कि ब्लैक होल वाष्प बनकर पूरी तरह खत्म नहीं होते, बल्कि अपने पीछे एक स्थिर क्वांटम अवशेष छोड़ जाते हैं, जिसमें उनके भीतर समाई सूचनाएं सुरक्षित रह सकती हैं। यह दावा उन कोशिशों की नवीनतम कड़ी है जो पिछले कई दशकों से हाकिंग की पहेली को सुलझाने के लिए किए जा रहे हैं।

ब्लैक होल के बारे में हमारी वर्तमान समझ काफी हद तक स्टीफन हाकिंग के शोधकार्यों पर आधारित है। हाकिंग ने 1974 में आइंस्टाइन के सामान्य आपेक्षिकता सिद्धांत और क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों के आधार पर यह दिखाया कि ब्लैक होल पूरे काले नहीं होते, बल्कि वे थोड़ी मात्रा में विकिरणों को उत्सर्जित करते हैं। हाकिंग की यह अवधारणा अपने पीछे एक जटिल पहेली छोड़ गई। अगर ब्लैक होल विकिरणों को उत्सर्जित करते हैं, तो वे आखिरकार वाष्प बनकर नष्ट हो जाएंगे। तो इस स्थिति में उस सारी सूचना का क्या होगा, जो इवेंट होराइजन से होकर ब्लैक होल में गिरी थीं? क्या वह सूचना भी नष्ट हो जाएगी? यदि ऐसा है, तो क्वांटम यांत्रिकी और उष्मागतिकी के सिद्धांतों का उल्लंघन होगा जिनके मुताबिक ऊर्जा नष्ट नहीं हो सकती।

ब्लैक होल विकिरण उत्सर्जन की खोज के साथ ही हाकिंग ने भौतिकी के दो आधार स्तंभों को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर 'ब्लैक होल सूचना विरोधाभास' की गुत्थी को जन्म दिया। इस विरोधाभास को सुलझाने के लिए 2022 में प्रकाशित दो शोधपत्रों ने महत्वपूर्ण दावा किया था। उस समय भौतिक विज्ञानियों ने कहा था कि अब तक हम जितना समझते थे, ब्लैक होल उससे कहीं अधिक जटिल और रहस्यमय पिंड हैं। विज्ञानियों ने पाया कि जब क्वांटम गुरुत्वाकर्षण सुधारों को ध्यान में रखा जाता है तो ब्लैक होल में गिरने वाला पदार्थ उसके गुरुत्वाकर्षण क्षेत्र में एक छाप छोड़ जाता है।

नया अध्ययन इस बहस को नई दिशा देता है। शोधकर्ताओं के मुताबिक ब्लैक होल हाकिंग विकिरण के कारण पूरी तरह नष्ट नहीं होते, बल्कि अत्यंत सूक्ष्म और स्थिर अवशेषों में बदल जाते हैं। उनका दावा है कि ये अवशेष विशाल मात्रा में क्वांटम सूचना संग्रहित कर सकते हैं। अगर यह बात सही साबित होती है, तो ब्लैक होल में समाई सूचना वास्तव में कभी नष्ट नहीं होगी, बल्कि इन अवशेषों में संरक्षित रहेगी। हालांकि अभी इन विचारों की प्रायोगिक पुष्टि होना बाकी है, लेकिन इतना स्पष्ट है कि हाकिंग द्वारा उठाया गया प्रश्न अब समाधान के पहले से कहीं ज्यादा करीब दिखाई दे रहा है।

(लेखक विज्ञान संचारक हैं)

तकनीकी आत्मनिर्भरता आवश्यक

'गति पकड़ता सेमीकंडक्टर अभियान' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में हर्ष वी. पंत ने इलेक्ट्रानिक्स क्षेत्र में भारत की बढ़ती पैठ के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया है। सेमीकंडक्टर आधुनिक तकनीक और डिजिटल अर्थव्यवस्था की आधारशिला हैं। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, आटोमोबाइल, रक्षा उपकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा संचार प्रणालियों में इनका व्यापक उपयोग होता है। लंबे समय तक भारत सेमीकंडक्टर क्षेत्र में केवल उपभोक्ता और डिजाइन केंद्र के रूप में जाना जाता था, किंतु अब वह इस क्षेत्र में विनिर्माण शक्ति बनने की दिशा में भी बढ़ रहा है। इसी क्रम में भारत सरकार ने सेमीकंडक्टर मिशन, उत्पादन प्रोत्साहन योजनाओं तथा बड़े निवेशों के माध्यम से घरेलू चिप निर्माण को बढ़ावा दिया है। गुजरात, उत्तर प्रदेश और असम सहित देश के कई अन्य राज्यों में स्थापित हो रही सेमीकंडक्टर इकाइयां इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इससे देश के अलग-अलग हिस्सों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, विदेशी निर्भरता कम होगी और तकनीकी आत्मनिर्भरता को बल मिलेगा। इस क्षेत्र में सफलता के लिए पूंजी निवेश, कुशल मानव संसाधन, विश्वसनीय बिजली आपूर्ति तथा मजबूत आपूर्ति श्रृंखला जैसी चुनौतियों का समय रहते समाधान आवश्यक है। यदि भारत इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करता है, तो वह वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकता है। सेमीकंडक्टर अभियान भारत की तकनीकी एवं रणनीतिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बहुत ही निर्णायक पहल है।

himanshushekhar.mca@gmail.com

मेलबाक्स

महंगे रिचार्ज से बढ़ती परेशानी

आज मोबाइल फोन केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि हर व्यक्ति की आवश्यकता बन चुका है। बैंकिंग, शिक्षा, नौकरी, सरकारी योजनाएं और आपसी संपर्क लगभग हर काम मोबाइल और इंटरनेट पर निर्भर हो गया है। ऐसे में दूरसंचार कंपनियों द्वारा लगातार बढ़ाई जा रही रिचार्ज दरें आम लोगों, विशेषकर गरीब और मध्य वर्ग के लिए चिंता का विषय बनती जा रही हैं। कुछ वर्ष पहले तक मोबाइल उपभोक्ताओं को केवल उतना ही रिचार्ज कराना पड़ता था जितनी उन्हें आवश्यकता होती थी। यदि किसी के मोबाइल में बैलेंस मौजूद है, तो वह लंबे समय तक काल कर सकता था। उस समय वैधता समाप्त होने का इतना दबाव नहीं था और कम आय वाले परिवार भी कम खर्च में महीनों अपना काम चला लेते थे। लेकिन इंटरनेट के विस्तार के साथ धीरे-धीरे ऐसे प्लान समाप्त कर दिए गए और उनकी जगह 28 दिन, 56 दिन तथा 84 दिन वाले अनिवार्य रिचार्ज प्लान आ गए। आज स्थिति यह है कि यदि कोई व्यक्ति रिचार्ज नहीं कराता, तो उसके फोन पर आने वाली काल भी बंद हो जाती हैं। यह नियम उन लोगों के लिए सबसे बड़ी परेशानी बन गया है जो केवल बातचीत के लिए मोबाइल का उपयोग करते हैं। गांवों और गरीब परिवारों में आज भी हजारों लोग ऐसे हैं जिनके पास साधारण कीपैड फोन हैं और जिन्हें इंटरनेट की विशेष आवश्यकता नहीं होती। फिर भी उन्हें महंगे रिचार्ज कराने के लिए मजबूर किया जाता है। जो रिचार्ज कभी कुछ दर्जन रुपये में हो जाया करते थे, आज उनकी कीमतें कई गुना बढ़ चुकी हैं और सामान्य मासिक रिचार्ज 300 रुपये के आसपास पहुंच गया है। यह भी विचार करने योग्य बात है कि लोगों को धीरे-धीरे इंटरनेट पर इतना निर्भर बना दिया गया है कि अब मोबाइल रिचार्ज कराना उनकी मजबूरी बन गया है। पढ़ाई, आनलाइन भुगतान, सरकारी सेवाएं और दैनिक जीवन के अनेक कार्य इंटरनेट के बिना संभव नहीं रह गए हैं। ऐसे में कंपनियों द्वारा लगातार बढ़ाई जा रही कीमतों का सीधा असर आम जनता की जेब पर पड़ रहा है। ऐसे में सरकार और दूरसंचार नियामक संस्थाओं को इस विषय पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। साधारण कालिंग और कम आय वर्ग के लोगों के लिए किफायती प्लान उपलब्ध कराने चाहिए, ताकि संचार जैसी मूलभूत आवश्यकता केवल आर्थिक रूप से सक्षम लोगों तक सीमित न रह जाए।

आदर्श गौतम, कल्याणपुर, कानपुर

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :

दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : response@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एजीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

17.7 लाख छात्र शामिल हुए थे इस वर्ष सीबीएसई द्वारा आयोजित 12वीं कक्षा की परीक्षा में। परिणाम आने के बाद चार लाख से अधिक छात्रों ने उत्तर पुस्तिका का दोबारा से मूल्यांकन करने के लिए आवेदन किया है।

आजकल

डिजिटल मूल्यांकन की कसौटी पर सीबीएसई

देश की सबसे बड़ी स्कूली परीक्षा संस्था सीबीएसई एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। केंद्र सरकार ने बोर्ड के अध्यक्ष और सचिव का तबादला कर दिया है। यह निर्णय ऐसे समय आया है जब आन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली, मूल्यांकन की विश्वसनीयता और प्रशासनिक निर्णय प्रक्रिया को लेकर गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं। लाखों विद्यार्थियों द्वारा उत्तर पुस्तिकाओं की प्रतियां मांगना, स्कैन कापियों की गुणवत्ता पर आपत्तियां तथा मूल्यांकन संबंधी शिकायतें इस बहस को और व्यापक बना चुकी हैं। यह केवल एक तकनीकी विवाद नहीं, बल्कि परीक्षा प्रशासन की संस्थागत क्षमता की भी परीक्षा है

कैलाश बिश्नोई
शिक्षा मामलों के जानकार

डिजिटल व्यवस्था से सीबीएसई की 12वीं परीक्षा की कापी के मूल्यांकन पर उठे हैं गंभीर सवाल। प्रतीकात्मक

वर्ष 2026 में सीबीएसई ने बारहवीं कक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन हेतु आन-स्क्रीन मार्किंग (ओएसएम) प्रणाली को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया। इस व्यवस्था के अंतर्गत उत्तर पुस्तिकाओं को स्कैन कर डिजिटल प्रारूप में परिवर्तित किया गया तथा मूल्यांकन प्रक्रिया को स्क्रीन आधारित बनाया गया। उद्देश्य था- मूल्यांकन की दक्षता बढ़ाना, मानवीय त्रुटियों को कम करना, परिणाम प्रक्रिया को तीव्र बनाना तथा परीक्षा प्रशासन को डिजिटल रूपांतरण की दिशा में आगे ले जाना। किंतु परिणाम घोषित होने के बाद बड़ी संख्या में छात्रों और अभिभावकों ने धुंधली स्कैन प्रतियों, उत्तर पुस्तिकाओं के मिलान संबंधी त्रुटियों, मूल्यांकन की शुद्धता तथा तकनीकी अवरोधों को लेकर गंभीर प्रश्न उठाए।

यह विवाद वस्तुतः तकनीक और शिक्षा प्रशासन के अंतर्संबंध को समझने का अवसर भी प्रदान करता है। शिक्षा में डिजिटलीकरण समय की आवश्यकता है, किंतु शैक्षणिक नवाचारों की सफलता केवल साफ्टवेयर या प्लेटफार्म से निर्धारित नहीं होती। उसके लिए चरणबद्ध परीक्षण, हितधारकों की सहभागिता, क्षमता निर्माण तथा प्रक्रियागत परिपक्वता अनिवार्य होती है। यदि अधिगम उपलब्धियों के आकलन से जुड़ी किसी व्यवस्था में विद्यार्थियों को अपने मूल्यांकन पर ही संदेह होने लगे, तो प्रश्न केवल तकनीकी खामी का नहीं रह जाता, बल्कि शैक्षिक शासन, नीति क्रियान्वयन और सार्वजनिक विश्वास का बन जाता है। यही कारण है कि आन-स्क्रीन मार्किंग का यह प्रकरण शिक्षा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन की संभावनाओं के साथ-साथ उसकी सीमाओं और चुनौतियों पर गंभीर पुनर्विचार की मांग करता है।

विडंबना यह है कि नई शिक्षा नीति लगातार क्षमता निर्माण, साक्ष्य आधारित निर्णय और संस्थागत तैयारी पर बल देती है, लेकिन आन-स्क्रीन मार्किंग के अनुभव ने इन आदर्शों और व्यावहारिक क्रियान्वयन के बीच मौजूद दूरी को उजागर कर दिया। तकनीक अपने आप में न तो समाधान है और न समस्या। उसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे कितनी दूरदर्शिता, कितनी तैयारी और कितनी संवेदनशीलता के साथ लागू किया गया। यदि लाखों विद्यार्थियों के शैक्षिक भविष्य से जुड़ी प्रक्रिया में पारदर्शिता के बजाय आशंकाएं और संतोष की बजाय संदेह उत्पन्न होने लगें, तो आत्ममंथन केवल विकल्प नहीं बल्कि संस्थागत दायित्व बन जाता है।

इस पूरे विमर्श का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम शिक्षक समुदाय से जुड़ा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से लेकर विभिन्न शैक्षणिक आयोगों की अनुशंसाओं तक शिक्षक को अधिगम प्रक्रिया का केंद्र बिंदु माना गया है। दुर्भाग्य से व्यावहारिक स्तर पर अनेक बार उसे केवल क्रियान्वयन तंत्र का एक घटक समझ लिया जाता है। आन-स्क्रीन मूल्यांकन इसका उदाहरण है। उत्तर पुस्तिकाओं का डिजिटल परीक्षण सुनने में भले सरल लगे, लेकिन मूल्यांकन शास्त्र की वास्तविकता कहीं अधिक जटिल है। यदि शिक्षक को पर्याप्त प्रशिक्षण, तकनीकी सहयोग और कार्यानुकूल वातावरण उपलब्ध न कराया जाए तो मूल्यांकन की विश्वसनीयता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। शिक्षा में गुणवत्ता केवल नीतिगत घोषणाओं से नहीं आती। वह क्षमता निर्माण, संसाधन समर्थन और व्यावसायिक विकास की सतत प्रक्रिया से विकसित होती है।

इस विवाद का सबसे संवेदनशील और व्यापक पक्ष विद्यार्थी हैं। बारहवीं कक्षा का परिणाम केवल एक अंकपत्र नहीं होता, बल्कि उच्च शिक्षा, व्यावसायिक अवसरों, छात्रवृत्तियों और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की दिशा निर्धारित करने वाला दस्तावेज होता है। ऐसे में यदि मूल्यांकन प्रक्रिया को लेकर संदेह उत्पन्न हो जाए तो समस्या प्रशासनिक दायरे से निकलकर विश्वास के संकट में बदल जाती है। किसी भी परीक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी पूंजी उसकी विश्वसनीयता होती है। विद्यार्थी कठिन प्रश्नपत्र स्वीकार कर सकता है, अपेक्षा से कम परिणाम भी स्वीकार कर सकता है, किंतु वह मूल्यांकन प्रक्रिया पर उठे प्रश्नों को स्वीकार नहीं कर सकता।

हालांकि इस पूरे प्रकरण को केवल विफलता के आख्यान के रूप में देखना उचित नहीं होगा। डिजिटल मूल्यांकन की अवधारणा में अनेक संभावनाएं निहित हैं। इससे उत्तर पुस्तिकाओं की सुरक्षा बेहतर हो सकती है, मूल्यांकन प्रक्रिया की निगरानी सुदृढ़ हो सकती है, डाटा आधारित विश्लेषण संभव हो सकता है और भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित शैक्षणिक मूल्यांकन के लिए आधार तैयार हो सकता है। इसलिए समाधान तकनीक से पीछे हटने में नहीं, बल्कि उसके अधिक परिपक्व और उत्तरदायी उपयोग में निहित है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यापक पायलट परियोजनाओं के माध्यम से प्रणाली का परीक्षण किया जाए, शिक्षकों के लिए दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जाएं, साफ्टवेयर डिजाइन में विषय विशेषज्ञों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए तथा स्वतंत्र शैक्षणिक आडिट की व्यवस्था स्थापित की जाए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि विद्यार्थियों के हित को संस्थागत प्रतिष्ठा से ऊपर रखा जाए। शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य केवल परीक्षाओं का संचालन नहीं, बल्कि सामाजिक विश्वास का निर्माण है।

आज सीबीएसई के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती किसी तकनीकी प्लेटफार्म की नहीं, बल्कि उसी विश्वास को पुनर्स्थापित करने की है जिस पर करोड़ों विद्यार्थियों और अभिभावकों की आकांक्षाएं टिकी हुई हैं। तकनीक को सुधारा जा सकता है, प्रक्रियाओं को पुनर्गठित किया जा सकता है, लेकिन विश्वास की पुनर्स्थापना के लिए संवेदनशील नेतृत्व, पारदर्शी संवाद और उत्तरदायी प्रशासन की आवश्यकता होती है। शिक्षा में आधुनिकता का स्वागत होना चाहिए, किंतु परिपक्वता और तैयारी के साथ। अन्यथा डिजिटल व्यवस्था की छोटी सी त्रुटि भी अधिगम न्याय और मूल्यांकन विश्वसनीयता पर गहरा प्रश्नचिह्न छोड़ सकती है।

परीक्षा व्यवस्था में सुधारों का नया दौर

पिछले एक दशक में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने केवल परीक्षाओं की प्रक्रिया नहीं बदली है, बल्कि शिक्षा को देखने और समझने के नजरिये में भी परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप किए गए सुधारों का उद्देश्य छात्रों को रटंत शिक्षा की सीमाओं से बाहर निकालकर उन्हें समझ, कौशल और व्यावहारिक क्षमता आधारित सीखने की ओर ले जाना है। लंबे समय तक भारतीय बोर्ड परीक्षाओं की सबसे बड़ी आलोचना यह रही कि वे विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति तो मापती हैं, लेकिन उनकी सोचने, विश्लेषण करने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता का पर्याप्त आकलन नहीं कर पातीं। इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए सीबीएसई ने कंपीटेंसी आधारित प्रश्नों का दायरा बढ़ाया है।

दसवीं की बोर्ड परीक्षा में दो अवसर देने का निर्णय भी शिक्षा सुधारों के इसी नए सोच का हिस्सा है। भारतीय समाज में परीक्षा अक्सर एक ऐसे निर्णायक मोड़ के रूप में देखी जाती रही है, जहां एक दिन का प्रदर्शन पूरे भविष्य का फैसला कर देता है। सुधार परीक्षा और सर्वश्रेष्ठ स्कोर को मान्यता देने की व्यवस्था इस दबाव को कम करती है। यह छात्रों को यह विश्वास दिलाती है कि शिक्षा केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि निरंतर सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने की प्रक्रिया है। डिजिटल तकनीक के उपयोग ने भी परीक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था को नई दिशा दी है। डिजिलाकर, अपार आइडी और विभिन्न आनलाइन प्लेटफार्मों ने रिकार्ड प्रबंधन को अधिक व्यवस्थित और पारदर्शी बनाया है। डिजिटल मूल्यांकन जैसी व्यवस्थाएं भी इसी परिवर्तन का हिस्सा हैं। हालांकि हाल के अनुभवों ने यह भी स्पष्ट किया है कि तकनीकी सुधारों की सफलता केवल तकनीक पर नहीं, बल्कि तैयारी, प्रशिक्षण और प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। इसलिए सुधारों की दिशा जितनी महत्वपूर्ण है, उनकी गति और तैयारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

सीबीएसई द्वारा कौशल शिक्षा और व्यावसायिक विषयों को बढ़ावा देना भी एक दूरदर्शी कदम माना जा सकता है। बदलती अर्थव्यवस्था में केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है। रोजगार और जीवन दोनों के लिए कौशल की आवश्यकता बढ़ी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उद्यमिता, योग और अन्य स्किल आधारित विषयों को मुख्यधारा में लाकर शिक्षा को अधिक प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया गया है। सिलेबस का तर्कसंगत पुनर्गठन और पाठ्यचर्या में बदलाव भी इसी व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा हैं। शिक्षा तब अधिक प्रभावी होती है जब छात्र विषय को समझे, उससे जुड़े और उसे जीवन में लागू कर सके।

इन सभी सुधारों के केंद्र में एक महत्वपूर्ण विचार दिखाई देता है... शिक्षा को परीक्षा केंद्रित व्यवस्था से सीखने केंद्रित व्यवस्था में बदलना। यह परिवर्तन आसान नहीं है और इसके सामने अनेक चुनौतियां भी हैं। शिक्षकों के प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता और तकनीकी बुनियादी ढांचे को लगातार मजबूत करने की आवश्यकता बनी हुई है। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षा का भविष्य केवल अधिक अंक प्राप्त करने में नहीं, बल्कि बेहतर नागरिक और सक्षम मानव संसाधन तैयार करने में निहित है। सीबीएसई के हालिया सुधारों को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए। ये परिवर्तन अंतिम लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि उस लंबी यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ाव हैं जो भारतीय शिक्षा को अधिक लचीला, समावेशी, कौशल आधारित और भविष्य उन्मुख बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

(कैलाश बिश्नोई)

खरी-खरी

साइकिल केवल वाहन नहीं, दर्शन है

विनोद कुमार विक्की

कल विश्व साइकिल दिवस था। इस पावन अवसर पर साइकिल भी मन ही मन मुस्कुराया- 'देखो, आखिर मेरे भी अच्छे दिन आ ही गए!' जो कभी आंगन के कोने में धूल फांकती थी, वही आज पेट्रोल-डीजल के महंगाई-पुराण की मुख्य नायिका बन बैठी है। बिना पेट्रोल, डीजल, बिजली और बैटरी के, सिर्फ 'हवा' पर चलने वाला यह वाहन सच में आत्मनिर्भर भारत का सबसे पुराना ब्रांड एंबेसडर है।

साइकिल की सबसे बड़ी खूबी है- इसका संयमित चरित्र। इसमें स्पीड और ब्रेक का ऐसा संतुलन है कि दुर्घटना भी सोच-समझकर ही होती है। न हेलमेट का झंझट, न चालान का डर।

अब बात करें सवारी क्षमता की। तकनीकी रूप से यह एक व्यक्ति के लिए बनी है, लेकिन भारतीय जुगाड़ विज्ञान ने इसे पारिवारिक वाहन बना दिया। आगे डंडे पर एक, पीछे कैरियर पर एक और बीच में खुद चालक- तीन सवारी न्यूनतम व्यवस्था है।

सीखने की प्रक्रिया भी किसी आध्यात्मिक साधना से कम नहीं थी। पहले हाफ पैडल, फिर फुल पैडल और अंत में बिना हाथ चलाने का मोक्ष। उस समय गिरना भी उपलब्धि का हिस्सा होता था- घुटनों एवं कोहनी के छिले निशान आज भी बचपन के 'सर्टिफिकेट' की तरह मार्क्स आफ आइडेंटिफिकेशन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

समय बदला, बाइक आई, फिर कार आई और साइकिल को कोने में धकेल दिया गया। लेकिन जैसे ही पेट्रोल-डीजल के दामों ने जनता की कमर तोड़ी, साइकिल ने फिर से एंट्री मारी- वह भी पूरे स्वाभिमान के साथ। बड़े-बड़े अधिकारी, नेता और सेलिब्रिटी साइकिल चलाते हुए फोटो खिंचवाने लगे। जनता समझ गई- 'मामला गंभीर है, अब साइकिल ही सहारा है!'

आज साइकिल पर्यावरण की रक्षक, स्वास्थ्य की संरक्षक और जेब की हितैषी बनकर सामने खड़ी है। न प्रदूषण, न खर्च, न ट्रैफिक का तनाव- बस पैडल मारिए और जिंदगी आगे बढ़ाइए। कुल मिलाकर, साइकिल सिर्फ एक वाहन नहीं, बल्कि एक दर्शन है- 'कम संसाधन में भी जीवन चल सकता है।'

पोस्ट

पढ़ाई के नाम पर आनलाइन बकवास करने वाले कुछ लोगों को किसी भी दृष्टि से शिक्षक नहीं कहा जा सकता। ये लोग अपसंस्कृति को ही बढ़ावा दे रहे हैं।
डा. रमाकांत राय@RamaKRoy

तृणमूल कांग्रेस ने अपनी मुखिया के विरुद्ध ही विद्रोह कर दिया। ममता बनर्जी ने अपने राजनीतिक करियर में कभी इसकी कल्पना भी नहीं की होगी।
स्वाति चतुर्वेदी@bainjal

उपहार अग्निकांड से लेकर मालवीय नगर रेस्टोरेंट हादसे के बीच करीब 30 साल गुजर गए, लेकिन कुछ नहीं बदला। भ्रष्टाचार, लालच और अक्षमताओं के चलते हम बुरी तरह नाकाम तंत्र में तब्दील हो गए हैं।
राहुल पंडिता@rahulpandita

मालवीय नगर अग्निकांड हादसा नहीं हत्या है। इमारत में अनुमति से अधिक निर्माण और दुरुपयोग की स्थिति में यहां सवाल सिर्फ आग का नहीं, बल्कि सिस्टम की नाकामी का भी है। जिम्मेदार सिर्फ आग नहीं, वे लोग भी हैं, जिन्होंने नियमों के उल्लंघन पर आंखें मूंद लीं।
डा. मीना कुमारी
जांगिड़@DrMeenaJangid

जागरण जनमत — कल का परिणाम

अन्नामलाई के पार्टी छोड़ने से तमिलनाडु में भाजपा की राह और मुश्किल होगी?

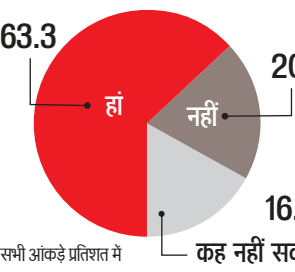

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या ममता बनर्जी पहले जैसी राजनीतिक अहमियत हासिल कर पाएंगी?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

बन बैठे बालेन जी छोटे-मोटे ट्रंप,
कहीं टांग ना तोड़ दे ज्यादा ऊंची जंप।
ज्यादा ऊंची जंप लगा धोखा खाओगे,
'जेन-जी' की उम्मीद न पूरी कर पाओगे।
हो भाई के साथ दिख रहे ऐंठे-ऐंठे,
जाने 'पट्टीदार' सरीखे क्यों बन बैठे!!
-ओम प्रकाश तिवारी

मध्य प्रदेश डायरी

दो दशक बाद सरकारी बसें चलने का रास्ता साफ

धनंजय प्रताप सिंह
डिप्टी पालिटिकल एडिटर (स्टेट), मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में सरकारी बस सेवा की वापसी का इंतजार 21 वर्ष बाद समाप्त होने जा रहा है। हालांकि यह अनुमान लगाना मुश्किल है कि सुरक्षित बस सेवा न होने से इन वर्षों में कितने निर्दोष लोग सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवा बैठे, लेकिन 'देर आए दुरुस्त आए' चरितार्थ कर मोहन सरकार ने मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा के तहत राज्यव्यापी सरकारी बस सेवा फिर से शुरू करने का महत्वपूर्ण निर्णय ले लिया है। ग्रामीण, शहरी और जनजातीय क्षेत्रों को बेहतर सड़क कनेक्टिविटी देने के लिए 5,206 सरकारी बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी।

अब सड़क यातायात पर नजर डालें। वर्ष 2005 से अब तक प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं में दो लाख से अधिक लोगों की जान गई है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) और केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि वर्तमान में सड़क दुर्घटनाओं और उनमें मौतों के मामले में मध्य प्रदेश देश में दूसरे नंबर पर है। राज्य में हर साल सड़क हादसों में मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इसी कारण राज्य में हर दिन औसतन 41 लोग जान गंवा रहे हैं। कोई संदेह नहीं कि इन मौतों के लिए सरकारी परिवहन सेवा न होना भी बड़ी वजह रही है। सार्वजनिक परिवहन के लिए बसों के न होने पर दोपहिया वाहन का उपयोग हादसों की आशंका बढ़ाता है। प्रदेश में होने वाली कुल मौतों में 75 प्रतिशत से अधिक तो दोपहिया वाहन सवारों की होती हैं। खासकर उनकी जो हेलमेट नहीं लगाते या लंबी दूरी तय करते हैं। हाई कोर्ट में दायर याचिकाओं और 108 एंबुलेंस सर्विस के आंकड़ों के अनुसार, सबसे ज्यादा जानलेवा हादसे इंदौर, भोपाल, सागर, जबलपुर और रीवा के कनेक्टिंग नेशनल और स्टेट हाईवे पर होते हैं।

अब जब सरकारी बसों को चलाने की तैयारी है तो नई व्यवस्था को भ्रष्टाचार और लापरवाही से भी बचाना बेहद जरूरी है। दरअसल, मध्य प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम बंद होने के मुख्य कारण यही थे। कांग्रेस सरकार में यह राजनीतिक नेतृत्व और ब्यूरोक्रेट्स के गठजोड़ के कारण बदहाली के दौर में पहुंच गया था। वर्ष 2003 के बाद जब भाजपा सरकार बनी, तो सड़क परिवहन निगम बंद करना पड़ा था। तत्कालीन परिवहन मंत्री उमाशंकर गुप्ता बताते हैं कि कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में परिवहन निगम में 36-36 प्रतिशत ब्याज पर ऋण लिया गया था। कर्मचारियों को दो-दो साल से वेतन नहीं बंट पा रहा था। निगम पर 700 करोड़ रुपये का कर्ज था। भाजपा सरकार बनी तो दो ही विकल्प थे, सरकार सड़क परिवहन निगम को चलाने के लिए फंड दे या बंद कर दे। यही वजह है कि बाबूलाल गौर सरकार ने इसे बंद कर दिया था।

सुगम बस परिवहन से जनता को होगी सुविधा। इनसेट में : डा. मोहन यादव। फाइल

उमाशंकर गुप्ता के अनुसार, विकल्प में अनुबंधित बस सेवा चलाने की नीति बनाई गई थी, लेकिन बाबूलाल गौर सरकार के मुख्यमंत्री पद से हटने के कारण अमल में नहीं आ पाई। अब मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के प्रयासों से सरकारी बसें जिस माडल पर शुरू की जा रही हैं, वह वही माडल है। यही कारण है कि मोहन सरकार द्वारा सरकारी बसों को दोबारा शुरू करने के निर्णय को एक जीवन रक्षक कदम के रूप में देखा जा रहा है। सुगम परिवहन सेवा के सूत्रधार और परिवहन सचिव मनीष सिंह की भूमिका भी सराहनीय है।

सरकारी बसों के आने से निजी वाहनों का दबाव कम होगा, परिवहन व्यवस्थित होगा और निश्चित रूप से मौत के आंकड़ों में कमी आएगी। पिछले 21 वर्षों से मध्य प्रदेश में राज्य सड़क परिवहन निगम का विकल्प दोबारा जीवित करने या नई सरकारी बसें चलाने का साहस किसी सरकार ने नहीं दिखाया था। यह राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से ऐसा निर्णय है जिसके क्रियान्वयन का श्रेय निश्चित रूप से मोहन सरकार को जाता है, लेकिन इसके पीछे एक लंबी नीतिगत प्रक्रिया और कानूनी पृष्ठभूमि भी रही है। केवल बसें चलाना ही नहीं, बल्कि उन्हें एआइ कैमरे, ई-बस माडल और कैशलेस एप से जोड़कर आधुनिक रूप में पेश करने का ऐसा खाका सरकार ने तैयार किया, जिसमें विफलता की कोई आशंका नहीं है।

इंदौर के बाद इसे भोपाल, उज्जैन, जबलपुर, सागर, ग्वालियर और रीवा सहित सात परिवहन क्षेत्रों में चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा। सरकार के लिए एक गंभीर चुनौती और है। पिछली सरकारों की कमजोर मानिटरिंग और लापरवाह नीतियों के कारण प्रदेश के सभी बड़े शहरों में सिटी ट्रांसपोर्ट नाम मात्र का भी नहीं है। नगर निगमों के हवाले नगर वाहन सेवा आरंभ की गई थी, लेकिन वह असफल हो गई। हर शहर ट्रैफिक जाम में घिरा रहता है। निजी मिनी बसें नगर परिवहन उपलब्ध करवा रही थीं, उसे भी बंद कर दिया गया। मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव को नगर वाहन सेवा को दुरुस्त करने के बारे में भी विचार करना चाहिए, ताकि आम आदमी शहर में निजी वाहन के बजाय बस में सफर करे।

पंजाब डायरी

भाजपा के नए प्रयोग पर टिकीं सबकी निगाहें

रमनजीत सिंह मणकू
ब्यूरो प्रमुख, पंजाब

भारतीय जनता पार्टी ने पूर्व कांग्रेसी विधायक केवल सिंह ढिल्लों को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर स्पष्ट संदेश दिया है कि वर्ष 2027 के चुनावों में पार्टी ग्रामीण, खासकर जाट सिख बहुल मालवा बेल्ट में पैठ बनाना चाहती है, लेकिन जमीनी हकीकत अभी भी कठिनाई भरी है। भारतीय जनता पार्टी को अभी और भी कुछ अप्रत्याशित फैसले लेने पड़ सकते हैं, ताकि उसकी राह आसान हो सके।

दरअसल, ढिल्लों का चयन भाजपा के लिए पहला प्रयोग है, जब किसी जट्ट सिख को प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। अब तक पार्टी की छवि शहरी हिंदू और व्यापारी वर्ग तक सीमित पार्टी की मानी जाती रही है, जबकि ग्रामीण इलाकों के वोटरों, खासकर जट्ट सिखों का जिम्मा भाजपा का गठबंधन सहयोगी शिरोमणि अकाली दल उठाता रहा। ढिल्लों की नियुक्ति से भाजपा उम्मीद लगा रही है कि अकाली दल के कमजोर होने के बाद ढिल्लों के जरिये ग्रामीण वोट बैंक तक पहुंचने का रास्ता मिल सकता है, जबकि इस कठिन डगर पर अकेले ढिल्लों वाले फैसले से काम नहीं चलने वाला है। बल्कि भारतीय जनता पार्टी के पुराने काडर की नाराजगी दूर करना, संगठन का साथ, भाजपा को लेकर प्रदेश में खासकर ग्रामीण इलाकों में किसान आंदोलन के दौरान पसरी हुई नाराजगी को दूर करने के उपाय, सिख कौम के मुद्दों मसलन बंदी सिंहों की रिहाई सरीखे कई विषय मौजूद हैं, जिन्हें हल किए बगैर भाजपा के लिए सीधे रास्ते मंजिल तक पहुंचना आसान नहीं है।

यह सर्वविदित है कि भारतीय जनता पार्टी की रणनीति में यह बदलाव बिना कीमत के नहीं आया है। संगठन महामंत्री मंथरी श्रीनिवासुलु के दखल से लिए गए इस फैसले को लेकर पंजाब भाजपा के कई वरिष्ठ नेता असहज हैं। उनका तर्क है कि पार्टी अपने कोर हिंदू वोट बैंक को नजरअंदाज करके कांग्रेस और अकाली दल से आए नेताओं पर ज्यादा निर्भर हो रही है। सुनील जाखड़ को हटाकर ढिल्लों को लाना और कार्यकारी अध्यक्ष अश्विनी शर्मा का भविष्य अधर में लटकाना, पुराने कार्यकर्ताओं के लिए यह संकेत है कि 'जमीन पर काम करने वालों' से ज्यादा 'बाहर से आए चेहरों' को तरजीह मिल रही है।

भारतीय जनता पार्टी के पुराने व टकसाली कार्यकर्ताओं में बनी यही धारणा भाजपा की वर्ष 2027 में आगामी विधानसभा चुनाव की राह को और मुश्किल करती नजर आ रही है। कार्यकर्ताओं का सवाल है- जब पार्टी बाहर से आए नेताओं को ऊपर ला रही है, तो जमीनी कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा क्या बची? अगर यह असंतोष 2027 तक बना रहा, तो प्रचार और बूथ मैनेजमेंट दोनों ही दुष्प्रभावित होंगे।

भारतीय जनता पार्टी यदि अपने इस ताजा कदम से ढिल्लों के नेतृत्व में मालवा में ग्रामीण जट्ट सिख वोटरों को साध पाती है और हाल ही में संपन्न हुए नगर निकायों में मिली सीमित सफलता को आगे बढ़ाते हुए विधानसभा तक ले जाती है, तो वह त्रिकोणीय मुकाबले में आ सकती है। नयागांव और अबोहर जैसे नतीजे बताते हैं कि जहां संगठन सक्रिय है, वहां भाजपा अभी भी जीत सकती है। कई ग्रामीण इलाकों में भी मिली निकाय सीटें भाजपा के लिए नए आयाम बना रही हैं।

हालांकि, भाजपा के लिए जोखिम भी बराबर है। अगर शहरी हिंदू वोटर नाराज हुआ, पुराना काडर व संगठन कार्यकर्ता निष्क्रिय रहे और ग्रामीण इलाकों में ढिल्लों अपने करिश्मे से संगठन खड़ा नहीं कर पाए, तो यह नियुक्ति सिर्फ प्रतीकात्मक रह जाएगी। ऐसी स्थिति में दिल्ली में बैठे केंद्रीय नेतृत्व को भी तय करना होगा कि पंजाब में पार्टी को 'आयातित नेतृत्व' पर चलाना है या स्थानीय नेताओं को ऊपर लाकर एक टिकाऊ ढांचा बनाना है।

निकाय चुनाव नतीजों से एक दिन पहले की गई केवल सिंह ढिल्लों की नियुक्ति और नगर निकाय चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन, दोनों मिलाकर पंजाब भाजपा की तस्वीर को पंजाब में अभी अधूरी तैयार हुई ही दिखाते हैं। एक तरफ सामाजिक इंजीनियरिंग का दांव, दूसरी तरफ जमीनी कमजोरी। हालांकि 2027 विधानसभा चुनाव से पहले तक भाजपा के पास समय है, लेकिन इसमें से एक बड़ा हिस्सा संगठन को एकजुट करने और पुराने-नए कार्यकर्ताओं के बीच भरोसा बनाने में लगाना होगा। वरना पंजाब में भाजपा की कहानी फिर से 'शुरुआत अच्छी, अंत अधूरा' बनकर रह जाएगी।

पंजाब प्रदेश भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष केवल सिंह ढिल्लों। फाइल

बिजनेस

पिछले वर्ष 27,312 करोड़ रुपये के टायरों का निर्यात

नई दिल्ली : पिछले वित्त वर्ष 2025-27 के दौरान भारत ने रिकार्ड 27,312 करोड़ रुपये के टायरों का निर्यात रहा है। आटोमोटिव टायर मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन ने बुधवार को बताया कि इस दौरान अमेरिका को सबसे अधिक टायर भेजे गए हैं। वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान भारत ने 25,057 करोड़ रुपये के टायरों का निर्यात किया था। एसोसिएशन के चेयरमैन अरुण मम्मेन ने कहा कि वैश्विक सप्लाई चेन में भारी रुकावटों, लाजिस्टिक्स की बढ़ी हुई लागत और बड़े बाजारों में व्यापार से जुड़ी अनिश्चितताओं के बावजूद टायर निर्यात का प्रदर्शन काफी मजबूत रहा है। (प्रेट्र)

भारत की 'ब्लू इकोनमी' विकास के एक शक्तिशाली इंजन के रूप में उभर रही है। इसे समुद्री भोजन के बढ़ते निर्यात और भारतीय समुद्री उत्पादों की बढ़ती वैश्विक मांग से गति मिल रही है।
- पीयूष गोयल, केंद्रीय वाणिज्य मंत्री

सेंसेक्स	74,346.17 ▼ 303.67	निफ्टी	23,405.60 ▼ 77.95	सोना प्रति दस ग्राम	₹ 1,59,600 ▼ ₹ 1,850	चांदी प्रति किलो ग्राम	₹ 2,69,500 ▼ ₹ 1,500	$ डालर	₹ 95.76 ▲ ₹ 0.40	क्रूड प्रति बैरल	$ 98.92

एक नजर में

डालर के मुकाबले रुपये में 40 पैसे की गिरावट

मुंबई : अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) द्वारा श्रम उल्लंघनों का हवाला देते हुए भारतीय आयात पर 12.5 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने के प्रस्ताव के बाद बुधवार को रुपया 40 पैसे टूटकर 95.76 प्रति डालर पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने कहा कि डालर की मजबूत मांग, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों, अमेरिका-ईरान के बीच तनाव और विदेशी कोषों की भारी निकासी ने भी निवेशकों के विश्वास को और कमजोर कर दिया है। अब निवेशकों की नजर एमपीसी की बैठक पर है। (प्रेट्र)

1,850 रुपये घटा सोना, चांदी का मूल्य भी टूटा

नई दिल्ली : वैश्विक बाजारों में कमजोरी और अमेरिका-ईरान के बीच शांति समझौते से जुड़ी अनिश्चितता के चलते बुधवार को घरेलू स्तर पर सोना और चांदी की कीमत में गिरावट रही। आल इंडिया सराफा एसोसिएशन के अनुसार, दिल्ली में सोने के मूल्य में 1,850 रुपये की कमी आई और अब इसका मूल्य 1,59,600 रुपये प्रति दस ग्राम रह गया है। इसी तरह, चांदी की कीमत में 1,500 रुपये की गिरावट रही। अब दिल्ली में चांदी का मूल्य घटकर 2,69,500 रुपये प्रति किलोग्राम हो गया है। (प्रेट्र)

एचयूएल के स्थायी कर्मियों की संख्या 10.7% घटी

नई दिल्ली : एफएमसीजी की बड़ी कंपनी एचयूएल के स्थायी कर्मचारियों की संख्या वित्त वर्ष 2025-26 में 10.7 प्रतिशत घटकर 5,898 रह गई। कंपनी की ताजा सालाना रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। कंपनी के पास 31 मार्च, 2025 तक 6,604 स्थायी कर्मचारी थे। कंपनी ने कहा कि अभी उसकी प्रबंधकीय टीम में 44 प्रतिशत महिलाएं हैं और वह इस संख्या को और बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। उत्पादन कार्यों से 1400 महिलाएं जुड़ी हैं, जबकि बिक्री से जुड़ी भूमिकाओं में 1,500 से ज्यादा महिलाएं कार्यरत हैं। (प्रेट्र)

विदेशी निवेशकों का एआइ-चिप कंपनियों पर जोर

2026 के पहले पांच महीनों में एफआइआइ ने भारतीय शेयर बाजार से 30 अरब डालर निकाले

राजीव कुमार ● जागरण

- 2026 की पहली तिमाही में चीन में एआइ से जुड़ी कंपनियों में विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 16 अरब डालर डाले
- दक्षिण कोरिया की एआइ कंपनियों में विदेशी निवेशकों ने सिर्फ एक सप्ताह में 13.2 अरब डालर का निवेश किया

नई दिल्ली : वर्ष 2026 के पहले पांच महीनों में भारत के शेयर बाजार से विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआइआइ) ने 30 अरब डालर निकाले हैं। वहीं, वर्ष 2026 की पहली तिमाही में चीन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) से जुड़ी कंपनियों में विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 16 अरब डालर का निवेश किया। इस साल मई के मध्य में तो दक्षिण कोरिया की एआइ कंपनियों में विदेशी निवेशकों ने सिर्फ एक सप्ताह में 13.2 अरब डालर का निवेश किया। सेमीकंडक्टर और एआइ के लिए मशहूर ताइवान के शेयर बाजार के बाजार पूंजीकरण में पिछले छह महीनों में 58 प्रतिशत का इजाफा हुआ है। अमेरिका के एआइ व इसकी सप्लाई चेन से जुड़ी कंपनियों के शेयर भाव लगातार बढ़ रहे हैं।

जानकारों का कहना है कि पश्चिम एशिया संकट की वजह से सामान्य दिनों में बेहतर प्रदर्शन करने वाले सेक्टर के शेयर का भाव सभी देशों में प्रभावित हुआ है, लेकिन सेमीकंडक्टर, एआइ व इसकी सप्लाई चेन से जुड़े शेयर भाव में तेजी से निवेश हो रहा है। सबसे बड़ी दिक्कत इस बात की है भारत में सेमीकंडक्टर व एआइ चिप या माडल बनाने वाली कंपनियां शेयर बाजार में सूचीबद्ध ही नहीं हैं। एआइ के साफ्टवेयर या हार्डवेयर से जुड़ी कोई भी भारतीय कंपनी अभी वैश्विक स्तर पर अपने उत्पाद नहीं बेच रही है। दूसरी तरफ, दुनिया के सभी विकसित देश तेजी से एआइ को अपना रहे हैं। एआइ के लिए शक्तिशाली चिप चाहिए, इसलिए चिप बनाने वाली कंपनियों के भी शेयर भाव तेजी से चढ़ रहे हैं। चीन की बायडू, झीपू, कैमब्रिकन टेक, मिनी मैक्स जैसी एआइ और सेमीकान कंपनियों का शेयर भाव लगातार बढ़ रहा है। अमेरिका में एनविडिया, मेटा, माइक्रोसाफ्ट, माइक्रोन अल्फाबेट, एमेजोन जैसी कंपनियों के शेयर एआइ व एआइ चिप के कारण सबसे लोकप्रिय हैं।

पूंजीकरण में ताइवान के शेयर बाजार ने भारत का पीछे छोड़ा

एआइ व चिप से जुड़ी दक्षिण कोरिया की सैमसंग, एसके हिनिक्स जैसी कंपनियों के शेयर भाव पिछले एक साल में 200 प्रतिशत बढ़े हैं। ताइवान की टीएसएमएस चिप बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी है। टीएसएमएस के साथ फाक्सकान, डेल्टा इलेक्ट्रानिक्स, मीडिया टेक, क्वांता कंप्यूटर जैसी एआइ से जुड़ी कंपनियों की बदौलत ताइवान 5.15 लाख करोड़ डालर के बाजार पूंजीकरण के साथ भारत को पीछे छोड़ दिया है। भारत का बाजार पूंजीकरण 4.92 लाख करोड़ डालर रह गया है।

आइटी शेयरों में बिकवाली से 303 अंक गिरा सेंसेक्स, निफ्टी भी टूटा

मुंबई, प्रेट्र : सूचना-प्रौद्योगिकी शेयरों में भारी बिकवाली, कच्चे तेल की कीमतों में तेजी और विदेशी फंड की लगातार निकासी से बुधवार को सेंसेक्स और निफ्टी नीचे बंद हुए। 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 303.67 अंक गिरकर 74,346.17 पर बंद हुआ। दिन के दौरान यह 1,157.24 अंक या 1.55 प्रतिशत गिरकर 73,492.60 पर आ गया था। वहीं एनएसई निफ्टी 77.95 अंक घटकर 23,405.60 पर बंद हुआ। पिछले चार सत्रों में गिरावट का सिलसिला तोड़ते हुए बेंचमार्क इंडेक्स ने मंगलवार को लगभग आधा प्रतिशत की बढ़त दर्ज की थी।

...तो इस वजह से इस्तीफा दे रहे बीमा कंपनियों के शीर्ष अधिकारी

भारत में जीवन और साधारण बीमा कारोबार के लिए अपार संभावनाएं हैं। इसके बावजूद बड़ी कंपनियों के सीईओ अपने पदों से इस्तीफा दे रहे हैं। इससे इस बात की चर्चा जोरों पर है कि आखिर इतने बड़े पदों पर आसीन लोग इस्तीफा क्यों दे रहे हैं। आइए जानते हैं इसके पीछे के कारण...

कौन-कौन दे चुके हैं इस्तीफा

- टाटा एआइजी जनरल इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ नीलेश गर्ग
- एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक व सीईओ अनुज त्यागी
- जनरली सेंट्रल इंश्योरेंस के प्रबंध निदेशक और सीईओ अनुप राव
- आने वाले महीनों में एक और बड़ी कंपनी के सीईओ के इस्तीफा देने की चर्चा

इस वजह से पद छोड़ रहे शीर्ष अधिकारी

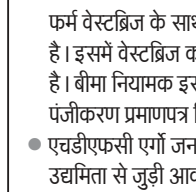

- जानकारों का कहना है कि भारत अभी भी एक ऐसा बाजार है जहां बीमा की पहुंच काफी कम है। इसी का फायदा उठाने के लिए इस सेक्टर के अनुभवी पेशेवर जानी मानी संस्थाओं को छोड़कर प्राइवेट इक्विटी कंपनियों से फंडिंग सपोर्ट हासिल करके अपना कारोबार खड़ा कर रहे हैं।
- **नीलेश गर्ग** ने भी टाटा एआइजी को छोड़कर अमेरिका की प्राइवेट इक्विटी फर्म वेस्टब्रिज के साथ मिलकर कीवी जनरल इंश्योरेंस की स्थापना की है। इसमें वेस्टब्रिज की करीब 70% और नीलेश गर्ग की 30% हिस्सेदारी है। बीमा नियामक इरडा ने मार्च 2026 में कीवी को बीमा कारोबार के लिए पंजीकरण प्रमाणपत्र दिया है।
- एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस छोड़ने वाले **अनुज त्यागी** ने भी अपनी उद्यमिता से जुड़ी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पद छोड़ा है।
- उद्योग सूत्रों का कहना है कि राव बीमा क्षेत्र में एक नए वेंचर के विकल्प पर सक्रिय रूप से विचार कर रहे हैं, चाहे वह इक्विटी हिस्सेदारी के रूप में हो या संस्थापक साझेदार के तौर पर।

आसान हुआ कारोबार करना

बीमा नियामक इरडा ने हाल के वर्षों में बीमा कारोबार को लेकर कई सुधार किए हैं। इससे बीमा कारोबार करना आसान हो गया है और बीमा क्षेत्र निवेशकों के लिए ज्यादा अनुकूल बन गया है। इसके अलावा, सरकार भी बीमा क्षेत्र में 100 प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआइ) को मंजूरी दे चुकी है। निजी क्षेत्र की एक बीमा कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि इरडा ने नई कंपनियों के लिए खुलेपन का संकेत दिया है।

वेंकटसामी जगन्नाथन ने कायम की मिसाल

यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) से सेवानिवृत्त होने के बाद बड़ा कारोबार स्थापित करने की मिसाल कायम कर चुके हैं। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने चेन्नई के एक छोटे से दफ्तर से स्टार हेल्थ की शुरुआत की, जो आज 30 हजार करोड़ रुपये की कंपनी है।

भारत का साधारण बीमा सेक्टर एशिया में वित्तीय सेवा क्षेत्र में सबसे आकर्षक अवसरों में से एक बना हुआ है। इसका कारण यह है कि गैर-जीवन बीमा की पहुंच सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मुकाबले महज एक प्रतिशत है, जबकि वैश्विक औसत चार प्रतिशत से ज्यादा है।
-हरिहरन रामकृष्णन, मैनेजिंग पार्टनर, एपीआरी कंसल्टिंग

बिजनेस डेस्क, इनपुट : प्रेट्र

एमपीसी बैठक शुरू, अपरिवर्तित रहेगा रेपो रेट

- मौद्रिक नीति समिति के फैसलों की जानकारी शुक्रवार को देंगे आरबीआइ के गवर्नर
- महंगाई के अनुमान को बढ़ाने के साथ वृद्धि अनुमान को कम कर सकता है केंद्रीय बैंक

मुंबई, प्रेट्र : आरबीआइ की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की बैठक बुधवार को शुरू हो गई। ऐसी उम्मीद है कि केंद्रीय बैंक रेपो रेट को 5.25 प्रतिशत पर बरकरार रख सकता है, क्योंकि पश्चिम एशिया संघर्ष महंगाई के साथ-साथ आर्थिक वृद्धि के लिए भी चुनौतियां खड़ी कर रहा है। तीन दिनों के विचार-विमर्श के बाद छह सदस्यों वाली समिति पांच जून को अपने फैसले का एलान करेगी। आरबीआइ ने पिछले वित्त वर्ष यानी 2025-26 में नीतिगत दर में कुल मिलाकर 100 आधार अंकों की कटौती की थी।

विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ती ऊर्जा कीमतों, आपूर्ति संबंधी दिक्कतों और कमजोर होते रुपये के चलते आरबीआइ अपने महंगाई के अनुमान को बढ़ा सकता है और अपने जीडीपी वृद्धि के अनुमान को कम कर सकता है। अप्रैल में हुई एमपीसी की बैठक के दौरान रेपो रेट में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया गया था और पश्चिम एशिया संघर्ष से ऊर्जा आपूर्ति और महंगाई व वृद्धि पर पड़ने वाले असर का आकलन करने के लिए देखा और इंतजार करों की नीति अपनाई गई थी। निजी क्षेत्र के यस बैंक ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि पश्चिम एशिया में संघर्ष के नरम पड़ने के बावजूद चुनौतियां कायम हैं और ऐसे में अर्थव्यवस्था पर इसका असर दिख सकता है। रिपोर्ट के अनुसार थोक महंगाई का खुदरा मुद्रास्फीति पर असर अभी शुरू हुआ है। पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी के साथ-साथ कमर्शियल एलपीजी की कीमतों में भी बढ़ोतरी हुई है। मैन्यूफैक्चरिंग और खेती के इनपुट की लागत तेजी से बढ़ी है और मैन्यूफैक्चरर्स ने इसका असर खुदरा क्षेत्र पर डालने की इच्छा दिखाई है। यस बैंक ने कहा, 'जून में रेपो रेट और रुख में बदलाव की संभावना बहुत कम है, क्योंकि आरबीआइ कीमतों में बढ़ोतरी के असर का आकलन करने के लिए समय चाहता है।' बता दें कि आरबीआइ अपनी मौद्रिक नीति बनाते समय खुदरा महंगाई को ध्यान में रखता है।

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

छह माह के उच्चस्तर पर सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर

नई दिल्ली, प्रेट्र : अच्छी मांग और नए आर्डर के चलते मई महीने में देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर छह महीने के उच्चस्तर स्तर पर पहुंच गई। परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआइ) अप्रैल के 58.8 से बढ़कर मई में 59.8 हो गया। यह पिछले नवंबर के बाद से विस्तार की सबसे तेज दर का संकेत है।

एचएसबीसी की मुख्य भारत अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा कि मई में भारत द्वारा दी जाने वाली सेवाओं की बाहरी मांग तेज गति से बढ़ी और अप्रैल में आई भारी गिरावट के बाद इसमें सुधार देखने को मिला। इनपुट लागत में महंगाई कम हुई, जिससे बिक्री की कीमतों पर पड़ने वाला दबाव भी कम हुआ।'' रिपोर्ट के अनुसार, मई के दौरान भाड़ा, डिजिटल साल्यूशंस, ई-कामर्स, मनोरंजन और सूचना-प्रौद्योगिकी जैसी सेवाओं की मांग बढ़ने से नए कारोबार की वृद्धि को बढ़ावा मिला। इससे कंपनियों ने गतिविधियों का दायरा बढ़ाया।

अब तक 3.5 करोड़ टन से ज्यादा गेहूं की खरीद

नई दिल्ली, प्रेट्र : खाद्य मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि 2026-27 के रबी विपणन सत्र में सरकार की गेहूं खरीद 17 प्रतिशत बढ़कर 3.5 करोड़ टन से ज्यादा हो गई है। यह 3.45 करोड़ टन के लक्ष्य और पिछले साल की तीन करोड़ टन की खरीद दोनों से ज्यादा है।

एक अधिकारी ने बताया कि गेहूं पैदावारा वाले मुख्य राज्यों में खरीद का काम पूरा हो चुका है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) और राज्यों की एजेंसियां राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और दूसरी कल्याणकारी योजनाओं की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर गेहूं खरीदती हैं। गेहूं की ज्यादा खरीद इसलिए भी हुई, क्योंकि मंडियों में गेहूं के दाम एमएसपी से कम चल रहे थे। इसकी वजह यह थी कि देश में गेहूं का उत्पादन जबरदस्त उत्पादन (12.06) रहा है। कुछ जगहों पर नुकसान पहुंचने के बावजूद उत्पादन अच्छा रहा है।

राष्ट्रीय फलक

फिजिक्सवाला पर पांच लाख और मैकफी पर एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने उपभोक्ताओं को गुमराह करने वाली आनलाइन तकनीकों (डार्क पैटर्न) का इस्तेमाल करने के मामले में शिक्षा प्रौद्योगिकी कंपनी फिजिक्सवाला और साइबर सुरक्षा कंपनी मैकफी साफ्टवेयर इंडिया पर जुर्माना लगाया है। नियामक ने कहा कि फिजिक्सवाला पर पांच लाख रुपये और मैकफी पर एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। दोनों कंपनियों को अपनी वेबसाइट और एप से ऐसी व्यवस्थाएं हटाने का निर्देश भी दिया गया है।

डार्क पैटर्न उपयोगकर्ता इंटरफेस डिजाइन की ऐसी तरकीबें हैं जो उपभोक्ताओं को अनचाही खरीदारी करने, सदस्यता लेने या व्यक्तिगत डाटा देने के लिए प्रेरित या विवश करती हैं। सीसीपीए ने नवंबर 2023 में डार्क पैटर्न की रोकथाम और विनियमन के लिए दिशानिर्देश अधिसूचित किए, जिसमें ऐसी 13 प्रथाओं को अनुचित व्यापार के रूप में पहचाना गया।

हिमाचल में ब्याही अन्य राज्यों की महिलाओं को आरक्षण का लाभ नहीं

विधि संवाददाता ● जागरण

- विवाह के आधार पर आरक्षण का अधिकार नहीं मिल सकता: हाई कोर्ट
- ओबीसी व एससी वर्ग की महिलाएं नहीं ले सकेंगी आरक्षण का लाभ

शिमला : हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट की खंडपीठ ने स्पष्ट किया है कि दूसरे राज्यों से विवाह कर हिमाचल आने वाली ओबीसी और अनुसूचित जाति (एससी) वर्ग की महिलाएं आरक्षण का लाभ नहीं ले सकेंगी। अदालत ने कहा कि भले ही संबंधित महिला गृह राज्य में आरक्षित वर्ग से हो और हिमाचल में भी उसकी जाति आरक्षित श्रेणी में शामिल हो, फिर भी केवल विवाह के आधार पर उसे हिमाचल में आरक्षण का अधिकार नहीं मिल सकता।

मुख्य न्यायाधीश गुरमीत सिंह संधावालिया और न्यायाधीश बिपिन चंद्र नेगी की खंडपीठ ने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व फैसलों का हवाला देते हुए यह निर्णय सुनाया। अदालत ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट पहले ही स्पष्ट कर चुका है कि विवाह के बाद किसी अन्य राज्य में जाने वाले व्यक्ति को उस राज्य में आरक्षण का लाभ नहीं दिया जा सकता। खंडपीठ ने जसवंत कौर सहित चार महिलाओं की अपीलों को खारिज करते हुए राज्य सरकार के निर्णय को सही ठहराया। इससे पहले हाई कोर्ट की एकलपीठ भी नवंबर 2024 से मई 2026 के बीच इन याचिकाओं को खारिज कर चुकी है।

अपीलकर्ताओं में दो महिलाएं पंजाब की सैनी जाति से थीं, जो ओबीसी वर्ग में आती हैं, जबकि तीसरी महिला हरियाणा के वाल्मीकि समुदाय से थी, जिसे अनुसूचित जाति का दर्जा प्राप्त है। इन सभी महिलाओं ने हिमाचल में अपनी ही जातियों के पुरुषों से विवाह किया था।

इन्हें हिमाचली बोनाफाइड प्रमाणपत्र भी जारी किए जा चुके थे। इसी आधार पर इन्होंने नौकरियों व अन्य क्षेत्रों में आरक्षण का लाभ मांगा था।

आतंक से जुड़े मामलों को लेकर कश्मीर के छह जिलों में सीआइके के छापे

राज्य ब्यूरो, जागरण ● श्रीनगर: आतंकियों के स्लीपर सेल नेटवर्क, भर्ती नेटवर्क और आतंकी फंडिंग से संबंधित मामले में पुलिस की काउंटर इंटेलीजेंस कश्मीर (सीआइके) विंग ने कश्मीर के छह जिलों में एक साथ आठ जगहों पर छापेमारी की। इस दौरान किसी की गिरफ्तारी की पुष्टि नहीं हुई है। तलाशी के दौरान डिजिटल उपकरण, मोबाइल फोन व सिमकार्ड, आपत्तिजनक साहित्य के साथ वित्तीय लेन-देन से संबंधित दस्तावेज जांच के लिए जब्त किए हैं। हालांकि, सीआइके ने उन संदिग्ध तत्वों के नाम नहीं बताए हैं जिनके ठिकानों की तलाशी ली है।

सूत्रों ने बताया कि श्रीनगर के वानी मोहल्ला, खनमोह के जाहिद अहमद बट (27) के घर की तलाशी ली गई। वह सीमेंट कंपनी में काम करता है। नौगाम में नूरुद्दीन वानी के घर को खंगाला। संबंधित अधिकारियों ने बताया कि छापेमारी की यह कार्रवाई सीआइके श्रीनगर अदालत की अनुमति से की है।

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय का नाम वाग्देवी भोजपाल करने का प्रस्ताव

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल

- कार्यपरिषद ने पारित किया प्रस्ताव, अब सरकार को लेना है फैसला

कार्यपरिषद की बैठक में उपस्थित सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से विश्वविद्यालय का नाम बदलने की अनुशंसा का प्रस्ताव पारित कर अग्रिम कार्रवाई के लिए भेज दिया है। नाम बदलने का निर्णय सरकार लेगी। - **समर बहादुर सिंह, कुलसचिव, बीयू**

राजधानी के प्रतिष्ठित बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (बीयू) के कार्यपरिषद ने इसका नाम बदलकर वाग्देवी भोजपाल विश्वविद्यालय करने का प्रस्ताव पारित किया है। प्रस्ताव उच्च शिक्षा विभाग को भेजा जाएगा। प्रस्ताव में तर्क है कि शिक्षा संस्थान का नाम क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति और गरिमा को दर्शाने वाला होना चाहिए। मौलाना बरकतउल्ला गदर पार्टी के सक्रिय स्वतंत्रता सेनानी और विद्वान थे, परंतु उनका अधिकांश जीवन विदेश में बीता।

राजा भोज की तुलना में बरकतउल्ला भोपाली का भोपाल के विकास और सांस्कृतिक उत्थान में कोई विशेष सीधा योगदान नजर नहीं आता। वहीं, प्रतापी राजा भोज ने धार में भोजशाला (सरस्वती मंदिर) की स्थापना की थी, जो उस दौर का विश्वविद्यालय था। राजा भोज ने स्थापत्य, नगर नियोजन और यांत्रिक कला पर समरांगण सूत्रधार सहित 80 ग्रंथों की रचना की। भोपाल का बड़ा तालाब और भोजपुर मंदिर उनकी दूरदर्शिता के प्रमाण हैं।

पहली निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री थे मौलाना बरकतुल्ला : सात जुलाई 1854 को भोपाल के इतवारा में जन्मे मौलाना बरकतुल्ला स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांतिकारी धारा के सेनानी थे। कई भाषाओं के विद्वान मौलाना ब्रिटिश शासन के कट्टर विरोधी थे और जापान, अमेरिका, जर्मनी तथा अफगानिस्तान में रहकर भारत की आजादी के लिए समर्थन जुटाते रहे।

राजस्थान में नौकरी का झांसा देकर किया दुष्कर्म, कराया मतांतरण

जासं, उदयपुर : राजस्थान के भीलवाड़ा में 35 वर्षीय महिला ने एक मुस्लिम युवक और उसके स्वजन के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। महिला का आरोप है कि युवक ने नौकरी दिलाने का झांसा देकर पहले उसके साथ दुष्कर्म किया, फिर अश्लील फोटो-वीडियो के जरिए ब्लैकमेल कर जबरन मतांतरण और निकाह कराया। पीड़िता का यह भी आरोप है कि इस दौरान उससे करीब एक करोड़ रुपए की नकदी, आभूषण भी ले लिए गए।

पीड़िता के अनुसार, आरोपित उसकी बहन के माध्यम से संपर्क में आया था। उसने नौकरी दिलाने के बहाने एक रिसार्ट में बुलाकर दुष्कर्म किया और बाद में फोटो-वीडियो बहुप्रसारित करने तथा परिवार को नुकसान पहुंचाने की धमकी देकर लगातार दबाव बनाता रहा। आरोपित उसे दिल्ली ले गया, जहां एक धार्मिक स्थल पर मतांतरण कराने के बाद निकाह किया।

दारुल उलूम ने फिर दी हिदायत, स्मार्ट फोन मिला तो निष्कासन

जासं, सहारनपुर : बकरीद की छुट्टियों के बाद लौटे छात्रों को दारुल उलूम प्रशासन ने चेतावनी दी है कि किसी भी छात्र के पास स्मार्ट फोन पाया गया तो तुरंत निष्कासित कर दिया जाएगा।

इस बारे में दारुल उलूम के छात्रावास प्रभारी मुफ्ती अशरफ अब्बास ने बताया कि छात्रों को बकरीद की छुट्टियों में घर जाने से पूर्व कहा गया था कि छात्र संस्था की हिदायत को याद रखें और घर से स्मार्ट फोन न लाएं। यदि किसी छात्र को मोबाइल की आवश्यकता है तो वह की-पैड वाला मोबाइल इस्तेमाल करें और उसको ही अपने पास रखे।

अशरफ अब्बास ने बताया कि किसी छात्र के पास स्मार्ट फोन मिला तो उसका प्रवेश निरस्त कर संस्था से उसका नाम काट दिया जाएगा। इस बारे में किसी प्रकार की रियायत नहीं दी जाएगी। छात्रों को संस्था के नियमों का पालन करना होगा।

मोटी रोटी बनाने पर कर दी थी पत्नी व दो बेटियों की हत्या, कोर्ट ने सुनाया मृत्यु दंड

जागरण संवाददाता, महोबा

- न्यायालय ने कहा- मृत्यु होने तक दोषी को फांसी पर लटकाए रखा जाए
- नशे में छोटी-छोटी बातों में आए दिन विवाद, पत्नी पर शक भी करता था

सजा का ऐलान हो जाने के बाद दोषी देवेंद्र को ले जाते पुलिस कर्मी। जागरण >>

मोटी रोटी बनाने और सब्जी में नमक कम होने जैसी मामूली बात पर पत्नी और फिर दो बेटियों की हत्या करने वाले को अदालत ने मृत्यु दंड की सजा सुनाई है। उस पर 50 हजार अर्थदंड भी लगाया गया है। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/एफटीसी अपर्णा त्रिपाठी-द्वितीय ने फैसले में कहा कि दोषी को फांसी के फंदे पर तब तक लटकाया जाए, जब तक उसकी मृत्यु न हो जाए। फैसला घटना के तीन वर्ष के अंदर आ गया है।

हमीरपुर निवासी हरिप्रसाद पांचाल ने अपनी बेटी रामकुमारी की शादी 2011 में कपड़ों की फेरी लगाने वाले देवेंद्र विश्वकर्मा के साथ की थी। देवेंद्र पत्नी और दो बेटियों के साथ मुहल्ला समदनगर में रहता था। उसने 17 जुलाई 2023 की रात करीब आठ बजे पत्नी और सो रही बेटियों नौ वर्षीय आयुषी व छह वर्षीय सोनाक्षी का सिर सिलबट्टे से कूच दिया था। देवेंद्र के पिता ठाकुरदीन ने बताया था कि दंपती के बीच खाने को लेकर विवाद हुआ था। पुलिस ने 19 जुलाई को देवेंद्र को गिरफ्तार कर लिया। 24 अगस्त 2023 को आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत किए। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सुरेंद्र सिंह राजपूत ने बताया कि देवेंद्र पत्नी पर शक भी करता था, इसका मामला परिवार न्यायालय में भी चल रहा था। वह नशे का लती था और आए दिन पत्नी से विवाद करता था। घटना वाले दिन भी शराब पी रखी थी। जांच में सिलबट्टे में उसकी अंगुलियों के निशान मिले थे और कपड़ों में भी वही खून पाया गया जो मौके पर मिला था। कुल नौ लोगों की गवाही कराई गई। मानवीय संवेदनाओं और जघन्यता को देखते हुए न्यायालय ने मृत्यु दंड का फैसला सुनाया है।

मेवाड़ विश्वविद्यालय में नए प्रवेश पर रोक

जागरण संवाददाता, उदयपुर : राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित मेवाड़ विश्वविद्यालय में नए प्रवेशों पर रोक लगने के बाद हजारों विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच चिंता बढ़ गई है। 10 हजार से अधिक विद्यार्थियों वाले इस निजी विश्वविद्यालय पर पहले से ही कुछ पाठ्यक्रमों की मान्यता, फर्जी डिग्री प्रकरण और प्रशासनिक अनियमितताओं को लेकर सवाल उठते रहे हैं। अब राजस्थान सरकार ने जांच पूरी होने तक सभी नए प्रवेशों पर रोक लगा दिया है।

विश्वविद्यालय के खिलाफ लंबे समय से फर्जी डिग्री जारी करने और अन्य अनियमितताओं की शिकायतें मिल रही थीं। इसके बाद उदयपुर संभागीय आयुक्त की अध्यक्षता में गठित विशेष जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी। रिपोर्ट में सामने आई कथित अनियमितताओं के आधार पर उच्च शिक्षा विभाग ने मेवाड़ विश्वविद्यालय अधिनियम-2009 की धारा 44(1) के तहत कारण बताओ नोटिस जारी किया।

आदिवासी किशोरी का सौदा कर दो साल तक दरिंदगी, एनएचआरसी ने लिया संज्ञान

जागरण संवाददाता, भुवनेश्वर

- नौकरी का झांसा देकर ओडिशा से उत्तर प्रदेश ले जाई गई थी पीड़िता
- झांसी पुलिस ने केवल पीड़िता का बयान दर्ज कर थमाया ट्रेन का टिकट

ओडिशा के ढेंकनाल जिले से नौकरी का झांसा देकर उत्तर प्रदेश के झांसी ले जाई गई 17 वर्षीय आदिवासी किशोरी को खरीदने और दो वर्षों तक यौन शोषण करने का मामला सामने आया है। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने घटना पर स्वतः संज्ञान लेते हुए यूपी और ओडिशा के डीजीपी तथा ढेंकनाल के जिलाधिकारी को नोटिस जारी कर दो सप्ताह के भीतर जवाब तलब किया है। नोटिस में यह स्पष्ट करने को कहा गया है कि मामले में अब तक क्या कार्रवाई हुई है और पीड़िता को राहत व पुनर्वास उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन की ओर से क्या कदम उठाए जा रहे हैं।

किशोरी को तीन अन्य लड़कियों के साथ नौकरी के बहाने यूपी के झांसी ले जाया गया था, जहां उसे तीन महीने तक एक घर में बंधक बनाकर रखा गया और दुष्कर्म किया गया। जब वह गर्भवती हो गई, तो बिना उसकी सहमति के जबरन गर्भपात करा दिया गया। इस बीच किशोरी का सौदा कर उसे 50 हजार रुपये में एक अन्य व्यक्ति के पास बेच दिया गया। वहां भी लगभग दो साल तक कई लोगों द्वारा उसका शोषण किया गया। एक स्थानीय वकील की मदद से किशोरी दरिंदों के चंगुल से भाग निकलने में कामयाब रही। आरोप है कि दरिंदों के चंगुल से छूटने के बाद वह झांसी में पुलिस के पास पहुंची, लेकिन उसने केवल बयान दर्ज कर मामले को रफा-दफा कर कर ओडिशा आने के लिए ट्रेन का टिकट थमा दिया। पीड़िता के घर लौटने पर पुलिस ने उसका बयान दर्ज कर मामले की जांच शुरू की।

हिन्दुस्तान
1936
सत्य • सार्थक • सदैव

एक और अग्निकांड

दिल्ली में एक बार फिर आगजनी की घटना ने नगर-व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगा दिए हैं। आंशिक रूप से अवैध एक होटल में बुधवार सुबह लगी आग के चलते दोपहर ढलने तक 20 से ज्यादा लोग काल के गाल में समा गए। बताया जा रहा है, इस होटल को केवल छह कमरे की इजाजत थी, लेकिन वहां 25 कमरे बन गए थे। आग के कारणों का अभी स्पष्ट पता नहीं चला है, लेकिन जांच में दूध का दूध और पानी का पानी होना जरूरी है। दिल्ली पुलिस ने होटल में लगी आग की त्रासदी के लिए गैर-इरादतन हत्या के आरोप में एफआईआर दर्ज की है। यहां एक बार जरूर सोचना चाहिए कि जब नियम तोड़कर होटल चलाया जा रहा था, तब इस हादसे को इरादतन हत्या क्यों न माना जाए? जो लोग सुरक्षा मानकों से समझौता नहीं, बल्कि खिलवाड़ करते हैं, उन्हें अच्छे से पता होता है कि खतरा कितना बड़ा है। कम जगह में ज्यादा कमाई के लोभ में इंसानी जिंदगी से समझौता क्या गैर-इरादतन हत्या है? जरा सोचिए, उनके बारे में, जिनकी जान चली गई। पूछिए शोक संतप्त परिजनों से कि जांच और न्याय की दिशा क्या होनी चाहिए?

मालवीय नगर के इस होटल में परत-दर-परत कोताहियां खुल रही हैं? अब इतने लोगों की जान जाने के बाद यह केवल कोताही नहीं, जघन्य अपराध है। क्या होटल में केवल एक ही प्रवेश-निकास द्वार था? ऐसे सवाल बहुत गंभीर हो गए हैं। पांच मंजिला इमारत में विदेशी भी मारे गए हैं। इस घटना ने पूरी राजधानी को झकझोर दिया है और यहां भवन सुरक्षा पर फिर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। सुरक्षा के बुनियादी मानकों की अनदेखी अक्सर भारी पड़ती है, लेकिन वास्तव में पूरी कड़ाई से कार्रवाई और सुधार न करने की वजह से आगजनी की घटनाओं का सिलसिला थम नहीं रहा है। गर्मी के दिनों में वैसे भी आगजनी होती है और दमकल को कुछ मशक्कत के बाद आग पर काबू करने में कामयाबी भी मिल जाती है, लेकिन इस आगजनी में पीड़ित जन भाग नहीं पाए। अगर होटल से निकलना आसान रहता, तो इतनी मौतें न होतीं। अनेक होटलों में यह देखा जाता है कि मुनाफे के लिए सुरक्षा मानकों से तमाम मुमकिन समझौते किए जाते हैं। किसी भी भवन में एक से अधिक निकलने के मार्ग होने ही चाहिए। खासकर होटलों या विश्रामगृहों में तो दो से अधिक निकासी मार्ग जरूरी हैं। दिल्ली के इस होटल में अगर बाहर निकलने के एकाधिक मार्ग होते, तो मेहमानों की जान यूं न जाती।

आग, जलभराव और भगदड़ से बचने के लिए युद्ध स्तर पर इंतजाम होने चाहिए। सुरक्षा मानकों से खिलवाड़ रोककर दिल्ली को मिसाल बनना चाहिए।

यह अक्सर देखा जाता है कि होटलों को ऐसे किले में तब्दील कर दिया जाता है कि किसी हादसे की स्थिति में बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। तपते जून में ही साल 1997 में उपहार सिनेमा अग्निकांड को दिल्ली और देश ने अभी भुलाया नहीं है। बेशर्म लापरवाहियों के चलते तब 59 लोगों की जान गई थी और 103 लोगों की जिंदगी मुश्किल से बची थी। उपहार हादसे के समय भी सिनेमा देख रहे लोग जान बचाने के लिए भाग नहीं पाए थे। बिजली कटने से अंधेरा हो गया था और भागने के रास्तों पर भी लगा दी गई कुर्सियां मौत का जाल बन गई थीं। क्या हमने उपहार अग्निकांड से कुछ सीखा है? क्या तब सरकार व गैर-सरकारी दोषियों को पर्याप्त सजा हुई थी? कोई दोराय नहीं कि आग, जलभराव और भगदड़ से बचने के लिए दिल्ली में युद्ध स्तर पर इंतजाम होने चाहिए। सुरक्षा मानकों से खिलवाड़ थमना चाहिए। दिल्ली को एक मिसाल बनकर देश के सामने आना चाहिए। हर शहर को अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए कि वह कितना सुरक्षित है?

ट्रंप के लिए कड़वा घूंट बनता ईरान युद्ध

विवेक काटजू | पूर्व राजनयिक

अगर होर्मुज जलमार्ग जल्दी नहीं खुला और ऊर्जा की स्थिति यूं ही बिगड़ती रही, तो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सामने बड़ा राजनीतिक संकट खड़ा हो सकता है।

ईरान युद्ध तीन माह से अधिक समय से चल रहा है। हालांकि, 8 अप्रैल से संघर्ष-विराम लागू है, लेकिन इससे उन वैश्विक मुश्किलों का अंत नहीं हो सका है, जो इस जंग के कारण पैदा हुई हैं। इसकी वजह, जो अब सभी जानते हैं, होर्मुज जलमार्ग का बंद होना है, जिससे वैश्विक ऊर्जा व्यापार प्रभावित हुआ है और विश्व अर्थव्यवस्था चरमरा गई है।

युद्ध-विराम के बाद अमेरिका और ईरान के बीच अप्रत्यक्ष बातचीत भी जारी है। कई बार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संकेत दिए कि दोनों देशों के बीच समझौता होने ही वाला है, लेकिन अभी तक इसमें सफलता नहीं मिल सकी है। नतीजतन, जहां ईरान ने होर्मुज जलमार्ग बंद कर रखा है, वहीं अमेरिका की ओमान की खाड़ी में नाकेबंदी जारी है, जिस कारण ईरान भी अब ऊर्जा का निर्यात नहीं कर पा रहा है। 2 जून को अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने देश की संसदीय कमेटी के सामने ईरान के साथ चल रही बातचीत को लेकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि ईरान अब अपने परमाणु कार्यक्रम के उन पहलुओं पर भी चर्चा करने को तैयार हो गया है, जिस पर पहले वह कतई राजी नहीं था। इनमें यूरेनियम के संवर्द्धन और उसके भंडार को लेकर होने वाली बातचीत भी शामिल है। हालांकि, रूबियो ने अमेरिकी सांसदों को कोई आश्वासन नहीं दिया कि ईरान से समझौता कब तक हो सकेगा।

उधर, पाकिस्तान व कुछ इस्लामी देशों के जरिये अमेरिका और ईरान में अप्रत्यक्ष बातचीत जारी है। मीडिया में आई खबरों के मुताबिक, दोनों देश इस प्रयास में हैं कि उनके बीच 'एमओयू', यानी सहमति-पत्र पर हस्ताक्षर हो जाए, ताकि होर्मुज जलमार्ग खुल सके। हालांकि, अमेरिका ही नहीं, ईरान में भी ऐसे तत्वों की कमी नहीं, जो इस बातचीत में सख्त रवैया अपनाने की वकालत कर रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति भी यही चाहते हैं कि ऐसा समझौता अस्तित्व में आए, जिसके माध्यम से वह अपने नागरिकों को बता सकें कि उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा से कहीं बेहतर समझौता किया है। किंतु, इसके लिए उन्हें खासतौर से यह दिखाना होगा कि ईरान के पास कभी भी परमाणु हथियार बनाने की क्षमता विकसित नहीं हो सकेगी। उन्हें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि उन्होंने ईरान को उतनी आर्थिक रियायतें नहीं दीं, जितनी ओबामा ने अपने समझौते में दे रखी थी।

इसी तरह, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के कट्टर सदस्य यह चाहते हैं कि ईरान को 'एनपीटी', यानी परमाणु अप्रसार संधि के तहत परमाणु ऊर्जा का जो अधिकार हासिल है, वह उसे छोड़े नहीं और अमेरिकी-इजरायली हमलों के दौरान तेहरान ने जो कुछ सहा है, उसकी आर्थिक भरपायी हो। इसीलिए वे होर्मुज जलमार्ग पर नियंत्रण ही नहीं, बल्कि यहां से गुजरने वाले जहाजों पर टोल लगाना भी चाहते हैं। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय संबंधों के जानकार जानते हैं कि ऐसी कोई व्यवस्था विश्व बिरादरी स्वीकार नहीं करेगी।

इन सबका यही अर्थ है कि दोनों देशों के बीच कूटनीतिक पेच फंस गया है। इतिहास बताता है कि जब देश लड़ाइयों में उलझते हैं, तो उन पर समय और परिस्थितियों का दबाव होता है। ईरान पर अपने ऊर्जा निर्यात को फिर से शुरू करने का दबाव है, क्योंकि यही उसकी कमाई का बड़ा जरिया है। उसे अपने पुनर्निर्माण के लिए भी पैसों की जरूरत है। निस्संदेह, अमेरिकी और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के कारण ईरानी जनता में सहन-शक्ति बहुत अधिक है, लेकिन अब उनका जीवन दुश्वार हो रहा है।

उधर, राष्ट्रपति ट्रंप यह जानते हैं कि पांच महीनों में अमेरिकी संसद के चुनाव होंगे और अमेरिका में ऊर्जा की कीमतें लड़ाई से पहले की तुलना में अनुमानतः 46 फीसदी तक बढ़ चुकी है। अगर दामों में इसी तरह से बढ़ोतरी होती रही, तो रिपब्लिकन पार्टी को मध्यावधि चुनावों में बेहद मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। वह समझते हैं कि अगर होर्मुज नहीं खुला और ऊर्जा की स्थिति यूं ही बिगड़ती रही, तो उनके सामने राजनीतिक संकट खड़ा हो सकता है। लिहाजा, एमओयू पर हस्ताक्षर करने का उन पर भी भारी दबाव है।

वैसे, इस युद्ध का एक महत्वपूर्ण और उलझा हुआ पहलू है, इजरायल का रुख। अब यह साफ हो गया है कि इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ही ट्रंप को यह सुझाव दिया था कि अगर ईरान पर आक्रमण किया जाता है और उसके शीर्ष नेतृत्व को खत्म कर दिया जाता है, तो वहां की 'विलायते-फकीह' (ईरान की सर्वोच्च शासन प्रणाली) को नष्ट किया जा सकता है। किंतु ऐसा नहीं हो सका है। अब इजरायल हिज्बुल्लाह पर, जो कि ईरान समर्थित छद्म गुट है, लेबनान में हमले कर रहा है, जबकि दोनों के बीच संघर्ष-विराम भी है। ट्रंप इजरायली प्रधानमंत्री के इस रवैये से खुश नहीं हैं और वह अपनी नाराजगी सबके सामने जाहिर कर भी चुके हैं। वह नहीं चाहते कि लेबनान तनाव का असर ईरान के साथ चल रही उनकी अप्रत्यक्ष बातचीत पर पड़े।

इसके साथ-साथ एक और तस्वीर उभर रही है। ट्रंप कभी-कभी यह भी कहते हैं कि अगर बातचीत सफल नहीं रही, तो वह ईरान को खत्म कर देंगे। बेशक, ट्रंप के बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, लेकिन इस बात की आशंका बेहद कम है कि वह फिर से ईरान के साथ युद्ध के मैदान में उतरना चाहेंगे। इसके कम-से-कम दो कारण हैं। पहला कारण, ईरान के पास इतनी युद्ध-सामग्री है कि वह खाड़ी के देशों में आफत मचा सकता है और वहां के ऊर्जा संयंत्रों को भारी नुकसान पहुंचा सकता है। इससे विश्व के ऊर्जा बाजार में जबर्दस्त उथल-पुथल मच सकती है, जिसका नुकसान अमेरिका को भी खूब होगा।

दूसरी वजह, यदि ईरान नष्ट हुआ और लोगों के लिए सामान्य जीवन गुजारना कठिन हो गया, तो उनका पलायन शुरू हो जाएगा, और यह पलायन निश्चय ही पश्चिम देशों की ओर ही होगा। इससे विश्व की राजनीतिक व आर्थिक स्थिति पर ऐसा असर पड़ेगा, जिसके बारे में अभी सोचा भी नहीं जा सकता।

जाहिर है, इस युद्ध में ट्रंप को ही विष का प्याला पीना पड़ेगा। उनको मानना होगा कि जिन लक्ष्यों को साथ उन्होंने युद्ध शुरू किया था, वह पूरा नहीं हो रहा। इसके लिए आखिर कब तक वह इंतजार करेंगे, क्योंकि ईरान युद्ध का अमेरिका के साथ-साथ पूरी दुनिया पर बुरा असर पड़ रहा है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

डिजिटल दुनिया में भारत कितना आत्मनिर्भर

नितिन पई | निदेशक, तक्षशिला इंस्टीट्यूशन

विभिन्न संगठनों व देशों द्वारा बनाए जाने वाले सूचकांकों में किसे, कहां और कैसा स्थान मिलेगा, यह बहुत कुछ राजनीतिक गुणा-गणित पर आधारित होता है। इसलिए, जब अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सूचकांक में 71वें स्थान पर रखता है और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी इसे शीर्ष के पांच देशों में शामिल करता है, तो इसे सिर्फ मानक या तकनीक की वजह से आया अंतर नहीं कहा जा सकता। बात कुछ और है। भारत ने दशकों तक ऐसे मानकों से अपना मूल्यांकन करवाया, जिन्हें कहीं और डिजाइन किया गया। उसमें ऐसे सवाल पूछे जाते थे, जिनके जवाब डिजाइन करने वालों के मुफीद बैठते थे।

'इंडियन कौंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस' की सालाना 'स्टेट ऑफ इंडियाज डिजिटल इकोनॉमी (साइड)' रिपोर्ट में इस कमी को दूर करने की कोशिश की गई है। 'साइड' का यह चौथा संस्करण है और इसका दायरा 71 देशों तक बढ़ाया गया है। भारत ने इसके लिए अब अपना ढांचा बनाया है। यह स्वदेशी ढांचा तीन कारणों से अहम है। पहला है निवेश, दूसरा राष्ट्रीय ब्रांडिंग और तीसरा कारण रणनीतिक है, जिस पर खास ध्यान देना चाहिए। सूचना युग में तकनीक भू-राजनीतिक सत्ता का जरूरी तत्व है। राजनीतिक जगत में तकनीक जिस तरह से काम करती है, इसकी सटीक समझ विदेश, रक्षा व आर्थिक रणनीतिकारों के लिए बहुत जरूरी है। 'साइड' की रिपोर्ट में उसकी पिछले 30 सालों में हासिल उपलब्धियों का बखान है। यह भारत को दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा डिजिटल देश बताता है। एआई क्षेत्र में इसे चौथे स्थान पर रखता है।

भारत का डिजिटल कारोबार केवल सतही सेवाओं पर आधारित है। हमारी डिजिटल दुनिया पूरी तरह से बाहरी मॉडलों पर निर्भर है।

अमेरिका के बाद भारत में एआई प्रतिभाओं व डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे (डीपीआई) का दूसरा सबसे बड़ा समूह मौजूद है। हमने डिजिटल माध्यम से 328 अरब डॉलर की सेवाओं का निर्यात किया है, पर ये उपलब्धियां वैश्वीकरण के सुनहरे दौर में हासिल हुई थीं। अब हम ऐसे दौर में हैं, जहां ताकतवर देश पूरी आपूर्ति श्रृंखला पर वर्चस्व चाहते हैं। रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत का डिजिटल कारोबार केवल सतही सेवाओं तक है, यानी यह सिर्फ इसके एप्लिकेशन व सेवाएं उपलब्ध कराता है, जबकि हमारी डिजिटल दुनिया कहीं और बने चिप्स, कंप्यूटर पावर, क्लाउड व मॉडलों पर निर्भर है।

इसे विस्तार से समझने के लिए एक ऐसे समुदाय की कल्पना कीजिए, जो खेती में पारंगत है और मुक्त व्यापार वाली दुनिया का हिस्सा है। वह शानदार फसलें उगाता है, पर कृषि कार्य के लिए ट्रैक्टर, पंपिंग सेट, बीज और सूखा-रोधी सिंचाई तंत्र विदेश से आयात करता है। जब तक दुनिया में मुक्त व्यापार चलता है, तब तक तो सब ठीक रहता है, पर जिस दिन ट्रैक्टर उत्पादक देश इसे देने से मना कर दे या बुवाई के ठीक समय पर उपकरण व बीज आदि की कीमतें बढ़ा दे, उस दिन उस समुदाय को पता चलता है कि उसकी समृद्धि हमेशा किसी और की सद्भावना पर टिकी थी। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था इसी तरह की है। देश के युवा टेक्नोलॉजी और वेंचर कैपिटल पेशेवर प्रणव हरि के अनुसार, हमारे प्रमुख आईटी सेवा उद्योग अब पेशेवरों को प्रतिघंटा भुगतान से हटकर एआई टोकन पर आधारित हो रहे हैं। तीन दशकों से अधिक समय से मानव श्रम पर आधारित मॉडल कुशल और सस्ता था। अब वेतन के बजाय टोकन से भुगतान होने पर 250 अरब डॉलर के निर्यात उद्योग में हो रहा लाभ खतरे में पड़ जाएगा।

सवाल है, भारत क्या करे? इसका उत्तर है कि एक साथ तीन व्यापक कदम उठाए जा सकते हैं। पहला, हमें जल्द से जल्द उन्नत चिप्स, कंप्यूटिंग क्षमता और मूलभूत मॉडल जैसे उपकरणों का संग्रह करना चाहिए, जिनका हम उत्पादन नहीं कर सकते। चुनौतियों के बावजूद अमेरिका-यूरोप के साथ संबंध बेहतर करें। दूसरा, मध्यम अवधि की नीति के तहत घरेलू सेमी-कंडक्टर, कंप्यूटिंग क्षमता और अच्छी तरह से वित्त-पोषित अनुसंधान आधार को बेहतर बनाएं। तीसरा और सबसे बड़ी चुनौती, अपने बाजार की व्यापकता का रणनीतिक रूप से उपयोग करें। हमें वैश्विक मानकों और नियमों को आकार देने और अपने डीपीआई मॉडल का निर्यात करने के तरीके भी खोजने होंगे। हमें उन जटिल उपकरणों के उपयोग सीखने होंगे, जिनका इस्तेमाल बड़े बाजार करते हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

भक्ति और ज्ञान

भावनाओं के साथ एक जबरदस्त तीव्रता होती है। आम तौर पर ज्यादातर लोगों में भावना विचार से ज्यादा तीव्र होती है। इसीलिए भक्ति का गुणगान किया गया है और किसी दूसरे मार्ग की अपेक्षा उसकी चर्चा ज्यादा होती है, क्योंकि ज्यादातर लोगों में प्रबल पक्ष होता है भावना का। उनके विचार या काम से भी ज्यादा मजबूत। मगर भावना की भी अपनी सीमा होती है। बिना ज्ञान, बिना सही तरह की समझ के, बिना अपनी अक्ल को खोले, बस भावना के मार्ग पर चलते जाने से मतिभ्रम जैसी स्थिति पैदा हो सकती है। यह बहुत सुंदर, सुखद, परमानंद जैसी लग सकती है, पर इसमें एक निष्क्रियता आ सकती है।

दूसरी तरफ, बिना भक्ति के स्पर्श के आपका ज्ञान अक्सर बाल की खाल निकालना बन जाता है। कई लोग मानते हैं कि भक्ति में तर्क के लिए कोई जगह नहीं होती। तर्क असल में एक काटने का साधन है। अगर आप किसी चीज पर गौर करना चाहते हैं, तो आप अपने तर्क से इसे काट सकते हैं। अगर आपका तर्क कुल्हाड़ी की तरह है, और अगर आप कुछ काटते हैं, तो वह दो टुकड़े होकर गिर जाएगा। अगर आपके तर्क का चाकू बहुत पैनी धार का है, तो आप उसे पूरा काट सकते हैं, और फिर भी वह एक साथ बना रह सकता है।

तलवारबाजी की कहानियां हमेशा यह बताती हैं कि कैसे एक कुशल तलवारबाज जब अपनी तलवार से किसी पेड़ को काटे, तो उस पेड़ को काटे जाने का पता भी नहीं चलना चाहिए; उसे फिर भी सीधा खड़ा रहना चाहिए। अगर आपका तर्क इतना पैना हो जाता है, तब आप देखेंगे कि आपके दिमाग के तार्किक दायरे में भक्ति बिल्कुल फिट बैठती है। सच्चा ज्ञान और सच्ची भक्ति बिल्कुल भी अलग नहीं हैं।

एक भक्त उन चीजों को जानता है, जो आप सोच भी नहीं सकते। वह ऐसी चीजों को पकड़ सकता है, जिन्हें समझने के लिए आपको संघर्ष करना पड़ता है, क्योंकि उसके भीतर खुद के बारे में कुछ भरा नहीं होता है। आप जब खुद से लबालब भरे होते हैं, तो किसी उच्च संभावना के होने की जगह नहीं बचती।

आप कुछ ऐसी चीजें कर सकते हैं, जिनसे आप भक्ति तक पहुंच जाएं, लेकिन आप इसका अभ्यास नहीं कर सकते। एक आसान चीज आप यह कर सकते हैं कि इस सृष्टि में हर चीज को खुद से ऊंचा मान लें। सितारे तो ऊपर हैं ही, लेकिन सड़क पर पड़े छोटे से छोटे कंकड़ को भी खुद से ऊंचा मानने की कोशिश करें। (वैसे भी वह आपसे ज्यादा स्थायी, ज्यादा स्थिर है। यह हमेशा के लिए एक जगह पर बैठा रह सकता है!)

इस सृष्टि में हर चीज को खुद से ऊंचा मान लें। अगर आप अपने आस-पास की हर चीज को खुद से ऊंचा देखना सीख जाते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से भक्त बन जाएंगे।

अगर आप अपने आस-पास की हर चीज को खुद से ऊंचा देखना सीख जाते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से भक्त बन जाएंगे।

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

गैरी कॉस्पारोव | पूर्व विश्व चैंपियन, शतरंज

दांते का कहना बिल्कुल सही है कि तटस्थ लोगों को स्वर्ग कभी स्वीकार नहीं करेगा और नरक की खाई में भी उन्हें पनाह नहीं मिलेगी। कहीं ऐसा न हो कि नरक के दुष्ट जीव उनसे बेहतर साबित हो जाएं।

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले | 04 जून, 1951

काश्मीर को कोरिया न समझें

काश्मीर की समस्या सीधी-सादी होते हुए भी उलझ क्यों गई? इस प्रश्न का खरा जवाब काश्मीर के लोकनेता शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के उस कथन में है, जो काश्मीर राष्ट्रीय परिषद के वार्षिकोत्सव के सिलसिले में पहली जून को झण्डा फहराते हुए श्रीनगर में उन्होंने किया। 'हमारी समस्या के निष्पक्ष समाधान के नाम पर', शेख अब्दुल्ला कहते हैं, 'निहित स्वार्थ वाली विदेशी शक्तियां हमारी आजादी, बल्कि कहना चाहिए कि, हमारे अस्तित्व के ही साथ खिलवाड़ कर रही हैं और वे हमारे ऊपर ऐसा फैसला लादने की कोशिश में हैं, जो वस्तुतः काश्मीर को दूसरा कोरिया बना देगा।' शेख अब्दुल्ला की यह बात सुनने में आश्चर्यजनक भले ही लगे, किन्तु सुरक्षा परिषद में काश्मीर का मामला जाने के बाद की घटनाएं इससे अन्यथा मानने की प्रेरणा नहीं करतीं। बात बहुत सीधी-सादी है। पाकिस्तानी प्रदेश से काश्मीर पर आक्रमण हुआ। कबीलेवालों ने वह किया हो यह हो सकता है, परन्तु यह निश्चित है कि पाकिस्तानी सीमा से कोई आक्रमण पाकिस्तान की प्रेरणा या सहमति के बगैर नहीं हो सकता था। बाद में पाकिस्तानी विदेश मंत्री को यह बात स्वीकार भी करनी पड़ी कि पाकिस्तान उसमें तटस्थ नहीं रहा, बल्कि पाकिस्तानी फौज या सैनिकों ने भी उसमें अपना योगदान किया। काश्मीर चूंकि भारतीय संघ का अंग बन चुका था, अतः भारत ने सुरक्षा परिषद से इसकी शिकायत करते हुए चाहा कि पाकिस्तान इस अवैध कार्य से रोककर युद्ध को बचाए।

सुरक्षा परिषद के लिए ऐसी हालत में, कर्तव्य स्पष्ट था। किन्तु तीन साल हो गए] आज तक न तो पाकिस्तान को आक्रमणकारी घोषित किया गया, न उससे आक्रमण द्वारा प्राप्त काश्मीर के प्रदेश से हटने के लिए कहा गया। इसके विरुद्ध, भारत ने काश्मीर के प्रति सद्भावना प्रकट करते हुए उसकी संघ-प्रवेश की प्रार्थना पर अपनी ओर से जो यह कहा था कि संकट के बाद काश्मीर में लोकमत लेकर पुनः उसके भारत में शामिल होने न होने का निर्णय किया जाये और वह निर्णय यदि भारत के अनुकूल न होगा तो भी उसे मान्य होगा। उसे पाकिस्तान को खुश करने में अपना स्वार्थ देखने वालों ने मुख्य बात मान लिया तथा सुरक्षा परिषद का जोर शिकायत के असली मुद्दे पर नहीं, बल्कि इसी बात पर हो रहा है कि लोकमत द्वारा काश्मीर के भविष्य का निर्णय किया जाये।

अनुलोम-विलोम

राष्ट्रीय पशु

गाय को घोषित किया जाए राष्ट्रीय पशु

कई प्रमुख मुस्लिम संगठनों और धर्मगुरुओं ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग की है। मुस्लिम नेताओं द्वारा इस मांग की प्रमुख वजह यह है कि इससे हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान होगा और कथित गोकशी को लेकर होने वाले विवादों को रोका जा सकेगा। इस पर सरकार को सोचना चाहिए। गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने में आखिर दिक्कत क्या है? इसके लिए आवश्यक कानून बनाने में विलंब नहीं होना चाहिए। यूं भी गाय को लेकर आए दिन देश के किसी न किसी कोने में तनाव फैलाने की कोशिश होती रहती है। हिंसा भी की जाती है, जिससे माहौल विषाक्त और तनावपूर्ण बना रहता है। अगर गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा देने से गोकशी पर रोक लगती है और विवादों का अंत होता है, तो इससे अच्छी नेक बात आखिर क्या हो सकती है। इससे बहुसंख्यकों की आस्था व धर्म का सम्मान होगा। हालांकि, इन सबसे गाय के नाम पर सियासत करने वाले बचाव की मुद्रा में आ गए हैं, क्योंकि अगर गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर दिया जाए, तो उनकी राजनीति खत्म हो जाएगी। यही कारण है कि अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तौर-तरीकों की बात कहकर मुद्दा को टालने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में, मुस्लिम नेताओं के साथ-साथ हिंदू धर्म के गौ-प्रेमियों को आगे आना होगा और सरकार को इसे राष्ट्रीय पशु घोषित करने हेतु विवश करना होगा।

हेमा हरि उपाध्याय, टिप्पणीकार

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने का मुद्दा इन दिनों गर्म है। हो भी क्यों न, आखिर यह हमारे लिए पूजनीय है। इससे एक काम और होगा कि बीफ कारोबार में शुद्धता आएगी, क्योंकि इसमें कहने के लिए गो-वंश के मवेशियों, यानी भैंस, बैल आदि के मांस का कारोबार होता है, लेकिन कथित तौर पर गोकशी भी कर दी जाती है। इसी कारण गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग हो रही है, ताकि ऐसे अवैध काम रुक सकें और गोकशी करने वाले को सख्त से सख्त सजा मिल सके। यह सही है कि पहले से ही अपने देश में बाघ को राष्ट्रीय पशु का दर्जा दिया जा चुका है, लेकिन जब मामला संवेदनशील है, तो उसमें सोच-विचार कर ही कदम आगे बढ़ाना चाहिए। अगर गाय को भी राष्ट्रीय पशु घोषित कर दिया जाए, तो इसमें ऐतराज नहीं होना चाहिए। अमेरिका जैसे कई देशों में एक से अधिक राष्ट्रीय पशु घोषित किए जा चुके हैं, ताकि वे अपनी जैव विविधता को बचा सकें। हमें भी अपनी विविधता को बचाने के लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर देना चाहिए।

अमृतेश कुमार, टिप्पणीकार

जिसे माता कहते हों, उसे पशु कैसे कहें

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग करने वाले अज्ञानी हैं। उनको यह बात पता होनी चाहिए कि रॉयल बंगाल टाइगर (बाघ) पहले से ही राष्ट्रीय पशु घोषित है। फिर, बात यह भी है कि गाय हमारे लिए कोई पशु नहीं है। इसे पशु मानना ही मूर्खता है। चूंकि गाय को कई लोग पशु मान रहे हैं, इसीलिए उसके साथ अत्याचार हो रहा है। चोरी-छिपे गोकशी हो रही है। इसलिए जिस दिन हम गाय को 'माता' मानना शुरू कर देंगे, गोहत्या स्वतः बंद हो जाएगी।

सनातन संस्कृति में गाय देवी है। स्वयं प्रभु ने भी गाय को अपनी माता माना है, यानी जिन्होंने सृष्टि रची, उन्होंने भी गाय को मां का दर्जा दिया है। इन सब बातों का वेद-पुराणों अथवा शास्त्रों में भी उल्लेख मिलता है, तो यह आसानी से समझा जा सकता है कि गाय की पदवी हिंदू धर्म में कितनी ऊंची है। ऐसे में, सवाल यह है कि जिस गाय की सदियों से पूजा होती आई है, उस पर संकट बनकर कौन खड़ा हो रहा है? जगत पालनकर्ता गौमाता को 'राष्ट्रीय पशु' कहने और घोषित करने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है? क्या हमने कभी यह मांग की है कि भगवान को 'राष्ट्रीय भगवान' घोषित करोगे, तभी हम उनका सम्मान करेंगे, उन्हें पूजेंगे, अन्यथा नहीं करेंगे? क्या किसी ने यह मांग की है कि 'गॉड' या 'अल्लाह' को राष्ट्रीय महत्व की सूची में शामिल करेंगे, तभी हम उनका सम्मान करेंगे? क्या अपने माता-पिता के लिए भी हमारे मन में यही भाव आते हैं कि जब तक उनको घर का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति घोषित नहीं किया जाएगा, तब तक हम उनको प्रमाणित नहीं करेंगे, या उन्हें सम्मान नहीं देंगे। तो, जब भगवान को हमने राष्ट्रीय घोषित नहीं किया है, और हम उनमें आस्था व विश्वास रखते हैं; अल्लाह के प्रति जब हमारी पूरी आस्था है और सम्मान है; माता-पिता के प्रति हमारा सम्मान है, तो फिर गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने के बाद ही उसे मान-सम्मान देने का भला क्या तुक है?

यह समझना चाहिए कि गाय हमारी जननी है, और कोई अपनी जननी को पशु नहीं कहता। गाय का दर्जा हमारे माता-पिता से कम नहीं है। इसलिए हमें गाय का सम्मान करना चाहिए और इस तरह के राजनीतिक अभियानों से बचना चाहिए। जिस दिन हम गाय को सही मायने में माता मानने लगेंगे, गोकशी अपने आप बंद हो जाएगी। इसके लिए किसी विशेष नियम-कानून की जरूरत नहीं होगी। गाय को लेकर बेवजह का विवाद खड़ा मत कीजिए। पहले उसे उचित सम्मान दीजिए, फिर देखिए कि उसकी स्थिति किस तरह बदल जाती है।

भूरसिंह सी लंगेरा, टिप्पणीकार

हेल्थटेक में बढ़ रहे रोजगार के मौके

भारत में तेजी से हो रहे डिजिटलीकरण और 'आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन' जैसी सरकारी पहलों के कारण हेल्थटेक में रोजगार की मांग 30 फीसदी से 40 फीसदी की दर से बढ़ रही है। खास बात यह है कि डाटा साइंस, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट एवं डिजाइन पृष्ठभूमि वाले छात्रों के लिए भी यहां मेडिकल डिग्री के बिना नए मौके बन रहे हैं। बता रही हैं श्वेता राकेश

भारत का हेल्थकेयर सेक्टर तकनीकी क्रांति के दौर से गुजर रहा है। इसने मेडिकल सेवाओं में हेल्थटेक को जोड़ा है। इसे डिजिटल हेल्थ केयर या मेडटेक के नाम से भी समझ सकते हैं। अनुमान है कि 2030 तक हेल्थटेक का क्षेत्र लगभग 20-25 लाख नए रोजगार पैदा करेगा। यही वजह है कि एआई और डाटा, टेलीमेडिसिन, डायग्नोस्टिक्स, ई-फार्मेसी, फिटनेस और वेलनेस एवं हेल्थ एप्स से जुड़े अवसरों में वृद्धि हुई है।

करियर काउंसलर वर्षा वरवंडकर के अनुसार, 'इस क्षेत्र में प्रमुखत: विज्ञान विषय के स्नातक अपना भविष्य बना सकते हैं। वहीं, नीट के बाद बीएससी नर्सिंग, बीपीटी (बैचलर ऑफ फिजियोथेरेपी), बीफार्मा, और बीएससी ऑप्टोमेट्री जैसे कोर्स इस सेक्टर में मजबूत आधार बनाते हैं। प्रैक्टो, टाटा 1एमजी, फार्मईजी और क्योर.एआई जैसी हेल्थटेक कंपनियों में मेडिकल एडवाइजर और क्लिनिकल ऑपरेशंस जैसे पदों के लिए मेडिकल बैकग्राउंड वाले पेशेवरों की मांग है। डिजिटल हेल्थ मिशन व टेलीमेडिसिन जैसे सरकारी प्रयास इस सेक्टर में नए करियर अवसरों को तेजी से विस्तार दे रहे हैं।'

करियर रोडमैप : कंप्यूटर ज्ञान, डाटा की समझ और डिजिटल टूल्स की जानकारी, हेल्थटेक सेक्टर की बुनियादी जरूरतें हैं। छात्र डिजिटल हेल्थ, हेल्थ डाटा और हेल्थ टेक से जुड़े सर्टिफिकेट या डिप्लोमा कोर्स करके इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं। आईआईटी और एम्स जैसे संस्थान भी डिजिटल हेल्थकेयर व एआई आधारित हेल्थ टेक से जुड़े कुछ कोर्स उपलब्ध करा रहे हैं।

किन पदों की ज्यादा मांग

- **हेल्थ डाटा एनालिस्ट :** डाटा का विश्लेषण कर बेहतर इलाज करने में मदद करते हैं।
- **एआई/एमएल इंजीनियर :** स्वास्थ्य सेवा को बेहतर, तेज और अधिक सटीक बनाने के लिए स्मार्ट एल्गोरिदम और सॉफ्टवेयर विकसित करते हैं।
- **ईएचआर विशेषज्ञ :** इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड सिस्टम को संचालित और व्यवस्थित करते हैं।
- **प्रोडक्ट मैनेजर :** हेल्थ एप्स, डिवाइसेज, डिजिटल हेल्थ प्लेटफॉर्म्स को बेहतर बनाने में अपने अनुभव और स्किल से मदद करते हैं।
- **यूएक्स डिजाइनर :** हेल्थ एप्स का डिजाइन और इस्तेमाल का अनुभव बेहतर बनाते हैं।
- **डिजिटल मार्केटिंग व कंटेंट प्रोफेशनल्स :** हेल्थ प्लेटफॉर्म्स को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुंचाने का काम देखते हैं।

छात्रों को क्या करना चाहिए?

- **अगर इंजीनियरिंग छात्र हैं :** एआई आधारित हेल्थ एप्स, हेल्थ डाटा एनालिटिक्स और प्रोडक्ट डिजाइन जैसे क्षेत्रों में अवसर हैं। पायथन, डाटा और एआई की बुनियादी समझ जरूरी है। प्रोजेक्ट और इंटर्नशिप से अनुभव बढ़ाया जा सकता है।
- **बीबीए या एमबीए छात्र ध्यान दें :** हेल्थकेयर इंडस्ट्री की समझ और मैनेजमेंट कौशल पर ध्यान दें। हॉस्पिटल, हेल्थटेक स्टार्टअप्स, हेल्थ एप कंपनियों और हेल्थ बीमा कंपनियों में इंटर्नशिप लेकर ऑपरेशंस, बिजनेस डेवलपमेंट और प्रोडक्ट मैनेजमेंट क्षेत्रों में अनुभव हासिल कर सकते हैं।
- **लाइफ साइंस या बायोटेक छात्र हैं :** रिसर्च व क्लिनिकल बेसिक्स के साथ डिजिटल हेल्थ की समझ बढ़ाएं। लैब या स्टार्टअप अनुभव लेकर क्लिनिकल रिसर्च, डिजिटल डायग्नोस्टिक्स और हेल्थ डाटा से जुड़े क्षेत्रों में आगे बढ़ सकते हैं।

कैसे करें कौशल विकास

- भारत सरकार के 'स्वयं', कोर्सेरा और एडेक्स जैसे वैश्विक मंच और गूगल करियर सर्टिफिकेट्स और आईबीएम स्किल्स बिल्ड पर हेल्थकेयर टेक से संबंधित निशुल्क कोर्स मिलते हैं।
- विभिन्न आईआईटी संस्थान इस क्षेत्र से संबंधित बीटेक व एमटेक स्तर के कोर्स करा रहे हैं।
- जेईई के माध्यम से बीटेक इन बायोमेडिकल इंजीनियरिंग कोर्स विभिन्न आईआईटी, वीआईटी और मणिपाल जैसे संस्थानों में उपलब्ध हैं। एमबीए इन हेल्थकेयर एनालिटिक्स कोर्स भी कर सकते हैं, जो आईआईएचएमआर, जयपुर में है। वहीं एमएससी इन बायोइन्फॉर्मेटिक्स (जामिया मिलिया इस्लामिया) में उपलब्ध है।

कुछ चुनौतियां भी : भारत में एआई और डाटा आधारित भूमिकाओं में 50 प्रतिशत से अधिक स्किल गैप देखा जा रहा है। अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को हेल्थ डोमेन की बेसिक समझ विकसित करनी पड़ती है। एआई और डिजिटल हेल्थ जैसे क्षेत्रों में लगातार बदलाव के चलते खुद को नियमित रूप से अपडेट रखना भी जरूरी है।

वेतन : शुरुआती वेतन 4-12 लाख रुपये वार्षिक। टेक्नोलॉजी जैसे एआई, डाटा एनालिटिक्स आदि के पदों पर 15 लाख रुपये या अधिक। वरिष्ठ पदों व सफल स्टार्टअप में करोड़ रुपयों तक में आय।

विशेषज्ञ की राय

हेल्थटेक एक ऐसा क्षेत्र है, जहां हेल्थकेयर, टेक्नोलॉजी, डाटा साइंस, बिजनेस और डिजाइन जैसे कई क्षेत्र मिलकर काम करते हैं। इसमें एआई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो रोगों की पहचान, मेडिकल इमेज एनालिसिस, दवा अनुसंधान और मानसिक स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में उपयोग होकर डॉक्टरों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है। परिणामस्वरूप एआई हेल्थ रिसर्च, हेल्थ डाटा साइंस, मेडिकल एआई डेवलपमेंट और डिजिटल हेल्थ ऑटोमेशन जैसे नए करियर क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहे हैं। इसलिए, हेल्थटेक सेक्टर में सबसे अधिक मांग उन पेशेवरों की होगी, जो स्वास्थ्य व तकनीक दोनों की समझ रखते हों।

सोनिक सौरभ
करियर काउंसलर

जॉब/करियर

- संघ लोक सेवा आयोग नेशनल डिफेंस एकेडमी एवं नेवल एकेडमी एग्जामिनेशन (II), 2026 के लिए आधिकारिक विज्ञापन जारी किया गया है।
कुल पद : 394
अंतिम तिथि : 09 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करना होगा। आयोग की वेबसाइट है - upsc.gov.in
- दिल्ली सबऑर्डिनेट सर्विसेज सेलेक्शन बोर्ड में टीजीटी, फिटर ग्रेड-II एवं अन्य पद रिक्त हैं।
कुल पद : 1979
आवेदन शुरू होने की तिथि : 16 जून 2026 से
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करें। वेबसाइट है- dsssb.delhi.gov.in
- नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड में ग्रेजुएट, डिप्लोमा, ट्रेड अप्रेंटिस एवं पैरामेडिकल ट्रेनी के रिक्तियां भरी जाएंगी। ऑनलाइन आवेदन की विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध है।
कुल पद : 1607
अंतिम तिथि : 15 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है- nclcil.in
- पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के अधीन कार्यरत सोसायटी फॉर सेंट्रलाइज्ड रिक्रूटमेंट ऑफ स्टाफ इन सबऑर्डिनेट कोर्ट्स ने हरियाणा के जिला एवं सत्र न्यायालयों में क्लर्क के पदों पर आवेदन मांगे हैं।
कुल पद : 1265
अंतिम तिथि : 23 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन माध्यम से। इस वेबसाइट sssc.gov.in पर लॉगिन करें।
- इलाहाबाद हाई कोर्ट में रिव्यू ऑफिसर, असिस्टेंट रिव्यू ऑफिसर एवं कंप्यूटर असिस्टेंट की आवश्यकता है।
कुल पद : 543
अंतिम तिथि : 21 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट है - allahabadhighcourt.in
- कोल इंडिया लिमिटेड में मैनेजमेंट ट्रेनी के पद रिक्त हैं। अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।
कुल पद : 660
अंतिम तिथि : 11 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है -coalindia.in

- रेलवे भर्ती बोर्ड में असिस्टेंट लोको पायलट के पदों पर नियुक्ति के लिए आवेदन मांगे गए हैं।
कुल पद : 11,127
अंतिम तिथि : 14 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। बोर्ड की वेबसाइट है- rrbapply.gov.in
- एआई- कार्गो लॉजिस्टिक्स एंड एलायड सर्विसेज कंपनी लिमिटेड में सिक्योरिटी स्क्रीनर के पद भरे जाएंगे। आवेदन ऑनलाइन करना होगा।
कुल पद : 158
अंतिम तिथि : 08 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है- aaiclas.aero
- भारतीय स्टेट बैंक में अप्रेंटिस की भर्ती के लिए ऑनलाइन आवेदन किए जा रहे हैं। ये भर्तियां विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में की जाएंगी।
कुल पद : 7150
अंतिम तिथि : 08 जून 2026
आवेदन प्रक्रिया : वेबसाइट है- sbi.bank.in

(नोट : आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें)

भेजें अपना सवाल

करियर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
nayiraheincareer@gmail.com

एलएलबी के बाद करियर के कई विकल्प

एक्सपर्ट टिप्स

डॉ. संजीब कुमार आचार्य
सीनियर करियर काउंसलर

■ मैंने 12वीं पीसीएम से किया है। एलएलबी के दूसरे वर्ष में हूं। अब लॉ प्रोफेशन की चुनौतियां समझ आने लगी हैं। क्या मुझे एलएलबी जारी रखनी चाहिए या दूसरे करियर विकल्पों पर विचार करना चाहिए?
- कौशिकी त्रिपाठी

चूंकि आप बीए.एलएलबी के दूसरे वर्ष में हैं, इसलिए केवल अस्थायी डर या उलझन के आधार पर जल्दबाजी में फैसला न लें। कानूनी पेशा चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन लंबे समय में अच्छा और सम्मानजनक करियर दे सकता है। आज कानून की डिग्री केवल कोर्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे कॉरपोरेट लॉ, लीगल कंसल्टिंग, कंप्लायंस, इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स, टैक्सेशन, लीगल रिसर्च, पॉलिसी एनालिसिस, कॉन्ट्रैक्ट मैनेजमेंट, आर्बिट्रेशन, बैंकिंग, इंश्योरेंस, ह्यूमन रिसोर्सेज और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन जैसे क्षेत्रों में भी करियर बनाया जा सकता है।

पीसीएम पृष्ठभूमि होने के कारण आपकी विश्लेषण क्षमता साइबर लॉ, टेक्नोलॉजी लॉ, डाटा प्राइवेसी, एआई रेगुलेशन, फिनटेक कंप्लायंस और इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी मैनेजमेंट जैसे नए क्षेत्रों में उपयोगी हो सकती है। पढ़ाई जारी रखते हुए अलग-अलग क्षेत्रों में इंटर्नशिप करना बेहतर रहेगा। करियर का फैसला रुचि और क्षमता के आधार पर करें। पहले डिग्री पूरी करें और अनुभव लेकर आगे का निर्णय लें।

■ पीसीबी छात्रों के लिए नीट के अलावा और कौन से विकल्प मौजूद हैं? -सृष्टि चौधरी

नीट के माध्यम से मेडिकल क्षेत्र के अलावा भी पीसीबी छात्रों के लिए कई शानदार करियर अवसर उपलब्ध हैं। हेल्थकेयर क्षेत्र में रुचि रखने वाले छात्र बीडीएस, बीएएमएस, बीएचएमएस, बीयूएमएस, बीपीटी, बीओटी, बीएससी.नर्सिंग, ऑप्टोमेट्री, मेडिकल लैबोरेटरी टेक्नोलॉजी, रेडियोलॉजी, ऑपरेशन थिएटर टेक्नोलॉजी और इमरजेंसी मेडिकल केयर जैसे कोर्स कर सकती हैं।

जीव विज्ञान और रिसर्च में रुचि है, तो बायोटेक्नोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री, जेनेटिक्स जैसे कोर्स कर सकती हैं। इन क्षेत्रों में रिसर्च लैब, दवा कंपनियों, हेल्थकेयर और बायोटेक्नोलॉजी संस्थानों में करियर बनाने के अवसर मिलते हैं। कृषि और खाद्य विज्ञान में रुचि है तो एग्रीकल्चर, हॉर्टिकल्चर, फॉरेस्ट्री, फिशरीज साइंस और वेटरिनरी साइंस चुन सकती हैं। साइकोलॉजी, न्यूट्रिशन एंड डाइटेटिक्स, पब्लिक हेल्थ, क्लिनिकल रिसर्च, हॉस्पिटल मैनेजमेंट, हेल्थकेयर एनालिटिक्स और हेल्थ इन्फॉर्मेटिक्स जैसे नए और मिश्रित क्षेत्रों में भी जा सकती हैं। पीसीबी छात्र पात्रता के अनुसार डिजाइन, लॉ, मैनेजमेंट, जर्नलिज्म, सोशल साइंस और लिबरल आर्ट्स जैसे कोर्स भी कर सकते हैं। गणित की अतिरिक्त तैयारी के साथ कुछ टेक्नोलॉजी कोर्स भी किए जा सकते हैं।

www.sanjibacharya.com

हिन्दुस्तान क्विज-8

हिन्दुस्तान अर्थात भारत की विकास यात्रा बहुआयामी रही है। इसी महायात्रा से हम पाठकों के लिए कुछ प्रश्न लेकर आए हैं, जो सामान्य ज्ञान के लिए उपयोगी हैं। पेश हैं भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी पार्थ सारथी सेन शर्मा के दस सवाल और उनके जवाब...

1. हिन्दुस्तान के वो दो सगे भाई कौन हैं, जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट में शतक लगाया है?
2. नेहरू परिवार के किस व्यक्ति ने कश्मीर के प्रसिद्ध इतिहास राजतरंगिणी का अंग्रेजी में अनुवाद किया था?
3. हिन्दुस्तान के किस प्रसिद्ध हास्य कवि ने 'वसन्त' उपनाम से शास्त्रीय संगीत पर किताबें लिखी है?
4. क्षेत्रफल के हिसाब से हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान कौन सा है?
5. प्रसिद्ध कलाकार मकबूल फिदा हुसैन द्वारा बनाई गई एक मात्र फीचर फिल्म का क्या नाम है?

6. किस हिन्दुस्तानी को मलाला यूसुफजाई के साथ नोबेल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया था?
7. वह पहला हिन्दुस्तानी कौन था, जिसने मशहूर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में भाग लिया था?
8. हिन्दुस्तान की पहली महिला आईपीएस अधिकारी कौन थीं?
9. हिन्दुस्तान का कौन सा शहर कांच की चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है?
10. हिन्दुस्तान के किस कैबिनेट मंत्री ने 1971 के भारत-पाक युद्ध में भारतीय वायुसेना में पायलट के रूप में भाग लिया?

उत्तर : 1. सुरेंद्र अमरनाथ और मोहिंदर अमरनाथ 2. रणजीत पंडित 3. काका हाथरसी 4. हेमिस राष्ट्रीय उद्यान – लद्दाख 5. गजगामिनी 6. कैलाश सत्यार्थी 7. गौस मोहम्मद 8. किरण बेदी 9. फिरोजाबाद 10. राजेश पायलट

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मेष : मन परेशान हो सकता है। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। संयत रहें। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृष : मन अशांत रहेगा। सयंत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। लेखन आदि बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ सकती है। आय में वृद्धि होगी। सेहत के प्रति सचेत रहें।

मिथुन : मन प्रसन्न रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि हो सकती है, परंतु खर्च भी बढ़ेंगे।

कर्क : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। नौकरी के लिए परीक्षा व साक्षात्कार आदि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। सेहत का ध्यान रखें।

सिंह : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकते हैं। सचेत रहें। कारोबार में लाभ बढ़ेगा।

कन्या : आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। शैक्षिक एवं शोध आदि कार्यों में सफलता मिलेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

तुला : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने के लिए प्रयास करें। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ में भी वृद्धि होगी, परंतु भागदौड़ अधिक रहेगी।

वृश्चिक : वाणी में मधुरता तो रहेगी, परंतु मन परेशान हो सकता है। संयत भी रहें। व्यर्थ के क्रोध एवं विवाद से बचें। कारोबार में बदलाव की संभावना बन रही है।

धनु : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। किसी मित्र से कारोबार का प्रस्ताव मिल सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी दूसरे स्थान पर भी जाना हो सकता है।

मकर : मन परेशान हो सकता है। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। परिवार की सेहत का भी ध्यान रखें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। खर्च में वृद्धि होगी।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। सेहत के प्रति सचेत रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। किसी मित्र के सहयोग से भी लाभ बढ़ सकता है।

मीन : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। आय में वृद्धि होगी, खर्च भी बढ़ेंगे। वाहन सुख में वृद्धि हो सकती है। परिवार में सुख-शांति रहेगी।

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

04 जून, गुरुवार, **शक संवत् :** 14,ज्येष्ठ, (सौर) 1948 **पंजाब पंचांग :** 21, ज्येष्ठ मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम :** 17, जिल्हिजा, 1447, **विक्रमी संवत :** द्वितीय (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी तिथि रात्रि 11.31 मिनट तक, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 03.42 मिनट तक पश्चात श्रवण नक्षत्र, शुक्ल योग प्रात: 09.03 मिनट तक पश्चात ब्रह्म योग। चन्द्रमा धनु राशि में प्रात: 07.42 मिनट तक, उपरांत मकर राशि। **सूर्य उत्तरायण।** सूर्य उत्तर गोल। ग्रीष्म ऋतु। दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 03 बजे तक राहुकालम्।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मैंने सुना है कि वास्तु के अनुसार जहाज का चित्र लगाना शुभ होता है। इसे लगाने के क्या लाभ एवं नियम हैं? - गोविंद भटनागर, रांची

- वास्तु के अनुसार शिप का चित्र या मॉडल उन्नति और आगे बढ़ने का प्रतीक माना जाता है। इसे उत्तर दिशा में लगाना व्यापार, करियर और नए अवसरों के लिए शुभ होता है। पूर्व दिशा में लगाने से यश, प्रतिष्ठा एवं नए अवसर बढ़ते हैं।
- उत्तर-पूर्व दिशा में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। शिप ऐसे लगाएं जैसे हमारे घर या ऑफिस में अंदर प्रवेश कर रहा है। जिस समुद्र में जहाज हो, वो साफ एवं शांत होना चाहिए। शिप बाथरूम या शौचालय के सामने न हो।

वर्ग पहेली : 8349

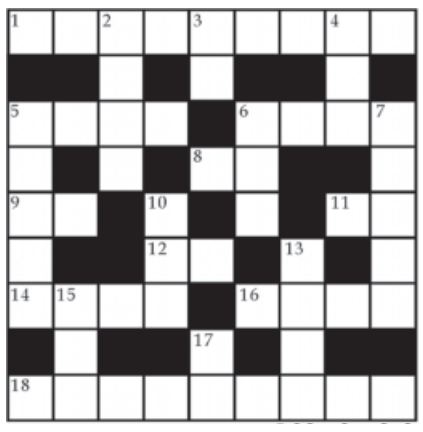

बाएं से दाएं
1. किसी को सोने भी न देना; बहुत तंग करना (3,3,3)
5. मनुष्यत्व; समस्त मानव समाज (4)
6. अपने नाम वाला; जिनका नाम एक हो (4)
8. सुखाया हुआ फल (2)
9. छोटा नल; नलिका; बंदूक का वह भाग जहां से गोली निकलती है; जुलाहों की नाल (2)
11. खेत की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने वाला पदार्थ; उर्वरक (2)
12. कल्याण; मंगल; लाभ; भलाई (2)
14. चौकीदार; जीवनरक्षक; पहरेदार; संकटमोचक (4)
16. आलसी; कमकस; काम से जी चुराने वाला (4)
18. किसी के चरित्र का हूबहू वर्णन करना; किसी पात्र का सजीव अभिनय करना (3,3,3)

ऊपर से नीचे
2. अंकुश रखने वाला; हाथीवान (4)
3. जलने के बाद बचा अंश; खाक; भस्म (2)
4. जीभ; स्वाद; लगाम; रस्सी; धीरे-धीरे टपकना (3)
5. माखन चुराने वाला; श्रीकृष्ण (5)
6. अवास्तविक; कपोल कल्पित; निर्मूल; द्रुतगामी; हवा संबंधी; एक प्रकार की आतिशबाजी (3)
7. मदद देने वाला; सहायक (5)
10. औरत; नारी; स्त्री (3)
13. जो समर्थन करता हो; योग्य; सक्षम (4)
15. खर का नाश करने वाला; राम; विष्णु; 32 मात्राओं वाला एक छंद (3)
17. दोस्त; मीत; सखा (2)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8348

सुडोकू : 8331

*मध्यम

				4				
	9				2	8	7	
	2		8	6	3			
	5	9				1		
4		8				7		6
		7				9	3	
			5	8	6		1	
	6	2	3				8	
				9				

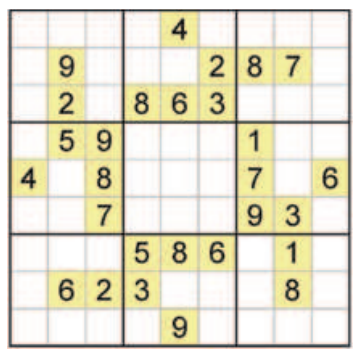

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8330

4	3	1	9	7	8	2	5	6
2	6	9	1	3	5	7	4	8
8	7	5	2	6	4	9	3	1
7	5	4	3	8	6	1	9	2
6	8	2	4	1	9	5	7	3
9	1	3	5	2	7	8	6	4
5	2	8	7	4	3	6	1	9
1	4	7	6	9	2	3	8	5
3	9	6	8	5	1	4	2	7

प्रेरणा

अगर आप संतुष्ट हैं तो आपकी गिनती दुनिया के सबसे अमीर लोगों में होगी। - एपिक्यूरस

संपादकीय

मनुष्य की जान को इतना सस्ता क्यों समझ लिया है?

दिल्ली की एक इमारत में लगी भीषण आग से लगभग दो दर्जन लोगों की मृत्यु अपनी तरह की कोई पहली घटना नहीं है। चंद दिनों पहले घर के एसी के फटने से एक जाने-माने रिटायर्ड आईएएस अधिकारी की मौत हो गई थी, जबकि एनसीआर की तमाम सोसाइटियों में दर्जनों ऐसे घटनाएं सुनने को मिल रही हैं। रेस्तरां में गैस लीकेज हो या बिल्डिंग में शार्ट-सर्किट या फ्लैट्स में एसी फटने की घटनाएं, एक बात साफ है कि सरकार की नियामक संस्थाएं ऐसे हादसों को रोकने के लिए बने एसओपी और निवारक उपकरणों की समय-समय पर जांच नहीं करतीं। सोसाइटी में आग बुझाने के उपकरण नहीं होते, एलपीजी स्टोरेज के मानक की जांच नहीं होती और एसी के कम्प्रेशर की गुणवत्ता फैक्ट्री स्तर पर ही सुनिश्चित नहीं की जाती। मानव-जीवन भारत में सस्ता माना जाता है, लिहाजा तीन तरह की घटनाएं अक्सर सुनने में आती हैं। पहली, घटिया निर्माण के कारण पुल या निर्माणाधीन भवन का गिरना; दूसरी, आग या ऐसी आपदा से सार्वजनिक ही नहीं निजी धन-जन की भी क्षति; और तीसरी, प्राकृतिक आपदा। प्राकृतिक आपदा पर तो किसी का वश नहीं है, लेकिन अन्य दो किस्म की घटनाएं मानवीय-दोष के कारण होती हैं। एक्स्ट्रा लोड और वायरिंग की गुणवत्ता की चेकिंग होती रहे तो शॉर्ट-सर्किट की घटनाओं से बचा जा सकता है। और सरकारी एजेंसियां निर्माणाधीन भवन या पुल में सामग्री की जांच सही तरह से करें तो वे अचानक धराशायी न हों। लापरवाही स्वीकार्य नहीं है।

सुर्खियों से आगे • सरकारें किसी भी देश की हों, इनका स्वभाव लगभग एक जैसा ही होता है...

हे सरकार! खन्दक से निकली हो या पाताल से?

देश-दुनिया

नवनीत गुर्जर
navneet@dbcorp.in

भले कुछ दिन ही रहा, लेकिन युद्ध विराम देखकर लग रहा था, कोई समाधान निकलने वाला है। तेल और गैस संकट से लगातार जूझ रही दुनिया को कुछ राहत मिल सकेगी।

लेकिन बम फिर फूटने लगे हैं। मिसाइलों के मुंह फिर खुल गए हैं। न अमेरिका मान रहा है, न ईरान।

दरअसल, सरकारें किसी भी देश की हों, इनका स्वभाव लगभग एक जैसा ही होता है। ये किसी खोह-खन्दक से उभरी हैं, या गहरे पाताल से निकली हैं? इनकी दृष्टि निरी अजीब। देवमय भी। दैत्यमय भी।

इनकी गंध, जैसे सांझ की आंधी। इनके आदेशों के गहने, केवल भयानक। और इनका साथ, जैसे कोई कब्र में उतरता जाए ...!

जी! सरकार शब्द की परिभाषा अब कुछ ऐसी ही है। कभी वह एयरपोर्ट पर कतार लगाकर बाबा रामदेव के आगे नतमस्तक होती है और कभी वही सरकार उसी बाबा को आधी रात को डंडे मारकर भगाती है।

कभी वह अन्ना हजारे को गांधी जी की तरह सम्मान देती है और कभी उन्हीं अन्ना हजारे को समानांतर सरकार चलाने की मंशा रखने वाला बिजूका बताती है।

कभी वह किसी भ्रष्टाचारी नेता पर बेतहाशा छापे मारती है, लेकिन वही नेता जब सरकारी पाले में आ जाता है तो उसके तमाम पाप धुल जाते हैं।

देश की सीमा छोड़ें तो दिखता है- सुबह ट्रम्प सरकार ईरान को अभयदान देने का डंका बजाती है और वही सरकार शाम को ईरान पर बम फोड़ देती है।

ये दोनों शांत होते हैं तो इजराइल सरकार, लेबनान को नेस्तनाबूद करने पर तुल जाती है।

तब मर्यादा और संयम उस सागर में तैरते-डूबते दिखाई देते हैं, जिसमें निराशा के खारे लेकिन बलशाली पानी के सिवाय और कुछ भी नहीं है।

अनगिनत देशों के तेल से लदे सैकड़ों जहाज होर्मुज के आसपास समंदर में डूब मरने को मजबूर हैं। आत्महत्या के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं है। किसी को दुनिया की नहीं पड़ी। किसी को मानवता की फिक्र नहीं है। सब के सब महंगा तेल बेचने के लिए उतावले हैं।

ऊपर से मौसम के बदलाव ने हमारे भारत तक में उत्पादन की रफ्तार को धीमा करने की ठान ली है। सुना है, इस बार दस से पंद्रह प्रतिशत कम बारिश होने वाली है। इसका सीधा असर खेती-किसानी और अनाज उत्पादन पर पड़ने वाला है।

हालांकि लम्बी भीषण तपिश के बाद देश के कई इलाकों में आंधी-बारिश ने गर्मी से कुछ हद तक राहत तो दी है लेकिन इस बारिश से खेती को ज्यादा कोई फायदा नहीं है। ऊपर से इस बेमतलब की बारिश के कारण जरूरत पड़ने पर आगे होने वाली

अपना घर भरने के सिवा?

मौसम पर किसी सरकार का बस नहीं चलता, वरना ये मंत्री, नेता अपने-अपने हिस्से का छेद बादलों में भी कर आते। फिर जनता का तो जो होता सो होता, इनके खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों में बारिश होती रहती। अपना घर भरने के सिवाय इनके पास कोई काम ही कहां है?

बारिश का कोटा कम होने की आशंका जरूर है। होर्मुज के कारण वक्त पर किसानों को डीजल और खाद नहीं मिल पाने की आशंका बलवती हो रही है, सो अलग! फिलहाल तो मौसम छुई-मुई-सा हो रहा है। पल में तोला, पल में माशा।

हालांकि मौसम पर किसी देश की सरकार का कोई बस नहीं चलता, वरना ये मंत्री, नेता अपने-अपने हिस्से का छेद बादलों में भी कर आते। फिर जनता या आम आदमी का तो जो होता सो होता, इनके खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों में बारिश होती रहती।

लम्बे समय से अपना घर भरने, अपना हित देखने के सिवाय इनके पास कोई काम ही कहां है?

खैर, इतने तेल संकट के बावजूद इस दिशा में मितव्ययिता कहीं नजर नहीं आ रही है। नेता और मंत्रीगण, प्रधानमंत्री की अपील के कुछ दिन बाद तक जो दिखावा कर सकते थे, उन्होंने श्रद्धापूर्वक किया, इसके बाद वे भी अपने पुराने ढर्रे पर लौट आए हैं।

फिलहाल अमेरिका-ईरान-इजराइल युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा है। दूर-दूर तक किसी के झुकने या नरम पड़ने के संकेत नहीं हैं। अगर खारे समंदर में तीन-चार महीने इसी तरह बमबारी होती रही, इसी तरह मिसाइलें दागी जाती रहीं तो ये पूरा साल, बल्कि अगले साल तक भी स्थिति सुधरने वाली नहीं है।

क्योंकि आज ही युद्ध रुक जाए तो भी स्थिति सामान्य होने में कोई छह-सात महीने तो लगेंगे ही।

अंदाजा लगाया जा सकता है कि आगे क्या होगा और किस तरह समय गुजरने वाला है!

इस लेख को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

जीने की राह

पं. विजयशंकर मेहता
humarehanuman@gmail.com

मन को हटाने से ही वह स्पेस बनेगा, जो हमें शांत करता है

जीवन में दुःख आना और दुःखी हो जाना, ये दो अलग बातें हैं। ऐसा कोई दुःख बना ही नहीं, जो बिना सुख के आए और ऐसा कोई सुख नहीं बना, जो बिना दुःख के आए। ये दोनों एक साथ ही आते हैं। इनकी समझ का नाम ही इनकी मुक्ति है। एक शब्द है- स्पेस। इसका सीधा अर्थ होता है जगह बनाइए। हमारी भावनाओं में, हमारे विचार में एक स्पेस रखिए। विचार बाहर से आते हैं, सोच रहे होते हैं हम। फिर हम उस विचार से अपने पूरे व्यक्तित्व, अस्तित्व को जोड़ लेते हैं। ऋषि-मुनि कह गए हैं कि मनुष्य के शरीर और आत्मा को चिपकाने का काम मन करता है और जिसके शरीर और आत्मा जितने अधिक चिपके, वो उतना अशांत। जरा-सा मन को हटाइए, आत्मा शरीर में स्पेस आया और यहीं से हम शांत हुए। और मन केवल संकल्प से नहीं गिरता, इसे नियंत्रित करने की कोई औषधि भी नहीं है। मन का संचालन सांस से होता है। यदि प्राणायाम को प्रतिदिन बहुत गम्भीरता से लें, नियमित करें तो हमारी मन पर पकड़ बन जाएगी। और जब-जब हम मन को हटा देंगे, तब-तब वह स्पेस क्रिएट हो जाएगी, जो हमें शांत करती है। • Facebook:Pt. Vijayshankar Mehta

शब्दों का जादू

अपनी चेतना में रंग

देते होंगे प्रेमी गुलाब अपनी प्रेमिकाओं को,
तुमने दिए मुझे पलाश- कि गुलाल बनाकर रंग भर सकूं दुनिया में।

लाते होंगे प्रेमी झुमके अपनी प्रियतमा को सजाने,
तुम लाए डायरी और पेन- कि शब्द रचकर रंग भर सकूं कविता में।

चाहते होंगे प्रेमी समय अपनी प्रेमिकाओं से,
तुमने दिया मुझे एकांत-
कि भाव सजाकर रंग भर सकूं अपनी चेतना में।

लाते होंगे प्रेमी चॉकलेट मिठास बढ़ाने को,
तुमने दी मुझे मीठी यादें-
कि ख्वाब बनाकर रंग भर सकूं रातों में।

देते होंगे प्रेमी उपहार अपनी प्रेमिकाओं को,
तुमने दिया मुझे आसमान-
कि परवाज बढ़ाकर रंग भर सकूं पंखों में।

देते होंगे प्रेमी तस्वीरें अपनी प्रेमिकाओं को,
तुम बन गए मेरे दर्पण- कि खुद को पहचान रंग भर सकूं अपने व्यक्तित्व में।

-सुदीप शुक्ला, भीलवाड़ा, राजस्थान
(मूल कविता के सम्पादित अंश)

पूरी कविता को पढ़ने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

भास्कर कविता उत्सव की शीर्ष 100 कविताओं में चयनित

प्रश्न • निष्पक्ष जांच बिना निष्पक्ष मुकदमा सम्भव नहीं

ट्विशा मामले में हमारे सामने अनुत्तरित प्रश्नों का पहाड़ है

जस्टिस

बरखा दत्त
फाउंडिंग एडिटर, मोजो स्टोरी
@BDUTT

ट्विशा शर्मा एक पूर्व मॉडल थीं, जो अपनी सास और पूर्व जिला जज गिरिबाला सिंह के घर में संदिग्ध परिस्थितियों में मृत पाई गई थीं। ट्विशा के पति समर्थ सिंह- जो पेशे से वकील हैं और ट्विशा की मृत्यु के तुरंत बाद फरार हो गए थे- और गिरिबाला अब सीबीआई की हिरासत में हैं। किंतु यह मानने के लिए लगातार अधिक प्रमाण सामने आ रहे हैं कि यह दहेज की मांगों से त्रस्त होकर आत्महत्या करने वाली किसी महिला की कहानी नहीं है। ठोस तथ्य लगातार संकेत कर रहे हैं कि ट्विशा की मृत्यु सम्भवतः एक हिंसक हमले का परिणाम थी।

अपराध-स्थल के सीसीटीवी फुटेज हासिल करने को लेकर गिरिबाला सिंह की असामान्य बेचैनी इस बात का संकेत देती है कि शायद उनके पास छिपाने के लिए कुछ था। उनके आवास पर कैमरे लगाने वाले सीसीटीवी तकनीशियन ने पुष्टि की है कि वे घटनास्थल की फुटेज सुरक्षित करने को लेकर उत्सुक थीं। बहू की मृत्यु के कुछ ही घंटों बाद उनके मन में ऐसा विचार क्यों आया? यह तो पुलिस की दिलचस्पी का विषय होना चाहिए।

बात केवल घर के भीतर लगे कैमरों तक सीमित नहीं थी। गिरिबाला के विरुद्ध सबसे गम्भीर संकेत उस ब्यूटी पार्लर से मिलता है, जहां ट्विशा को उनकी मृत्यु वाले दिन आखिरी बार देखा गया था। इस वीडियो में ट्विशा स्पष्ट रूप से सहज दिखाई देती हैं। पार्लर प्रबंधक ने हमें दिए एक साक्षात्कार में कहा भी कि उनमें चिंता या तनाव का कोई स्पष्ट संकेत दिखाई नहीं दिया। पार्लर प्रबंधक ने यह भी पुष्टि की कि अगले दिन गिरिबाला ने उन्हें फोन कर यह जानने के लिए कई प्रश्न पूछे कि ट्विशा ने अपने बिलों का भुगतान किस प्रकार किया था। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गिरिबाला जानना चाहती थीं कि क्या पार्लर में सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं, और वे उस फुटेज को प्राप्त करना चाहती थीं। इसके तुरंत बाद वकीलों का एक समूह पार्लर पहुंचा और उसके संचालक से फुटेज उन्हें सौंपने की मांग करने लगा। यह न केवल गैर-कानूनी था, बल्कि यह गिरिबाला की हताशा को भी प्रकट करता है। क्या वे पार्लर के सीसीटीवी फुटेज को इसलिए अपने कब्जे में लेना चाहती थीं क्योंकि उसमें दिखाई देने वाली शांत और सहज ट्विशा की छवियां आत्महत्या संबंधी उनके दावों का खंडन करती थीं?

टाइमलाइन भी आत्महत्या के कथानक से मेल नहीं खाती। ट्विशा के परिवार ने मेरे साथ कॉल रिकॉर्ड साझा किए हैं, जिनसे पता चलता है कि उनकी मृत्यु वाले दिन रात 10 बजकर 5 मिनट पर अपने माता-पिता के साथ उनकी फोन पर अंतिम बातचीत हुई थी। समर्थ का दावा है कि ट्विशा ने रात 10.20 बजे फांसी लगाई। यदि ससुराल पक्ष के दावे को सही मानें कि उन्होंने एक एक्सरसाइज रिंग से लटककर आत्महत्या की, तो यह कोई ऐसा तत्काल किया जाने वाला कृत्य नहीं है, जिसे मात्र 15 मिनट की अवधि में अंजाम दिया जा सके। सीबीआई अब 80 किलो वजन वाले एक स्ट्रक्चर का उपयोग करके यह जांच कर रही है कि वह रिंग इतना भार सहन भी कर सकती थी या नहीं।

पुलिस से इस मामले में हुई प्रारंभिक चूकें भी स्तब्ध कर देने वाली हैं। वे केवल लापरवाही ही नहीं, बल्कि प्रभावशाली सम्पर्कों के दखल का भी संकेत देती हैं। यह तथ्य कि ट्विशा के परिवार द्वारा प्राथमिकी दर्ज कराए जाने से पहले ही गिरिबाला को अग्रिम जमानत मिल गई, बहुत कुछ कहता है। पहली पोस्टमार्टम प्रक्रिया के दौरान पुलिस ने वह रिंग भी उपलब्ध नहीं कराई, जिसका कथित रूप से ट्विशा ने फांसी लगाने के लिए उपयोग किया था। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने मुझसे कहा है कि इसे मात्र भूल नहीं माना जा सकता। ट्विशा के परिवार के वकील ने भी प्रश्न उठाया है- क्या निष्पक्ष जांच के बिना निष्पक्ष मुकदमा सम्भव है?

ट्विशा की मृत्यु से पहले उनके परिवार द्वारा की गई एक निजी ऑडियो रिकॉर्डिंग में गिरिबाला कथित रूप से अपनी बहू के लिए अपमानजनक और अश्लील भाषा

वास्तव में इस मामले में इतने विरोधाभास मौजूद हैं और तथ्यों को छिपाने के इतने स्पष्ट प्रयास दिखाई देते हैं कि अनुत्तरित प्रश्नों का एक पहाड़ हमारे सामने खड़ा हो जाता है। इन तमाम सवालों की तह तक पहुंचना अब न्याय के लिए बहुत जरूरी हो गया है।

का प्रयोग करती हुई सुनाई देती हैं। माना जा रहा है कि पहली पोस्टमार्टम रिपोर्ट प्रभावित की गई थी और सम्भवतः उसमें हेरफेर भी किया गया था। ट्विशा की ननद डॉ. राशि अबरोल ने मुझे दिए अपने दर्ज बयान में खुलासा किया है कि पहले पोस्टमार्टम के दौरान गिरिबाला की बहन- जो स्वयं एक चिकित्सक हैं- उस कक्ष में उपस्थित थीं, जहां शव-परीक्षण किया जा रहा था। यह नियमों और प्रक्रियाओं का स्पष्ट उल्लंघन था।

ट्विशा के शरीर पर पाई गई सात चोटों का भी अब तक कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। गिरिबाला और उनके पुत्र ने यह दावा करने का प्रयास किया कि ये चोटें छत से सीढ़ियों के रास्ते शव को नीचे लाने के दौरान लगी थीं, लेकिन अब यह स्थापित हो चुका है कि ये सभी चोटें मृत्यु से पहले लगी थीं। यह तथ्य इस अंदेशे को जन्म देता है कि ट्विशा की मृत्यु से पहले उन पर हमला किया गया था, और सम्भव है कि वही हमला उनकी मृत्यु का कारण भी बना हो। गिरिबाला के प्रभावशाली स्थानीय सम्पर्कों ने इस आशंका को बल दिया है कि मामले में बड़े पैमाने पर लीपापोती की गई हो सकती है। **(ये लेखिका के अपने विचार हैं)**

विशेष • हिंदी के पहले अखबार के 200 वर्ष पूरे

हिंदी की पत्रकारिता ने एक समृद्ध पाठक-संस्कृति रची है

पुनरावलोकन

विजयदत्त श्रीधर
पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ पत्रकार और शोध-निदेशक

'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' : यह हिंदी पत्रकारिता की आदि-प्रतिज्ञा है। इसी संकल्प के साथ 30 मई 1826 को हिंदी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' प्रकाशित हुआ था। युगलकिशोर शुक्ल को हिंदी का प्रथम सम्पादक होने का गौरव प्राप्त है।

जनवरी 1931 तक यही माना जाता रहा था कि हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत 1845 में काशी से प्रकाशित होने वाले 'बनारस अखबार' से हुई। लेकिन 'मॉडर्न रिव्यू' के सहायक सम्पादक ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय जब भारतीय भाषाओं की पत्रकार-कला का इतिहास लिख रहे थे, तब उनकी शोध दृष्टि में 'उदन्त मार्तण्ड' की फाइल आई। तब यह तथ्य सामने आया कि हिंदी का पहला समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है।

'विशाल भारत' के सन् 1931 के फरवरी, मार्च, अप्रैल और मई चार अंकों में ब्रजेन्द्रनाथ बंद्योपाध्याय के शोध-आलेख प्रकाशित हुए। तद्नुसार 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रवेशांक 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था। 30+20 सेमी फुलस्केप आकार के आठ पृष्ठों के इस समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर बड़े अक्षरों में सबसे ऊपर 'उदन्त मार्तण्ड' नाम होता था। इसके नीचे संस्कृत में लिखा जाता था- दिवाकान्त कान्तिं बिनाध्वान्तमन्तं नचाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोकः। समाचार सेवामृते ज्ञत्वमाप्तुं नशक्नोति तस्मात्करोमीति यत्नं।। इसका अर्थ है- सूर्य के प्रकाश के बिना जिस तरह अंधेरा नहीं मिटता, उसी तरह समाचार-सेवा के बिना अज्ञ जन जानकार नहीं बन सकते। इसलिए मैं यह समाचार-पत्र प्रकाशनरूपी प्रयत्न कर रहा हूं। अर्थात 'उदन्त मार्तण्ड' का तात्पर्य है समाचार-सूर्य।

प्रवेशांक में 'इस कागज के प्रकाशक का इश्तेहार' शीर्षक से समाचार-पत्र का मंतव्य दिया गया है- 'यह 'उदन्त मार्तण्ड' अब पहले-पहल हिंदुस्तानियों के हित के हेत जो आजतक किसी ने नहीं चलाया पर अंग्रेजी ओ पारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जानने ओ पढ़ने वालों को ही होता है और सब लोग पराये सुख सुखी होते हैं जैसे पराये धन धनी होना ओ अपनी रहते पराई आंख देखना वैसे ही जिस गुण में जिसकी पैठ न हो उसको उसके रस का स्वाद मिलना कठिन ही है।'

'उदन्त मार्तण्ड' में प्रकाशित समाचारों के जितने भी उद्धरण देखने में आते हैं, उनसे पता चलता है कि सम्पादक को यह ज्ञान था कि पाठकों को किन घटनाओं, प्रवृत्तियों और समाचारों से अवगत कराना जरूरी है। सूचित करना पत्रकारिता का प्रथम कर्त्तव्य है। दूसरा कर्त्तव्य है समाज को शिक्षित और प्रेरित करना। पत्रकारिता को लोकरंजन की दिशा में भी काम करना चाहिए, यह सात्विक अपेक्षा की जाती है।

'उदन्त मार्तण्ड' की विचार-दृष्टि में भारत और भारतीयों के हित का महत्वपूर्ण स्थान था। 7 सितम्बर 1826 के अंक में 'विलायती कपड़ा' शीर्षक से टिप्पणी लिखी गई है- 'इस देश में विलायती कपड़ों की आमदनी किस तरह से साल साल बढ़ती गई वह नीचे के लिखे ब्योरे के देखने से ही समझ पड़ेगा।' नौ साल का ब्योरा देते हुए सम्पादक ने सवाल उठाया- 'जरा सोचिए कहां डेढ़ लाख रुपये साल का कपड़ा और कहां साठ करोड़ रुपये वार्षिक का! 115 वर्ष में 4,00,00,00/- प्रति सैकड़ा की वृद्धि!' 4 दिसंबर 1827 को 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन बंद हो गया। इसका एक कारण यह था कि अन्य भाषाओं के समाचार-पत्रों को कम्पनी सरकार से जैसी सहायता मिलती थी, वह 'उदन्त मार्तण्ड' को नहीं मिली। डाकघर से समाचार-पत्र के वितरण की सुविधा भी नहीं मिली। जिन हिंदीभाषियों के हित के लिए युगलकिशोर शुक्ल ने समाचार-पत्र प्रकाशित किया था, उन्होंने भी सहारा नहीं दिया।

'उदन्त मार्तण्ड' ने हिंदी पत्रकारिता की ठोस नींव रखी। विगत दो सौ वर्षों में हिंदी पत्रकारिता का आशातीत विस्तार और विकास हुआ है। हिंदी पत्रकारिता ने दो बड़े

'उदन्त मार्तण्ड' ने हिंदी पत्रकारिता की ठोस नींव रखी। विगत दो सौ वर्षों में हिंदी पत्रकारिता ने दो बड़े काम किए। एक, देश और दुनिया की हलचलों में दिलचस्पी लेने वाला पाठक-वर्ग तैयार किया। दूसरे, साफ-सुथरे, सुस्पष्ट और समर्थ गद्य की परम्परा का विकास।

काम किए। एक, देश और दुनिया के हालात और हलचलों में दिलचस्पी लेने वाला पाठक-वर्ग तैयार किया। दूसरे, भाषा को नया रूप दिया और साफ-सुथरे, सुस्पष्ट और समर्थ गद्य की परंपरा का विकास किया।

हिंदी पत्रकारिता के लिए यह गौरव की बात है कि उसके मूर्धन्य सम्पादकों में हिंदीतरभाषी मनीषियों का भी अवदान है। मराठी के माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराडकर, लक्ष्मण नारायण गर्दे; बांग्ला के राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, अमृतलाल चक्रवर्ती, गुजराती के स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, कन्नड के नारायण दत्त, तेलुगु के बालशौरि रेड्डी प्रभृति मनीषियों की लंबी शृंखला है। भारतेन्दु को हिंदी नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। हिंदी के शब्द-भण्डार को समृद्ध करने में 'आज' (1920, काशी) के सम्पादकों की महती भूमिका है। हिंदी गद्य के विन्यास और वर्तनी की एकरूपता के लिए 'सरस्वती' सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कठिन साधना की। गणेशशंकर विद्यार्थी का 'प्रताप' और माखनलाल चतुर्वेदी का 'कर्मवीर' भी हिंदी पत्रकारिता के गौरव हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

पाठकों के पत्र

डीजल पर टैक्स कम हों

बढ़ते डीजल दामों को नियंत्रित करने के लिए सरकारों द्वारा केंद्रीय उत्पाद शुल्क और राज्य वैट को कम किया जाए। डीजल को जीएसटी के अंतर्गत लाकर भी दरों को स्थिर किया जा सकता है। इससे टैक्स पर टैक्स यानी कैस्केडिंग इफेक्ट खत्म होगा और कीमतें घटेंगी। -जितेंद्र सैनी, नवलडी राजस्थान

बंगाल में हमलों के परिणाम गंभीर

टीएमसी के सदस्यों और सांसदों पर लगातार हो रहे हमले पश्चिम बंगाल में राजनीतिक धमकियों, ध्रुवीकरण और संस्थागत विफलता को दर्शा रहे हैं। पहले ये नाम मात्र के थे, अब विकराल रूप ले रहे हैं। यह अस्थिर वातावरण राज्य के लिए गंभीर परिणाम लेकर आ सकता है। -जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर, झारखंड

आप अपने पत्र editpage@dbcorp.in पर भेज सकते हैं

क्या आप जानते हैं

सबसे बड़ी गुफा में जंगल, नदियां भी हैं

वियतनाम में हैंग सोन डूंग दुनिया का सबसे बड़ा प्राकृतिक गुफा मार्ग है। 9 किलोमीटर लंबी इस गुफा की ऊंचाई 200 मीटर और चौड़ाई 160 मीटर है। समय के साथ इसके भीतर ही ट्रॉपिकल जंगल और भूमिगत नदी प्रवाह तंत्र विकसित हो गए, जो इसे बेहद अनोखा बनाते हैं।

1991 में ओ कान्ह नामक किसान ने इस गुफा को खोजा था।

मुद्दा • गृह मंत्रालय द्वारा गठित जनसांख्यिकीय परिवर्तनों पर उच्च-स्तरीय समिति में एक्सपर्ट्स भी जुड़ें

डेमोग्राफी की अच्छी समझ के बिना हम समस्याएं नहीं सुलझा सकते

जनसांख्यिकी

डॉ. अर्चना मुठ्ये
इंडियन एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ पॉपुलेशन की कार्यकारी परिषद सदस्य

भारत जनसंख्या वृद्धि की चुनौती का ही सामना नहीं कर रहा, तेजी से बदलते जनसांख्यिकीय संतुलन की जटिल परिस्थितियों से भी गुजर रहा है। देश के सामने केवल यह प्रश्न नहीं है कि आबादी कितनी बढ़ रही है, बल्कि यह भी है कि आबादी की संरचना, वितरण, आयु-प्रोफाइल, प्रवासन-प्रवृत्तियां और संसाधनों पर उसका प्रभाव किस दिशा में जा रहा है। यही कारण है कि जस्टिस नावलेकर की अध्यक्षता में गठित उच्चस्तरीय समिति को दूरदर्शी व समयानुकूल पहल माना जा रहा है।

निःसंदेह समिति में प्रशासन, न्याय और नीति-निर्माण के क्षेत्र से जुड़े अनुभवी एवं विद्वान सदस्य सम्मिलित हैं। किंतु यदि इसमें प्रत्यक्ष रूप से डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) के विशेषज्ञों को भी शामिल किया जाता, तो यह पहल और व्यापक तथा अकादमिक रूप से समृद्ध बन सकती है। जनसंख्या संतुलन जैसे विषय केवल प्रशासनिक या राजनीतिक विमर्श तक सीमित नहीं होते, बल्कि वे प्रजनन-संक्रमण, जनसंख्या-परिवर्तन, आयु-संरचना, प्रवासन-पैटर्न, निर्भरता-अनुपात, शहरीकरण प्रवृत्तियों तथा जनसंख्या-पूर्वानुमान जैसे जटिल जनसांख्यिकीय आयामों से जुड़े होते हैं। इन परिवर्तनों को समझने के लिए गणितीय-मॉडलिंग, दीर्घकालिक डेटा-विश्लेषण और सांख्यिकीय प्रक्षेपण की विशेषज्ञता आवश्यक होती है। यदि रोजगार-सृजन, शहरी-नियोजन और संसाधनों के प्रबंधन में संतुलन नहीं बना, तो हमारा डेमोग्राफिक डिविडेंड बोझ में भी परिवर्तित हो सकता है।

इसी संदर्भ में अवैध प्रवासन का प्रश्न महत्वपूर्ण है। यह केवल आंतरिक या सीमा सुरक्षा का विषय नहीं है, बल्कि विकास, प्रशासन और संसाधन-प्रबंधन से भी सीधे जुड़ा हुआ मुद्दा है। सरकारें अपनी योजनाएं जनगणना, सर्वेक्षणों और पंजीकृत आबादी के आधार पर बनाती हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, खाद्य-सुरक्षा, पेयजल, रोजगार और सामाजिक-कल्याण से जुड़ी योजनाओं का पूरा ढांचा इसी अनुमानित जनसंख्या पर आधारित होता है। किंतु जब किसी क्षेत्र में बड़ी संख्या में अवैध आबादी जुड़ जाती है, तो वास्तविक मांग और सरकारी योजना में अंतर पैदा हो जाता है। संसाधनों का अनियोजित बंटवारा होने से अनेक योजनाएं अपने मूल उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पातीं।

जब समिति का मूल विषय ही देश में जनसंख्या बदलाव से जुड़ी चुनौतियों का अध्ययन करके स्थायी समाधान और नीतिगत उपायों का सुझाव देना है तो उसमें जनसांख्यिकी विशेषज्ञों की प्रत्यक्ष भागीदारी क्यों नहीं है? भारत में इस क्षेत्र की विशेषज्ञता का अभाव नहीं है। कोलकाता स्थित भारतीय सांख्यिकी संस्थान विश्वस्तरीय रिसर्च और जनसंख्या विश्लेषण के लिए जाना जाता है। इसी प्रकार मुंबई के देवनार स्थित अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान जनसंख्या-अध्ययन, प्रजनन-स्वास्थ्य, प्रवासन, जनसांख्यिकीय-अनुसंधान और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण जैसे महत्वपूर्ण अध्ययनों का प्रमुख संस्थान है। इन संस्थानों में ऐसे अनेक विशेषज्ञ मौजूद हैं, जो जनसंख्या-परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभावों के वैज्ञानिक आकलन में सक्षम हैं। वे यह समझने में भी सहायता करते हैं कि प्रवासन की वर्तमान प्रवृत्तियां भविष्य में किन सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को जन्म दे सकती हैं। यही कारण है कि अनेक देशों में जनसंख्या संबंधी आयोगों और नीति समितियों में सांख्यिकीविदों, जनसांख्यिकी विशेषज्ञों, महामारी वैज्ञानिकों और प्रवासन विशेषज्ञों को शामिल किया जाता है। क्योंकि वे भी वैध-अवैध माइग्रेशन से जुड़ी हुई समस्याओं से जूझ रहे हैं।

भारत की जनसांख्यिकीय विविधता भी व्यापक है। विभिन्न राज्यों में प्रजनन-दर, जनसंख्या-घनत्व, आयु-वितरण और प्रवासन-पैटर्न में अंतर दिखता है। ऐसे में एक समान दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं हो सकता। क्षेत्रीय वास्तविकताओं को समझने के लिए डेटा-आधारित और वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। समिति का गठन करना गृह मंत्रालय की महत्वपूर्ण पहल है, किंतु जनसंख्या का प्रश्न केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का भी है और भविष्य की योजना तथ्यों, विज्ञान और दूरदृष्टि के आधार पर ही बनाई जा सकती है।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

बिज़नेस भास्कर
Business Standard और TheEconomist की ख़बरों के साथ
नई दिल्ली, गुरुवार 4 जून, 2026

रणनीति • भारतीय कंपनियां कामकाज का पूरा ढांचा एआई के इर्द-गिर्द नए सिरे से तैयार करने में जुटीं

तैयारी तेज: देश की टॉप-3 आईटी कंपनियों के तीन लाख कर्मचारी अब एआई 'कोपायलट' पर

भास्कर न्यूज | मुंबई

एआई अब टेक्नोलॉजी की दुनिया का सबसे बड़ा दांव बन चुका है। भारत की आईटी कंपनियों से लेकर दुनियाभर की दिग्गज टेक कंपनियां एआई पर लाखों करोड़ की पूंजी लगा रही हैं। नए टूल, चिप्स और डेटा सेंटर बनाने की होड़ तेज हो गई है। विशेषज्ञों का मानना है कि आगामी वर्षों में एआई ही कंपनियों की प्रतिस्पर्धा, आय और बाजार मूल्य तय करेगा। भारतीय आईटी कंपनियां इसके लिए कमर कस रही हैं।

दरअसल एआई अब दफ्तरों में रोज के काम का हिस्सा बन चुका है। भारत की तीन सबसे बड़ी आईटी कंपनियां- इन्फोसिस, टीसीएस और विप्रो माइक्रोसॉफ्ट के एआई टूल 'कोपायलट' के 3 लाख से ज्यादा लाइसेंस इस्तेमाल कर रही हैं। यह दिसंबर 2025 में 50 हजार सीटों से 1 लाख से ज्यादा प्रति कंपनी तक की बड़ी छलांग है।

टॉप आईटी कंपनियों के दफ्तरों में 95 फीसदी तक पहुंचा एआई टूल का इस्तेमाल

कंपनी	कोपायलट सीटें	हर महीने कितना इस्तेमाल	फोकस और असर
इन्फोसिस	1 लाख+	91%	इंडस्ट्री-स्पेसिफिक एआई एजेंट
टीसीएस	1 लाख+	86%	20-25% प्रोडक्टिविटी बेनिफिट
विप्रो	1 लाख+	95%	2.5 लाख वर्किंग डे की तिमाही बचत

बड़ी आईटी कंपनियों की एआई पार्टनरशिप

1. **इन्फोसिस + एंथ्रोपिक:** टेलीकॉम, फाइनेंस, मैन्युफैक्चरिंग के लिए क्लॉड बेस्ड एजेंट
2. **एचसीएल टेक + ओपनएआई:** एंटरप्राइज एआई डिप्लॉयमेंट के लिए बहु-वर्षीय करार
3. **टाटा ग्रुप + ओपनएआई:** टीसीएस ग्लोबल इंटीग्रेशन करेगी, डेटा सेंटर इन्फ्रा भी बनाएगी

सबसे बड़ा एंटरप्राइज एआई रोलआउट भारतीय बाजार में

भारतीय आईटी सेक्टर में 'कोपायलट' टूल के बड़े पैमाने पर इस्तेमाल को माइक्रोसॉफ्ट ने दुनिया के सबसे बड़े एंटरप्राइज एआई रोलआउट में से एक बताया है। यह महज उत्पादकता का खेल नहीं है। असल में कंपनियां कामकाज का पूरा ढांचा एआई के इर्द-गिर्द बुन रही हैं। साथ ही एंथ्रोपिक, ओपनएआई जैसी दिग्गज एआई लैब्स के साथ रणनीतिक साझेदारी भी कर रही हैं।

अल्फाबेट: AI इंफ्रा के लिए ₹7.6 लाख करोड़ जुटा रही

गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट ने एआई इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए 80 अरब डॉलर (7.6 लाख करोड़ रुपए) जुटाने की योजना बनाई है। इसमें से 30 अरब डॉलर शेयरों की सार्वजनिक बिक्री से, 40 अरब 'एट-द-मार्केट' प्रोग्राम से और 10 अरब डॉलर बर्कशायर हैथवे को सीधे शेयर बेचकर आएंगे। कपनी यह पूंजी एआई कंप्यूट इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार में लगाएगी।

एनवीडिया: 'मार्वेल' के लिए भारत में 1700 इंजीनियर लगे

एनवीडिया के सीईओ जेनसन हुआंग ने चिप कंपनी मार्वेल टेक्नोलॉजी को 'अगली ट्रिलियन-डॉलर कंपनी' बताया है। मार्वेल के कुल वैश्विक कर्मचारियों का पांचवां हिस्सा यानी 1,700 से ज्यादा इंजीनियर बेंगलुरु, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई में काम कर रहे हैं। अमेरिका के बाहर इसका सबसे बड़ा केंद्र पुणे में है। यहां 1 लाख वर्गफुट के इनोवेशन हब में कस्टम एआई चिप्स व 2एमएम टेक्नोलॉजी पर काम हो रहा है।

उदय कोटक ने चेताया...

गूगल सभी भारतीय कंपनियों के बराबर

एआई के बढ़ते इस्तेमाल के बीच कोटक महिंद्रा बैंक के संस्थापक उदय कोटक ने भारतीय कंपनियों को जगाने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट का सालाना मुनाफा 160 अरब डॉलर (₹15 लाख करोड़) है। इसका मार्केट कैप 4.5 ट्रिलियन डॉलर (₹430 लाख करोड़) है, जो भारत की तमाम लिस्टेड कंपनियों के कुल मुनाफे और मार्केटकैप के लगभग बराबर है। कोटक ने कहा, 'यह सभी कंपनियों के लिए वेक-अप कॉल है। वर्तमान कुछ भी हो, भविष्य में निवेश करें।'

कॉर्पोरेट रिजल्ट स्कैन

11 तिमाही में पहली बार स्मॉलकैप के प्रॉफिट में कमी

मिडकैप कंपनियों का लाभ 30% बढ़ा, पर छोटी का घटा

भास्कर न्यूज | मुंबई

जनवरी-मार्च तिमाही के नतीजे खासे दिलचस्प रहे हैं। मिडकैप कंपनियों ने कमाई के मामले में तेज रफ्तार दिखाई, लेकिन स्मॉलकैप कंपनियों का मुनाफा पटरी उतर गया।

बीएसई मिडकैप 150 इंडेक्स की 92 कंपनियों के नतीजों का विश्लेषण बताता है कि बीती तिमाही उनका संयुक्त शुद्ध मुनाफा 30% बढ़ गया। यह पिछली पांच तिमाहियों में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। उनकी आय 19% और ऑपरेटिंग प्रॉफिट 26% बढ़ा। दूसरी तरफ बीएसई स्मॉलकैप 250 इंडेक्स की 160 कंपनियों का प्रदर्शन कमजोर रहा। उनकी आय तो 12% बढ़ी, लेकिन शुद्ध मुनाफा 12% घट गया। पिछली 11 तिमाहियों में पहली बार स्मॉलकैप कंपनियों का संयुक्त मुनाफा घटा है।

जनवरी-मार्च 2026: मिडकैप कंपनियां सबसे आगे निकलीं

कितनी कंपनियों का मुनाफा बढ़ा

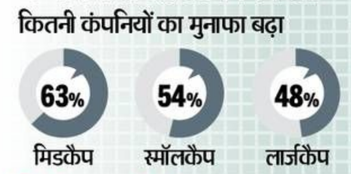

मिडकैप vs स्मॉलकैप

मार्च तिमाही	मिडकैप	स्मॉलकैप
कंपनियों की संख्या	92	160
मुनाफा बढ़ा	▲30%	▼12%
आय बढ़ी	▲19%	▲12%
ऑपरेटिंग प्रॉफिट ग्रोथ	▲26%	दबाव में
इंडेक्स गिरावट	▼13%	▼15.3%

नोट: सभी आंकड़े सालाना वृद्धि के हिसाब से

पूरे वित्त वर्ष 2025-26: मिडकैप कंपनियों का मुनाफा 31% बढ़ा। लार्जकैप कंपनियों के मुनाफे में 13% और स्मॉलकैप के मुनाफे में 11.4% ही बढ़ोतरी हुई।

मिडकैप के उम्दा प्रदर्शन के चार बड़े कारण

1. **ऑपरेटिंग लीवरेज:** कई मिडकैप कंपनियों ने 2-3 साल विस्तार पर निवेश किया था। अब बिना अतिरिक्त निवेश के उत्पादन, बिक्री बढ़ रही है। ये ऑपरेटिंग लीवरेज है।
2. **सरकारी, निजी निवेश:** सरकार के इंफ्रा प्रोजेक्ट्स और प्राइवेट सेक्टर के बढ़ते निवेश ने कैपिटल गुड्स, इंफ्रास्ट्रक्चर और इंजीनियरिंग कंपनियों की मांग बढ़ाई।
3. **फार्मा, ऑटो एंसिलरी का सपोर्ट:** फार्मा कंपनियों को घरेलू बाजार और निर्यात, का सपोर्ट मिला। वहीं ऑटो एंसिलरी कंपनियों को गाड़ियों की बढ़ती बिक्री का लाभ मिला।
4. **विविध सेक्टरों का योगदान:** मेटल्स, पावर, रिन्युएबल एनर्जी, रियल एस्टेट, ज्वेलरी, न्यू-एज बिजनेस ने मिडकैप कंपनियों की आय बढ़ाने में मदद की।

स्मॉलकैप कंपनियों पर बढ़ते खर्च का दबाव

स्मॉलकैप कंपनियां बढ़ते खर्च के दबाव में हैं। बीती तिमाही कुल खर्च 12% बढ़ने बीच बड़ी कंपनियां बाजार हिस्सेदारी बढ़ा रही हैं। मार्जिन बचाना मुश्किल हो गया।

अब कमाई की गुणवत्ता पर फोकस कर रहा बाजार

भास्कर एक्सपर्ट
विजय सरदा,
चीफ इन्वेस्टमेंट ऑफिसर, सिस्टमैटिक्स ग्रुप

बाजार अब लिक्विडिटी नहीं, कमाई की गुणवत्ता को पुरस्कृत कर रहा है। मिडकैप कंपनियों की मजबूती इसी बदलाव का सबसे बड़ा संकेत है।

मोमेंटम: सरकारी बैंक, मेटल्स, डिफेंस, ऑटो, पावर ट्रांसमिशन, ट्रांसफॉर्मर, केबल्स पिछड़ने वाले सेक्टर: आईटी, एफएमसीजी, प्राइवेट बैंक।

आगे मौके: फाइनेंशियल सर्विसेज, मैन्युफैक्चरिंग, ऑटो एंसिलरी, हेल्थकेयर, कंजम्पशन सेक्टर।

बड़ा जोखिम: पश्चिम एशिया में तनाव, कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें।

सलाह: अभी शेयर बाजार का वैल्युएशन आकर्षक है। इस लिहाज से यह लंबी अवधि के लिए बेहतर एंट्री पॉइंट है।

इंश्योरेंस • 10 साल में जापान से आगे नंबर-2 होंगे हम

सालाना 10.5% बढ़ने की राह पर देश का जीवन बीमा बाजार

भास्कर न्यूज | मुंबई

दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शुमार भारत अब बीमा की दुनिया में भी नया इतिहास लिखने जा रहा है। आलियांज रिसर्च की 'ग्लोबल इंश्योरेंस' रिपोर्ट 2026 के मुताबिक, भारत अगले एक दशक में सबसे तेजी (सालाना ग्रोथ 10.5%) से बढ़ने वाला बीमा बाजार बनने जा रहा है। इसकी रफ्तार इतनी तेज है कि भारत जापान को एशिया के दूसरे सबसे बड़े लाइफ इंश्योरेंस बाजार के रूप में चुनौती दे सकता है। यह महज एक अनुमान नहीं, बल्कि ढांचागत बदलाव की दस्तक है। बढ़ती आय, युवा आबादी, कमजोर सरकारी सामाजिक सुरक्षा और बीमा नियामक ईरडा के महत्वाकांक्षी सुधार मिलकर भारत के बीमा बाजार को एक नई उड़ान दे रहे हैं।

2025: भारत में कुल इंश्योरेंस प्रीमियम जापान के मुकाबले आधा

इंडस्ट्री का पैमाना	भारत	चीन	जापान
कुल प्रीमियम	13.8	82.8	29.4
जीडीपी में हिस्सेदारी	3.8%	4.4%	7.3%
प्रति व्यक्ति खर्च	₹9,445	₹58,560	₹2.4 लाख

कुल प्रीमियम लाख करोड़ रुपए में, स्रोत: आलियांज रिसर्च

... पर लाइफ इंश्योरेंस ग्रोथ सबसे तेज

सालाना अनुमानित ग्रोथ 2026-2036 के लिए एशिया का आंकड़ा चीन, जापान को छोड़कर

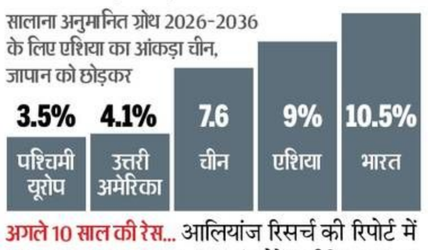

अगले 10 साल की रेस... आलियांज रिसर्च की रिपोर्ट में 2036 तक भारत का लाइफ इंश्योरेंस प्रीमियम ₹30 लाख करोड़ तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया है। यह जापान के मौजूदा ₹22.9 लाख करोड़ से ज्यादा है। यह एशिया के इंश्योरेंस नक्शे को बदल देगा।

भारत में अब भी स्वास्थ्य सेवाओं पर कुल खर्च का 44% जेब से चुकाते हैं लोग, ये तेज ग्रोथ की सबसे बड़ी वजह

1. ईरडा का 'सबके लिए बीमा 2047' कार्यक्रम लाइफ में 10.5%, नॉन-लाइफ में 10.2% और हेल्थ में 12.5% सालाना वृद्धि की रहा खोल रहा है।
2. भारत की सिर्फ 64.3% आबादी किसी सामाजिक सुरक्षा योजना से जुड़ी है।
3. भारतीय स्वास्थ्य पर कुल खर्च का औसतन 43.9% हिस्सा जेब से चुकाते हैं।
4. मोटर इंश्योरेंस अनिवार्य, पर सड़कों पर 50% से ज्यादा गाड़ियां बिना बीमा के दौड़ रही हैं।
5. विदेशी इश्योरेंस कंपनियों के लिए भारतीय बाजार खुलने से इस सेक्टर में प्रतिस्पर्धा और दक्षता, दोनों बढ़ेगी। इससे प्रीमियम कम और सर्विस बेहतर होगी, भरोसा बढ़ेगा।

तेज ग्रोथ • झांग यिमिंग की संपत्ति 7 साल में सात गुना बढ़कर 8.9 लाख करोड़ हुई

टिकटॉक के सह-संस्थापक यिमिंग एशिया के दूसरे सबसे अमीर, अंबानी से आगे निकले

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

टिकटॉक की पैरेंट कंपनी बाइडांस के को-फाउंडर झांग यिमिंग मुकेश अंबानी को पीछे छोड़कर एशिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के मुताबिक, झांग की संपत्ति अब 8.9 लाख करोड़ रुपए हो गई है। वहीं, रिलायंस इंडस्ट्रीज के सीएमडी मुकेश अंबानी की संपत्ति 8.31 लाख करोड़ रुपए रह गई है।

झांग की दौलत बाइडांस की वैल्युएशन बढ़ने और एआई चैटबॉट डौबाओ की सफलता से बढ़ी है। यह भारत और दुनियाभर में मशहूर ओपनएआई के चैटजीपीटी और गूगल के जेमिनाई जैसा ही एडवांस्ड एआई असिस्टेंट है। चीन में इस चैटबॉट के 30 करोड़ यूजर्स हैं। झांग 2019 में 1.24 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के मालिक थे। बीते 7 साल में उनकी संपत्ति सात गुना ये ज्यादा बढ़ चुकी है। अमेरिका में टिकटॉक का बिजनेस बिकने से कंपनी का संकट दूर हो गया। ब्लूमबर्ग ने इसकी वैल्यू में 25% कटौती घटाकर 10% कर दी है। इससे ब्लैकरॉक और फिडेलिटी जैसे निवेशकों के विश्लेषण के बाद झांग की संपत्ति 2.30 लाख करोड़ रुपए बढ़ी है। कंपनी एआई सेक्टर में इस साल 6.7 लाख करोड़ रुपए खर्च करेगी। बहरहाल, गौतम अदाणी 11.19 लाख करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं।

टमाटर 57% महंगा, घर की थाली का खर्च 7% तक बढ़ा

भास्कर न्यूज | मुंबई

टमाटर, रसोई गैस (एलपीजी) और खाने के तेल की महंगाई ने मई में घर का खाना महंगा कर दिया। क्रिसिल इंटेलिजेंस की रिपोर्ट के मुताबिक, घर पर तैयार शाकाहारी थाली की लागत 5% और नॉन-वेज थाली की लागत 7% बढ़ गई। बीते महीने टमाटर की कीमत 57% बढ़कर औसतन ₹36 प्रति किलो हो गई। खाद्य तेल और एलपीजी भी क्रमशः 8% और 7% महंगे हो गए। दूसरी तरफ प्याज 6%, आलू 14% और दालें 2% सस्ती होने से कुछ राहत भी मिली। नॉन-वेज थाली पर ज्यादा असर पड़ा क्योंकि ब्रॉयलर चिकन के दाम 9% बढ़ गए। क्रिसिल का अनुमान है कि गर्मी और कम बुवाई के कारण जून-अगस्त में भी टमाटर महंगा रह सकता है। प्याज और आलू की कीमतें भी बढ़ सकती हैं।

रूफटॉप इकोनॉमी • चीन के वुचांग में पुरानी छतों को डाइनिंग, सांस्कृतिक केंद्रों में बदलना सफल बिजनेस

वुचांग | मध्य चीन के प्राचीन शहर वुचांग में 'रूफटॉप इकोनॉमी' आकार ले रही है। इसके तहत पुरानी छतों को करीब 14 लाख रुपए के निवेश से डाइनिंग और सांस्कृतिक केंद्रों में बदला जा रहा है। यह मॉडल जगह की कमी को अवसर में बदलकर पर्यटकों के लिए आकर्षण का मुख्य केंद्र बन गया है। यहां लोग स्थानीय व्यंजनों के साथ रात में लाइव परफॉर्मेंस का भी लुत्फ उठा रहे हैं। इसके चलते यहां के पर्यटन को दुनियाभर में नई पहचान मिल रही है।

बिजनेस ब्रीफ

ब्याज दरों पर आरबीआई की समीक्षा बैठक शुरू

मुंबई| रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की समीक्षा बैठक बुधवार से शुरू हो गई। फैसले की घोषणा 5 जून को की जाएगी। बैठक में कच्चे तेल के ऊंचे दाम, रुपए में कमजोरी और महंगाई बढ़ने के जोखिम पर चर्चा होगी। अर्थशास्त्री रेपो रेट 5.25% पर स्थिर रखे जाने की उम्मीद कर रहे हैं।

सोना अब पूरी दुनिया का सबसे बड़ा रिजर्व एसेट

मुंबई| केंद्रीय बैंकों के पास गोल्ड अब अमेरिकी ट्रेजरी से आगे सबसे बड़ा रिजर्व एसेट बन गया है। 2025 के अंत तक कुल रिजर्व एसेट में सोने की हिस्सेदारी 27% और ट्रेजरी की 22% रह गई। चीन, भारत, पोलैंड जैसे देश लगातार सोना खरीद रहे हैं। डॉलर पर निर्भरता घटाने की कोशिश इसका मुख्य कारण है।

मांग बढ़ी, सर्विसेज PMI 59.8 के स्तर पर पहुंचा

नई दिल्ली| भारत के सर्विस सेक्टर की ग्रोथ का पैमाना एचएसबीसी इंडिया का सर्विसेज पीएमआई मई में बढ़कर 59.8 पर पहुंच गया। यह नवंबर, 2025 के बाद सबसे तेज विस्तार है। अप्रैल में यह 58.8 पर था। इनपुट लागत 4 माह के निचले स्तर पर रही। मैन्युफैक्चरिंग के साथ मिश्रित पीएमआई 59.3 पर पहुंच गया।

एपल अब एंटीट्रस्ट केस में आंकड़े देने को तैयार

नई दिल्ली| एपल ने भारत के प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) के एक पुराने एंटीट्रस्ट मामले में भारत से जुड़े वित्तीय आंकड़े जमा करने की सहमति दे दी है। मई 2024 में सीसीआई ने पाया था कि कंपनी एप स्टोर में दबदबा रखती है। एपल अब 25 जून तक आंकड़े देने के लिए तैयार है।

महाराष्ट्र सरकार ने एयर इंडिया बिल्डिंग खरीदी

मुंबई| महाराष्ट्र सरकार ने मुंबई नरीमन पॉइंट स्थित प्रसिद्ध एयर इंडिया बिल्डिंग को ₹1,601 करोड़ में खरीद लिया है। 23 मंजिलों वाली यह इमारत 1974 में बनी थी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की मौजूदगी में एसेट ट्रांसफर हुआ। सरकार दक्षिण मुंबई में दफ्तरों की कमी दूर करने के लिए यह कदम उठाया।

सतर्कता • अमेरिका में अतिरिक्त 12.5% टैरिफ के प्रस्ताव से चिंता

क्रूड 3% चढ़ा, सेंसेक्स 304 अंक टूटा

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

शेयर बाजार में एक दिन की राहत के बाद बुधवार को गिरावट आई। सेंसेक्स 304 अंक गिरकर 74,346 पर बंद हुआ। ट्रेडिंग के दौरान एक समय यह 1,157 अंक टूटकर 73,493 पर आ गया था। लेकिन निचले स्तरों पर खरीदारी से थोड़ी रिकवरी हो गई। निफ्टी भी 78 अंक गिरकर 23,406 पर बंद हुआ। आईटी शेयरों में बिकवाली, कच्चे तेल में उछाल और विदेशी फंडों की लगातार निकासी से बाजार में कमजोरी रही। यूएस ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव (यूएसटीआर) द्वारा भारत समेत 54 देशों पर 12.5% अतिरिक्त टैरिफ लगाने के प्रस्ताव का भी बाजार सेंटिमेंट पर नकारात्मक असर देखा गया। इस बीच ग्लोबल ऑयल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड का भाव बुधवार को 3.11% बढ़कर 99 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

एफआईआई: हर घंटे 400 करोड़ के शेयर बेच रहे

विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) इस साल हर घंटे के कारोबार में करीब 400 करोड़ रुपए के शेयर बेच रहे हैं। यह रफ्तार 2025 में हर घंटे हुई 161 करोड़ रुपए की निकासी से दोगुनी से भी अधिक है। मार्केट एक्सपर्ट अंबरीश बालिगा के अनुसार रुपए में भारी गिरावट से विदेशी निवेशकों का मुनाफा कम हुआ है, जिससे वे दूसरे देशों का रुख कर रहे हैं।

विदेशी निवेशकों ने बुधवार को 5,617 करोड़ रुपए निकाले। आईटी शेयरों में बिकवाली के दबाव के बीच टीसीएस का शेयर सबसे ज्यादा 8.43% टूट गया। इसके अलावा टेक महिंद्रा में 6.23%, एचसीएल टेक में 5.25% और इन्फोसिस में 3.82% की गिरावट आई।

टाटा स्टील डिजिटल फर्स्ट एंटरप्राइज बन रही: चंद्रा

भास्कर न्यूज | मुंबई

टाटा स्टील पारंपरिक स्टील कंपनी से डिजिटल-फर्स्ट इंडस्ट्रियल लीडर बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। होल्डिंग कंपनी टाटा सन्स के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन (चंद्रा) ने कहा कि टेक्नोलॉजी अब कंपनी के ऑपरेशनल डीएनए का हिस्सा बन चुकी है। कंपनी के फ्लैगशिप डिजिटल प्लेटफॉर्म्स आशियाना और डिगईसीए ने बीते वित्त वर्ष में संयुक्त रूप से 9,360 करोड़ का ग्रॉस मर्केंटाइज वैल्यू हासिल किया, जो पिछले साल से 161% ज्यादा है।

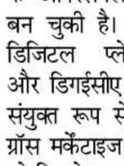

बेरुखी • चीन में 5 साल में जापानी बैंकों की ब्रांच 20%, कॉरपोरेट लोन 40% घटा

जापानी बैंकों की चीन से दूरी, भारत से करीबी

बिजनेस संवाददाता | मुंबई

धीमी आर्थिक वृद्धि, बढ़ती लागत और भू-राजनीतिक जोखिमों के कारण जापान के बैंक अब चीन से दूरी बना रहे हैं। निक्केई एशिया की रिपोर्ट के मुताबिक, बीते पांच साल में चीन में जापान के क्षेत्रीय बैंकों की शाखाएं 20% घट गई हैं। बड़े बैंकों का कॉरपोरेट लोन भी 40% घटा है। अब ये बैंक भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया पर बड़ा दांव लगा रहे हैं। तेज आर्थिक वृद्धि और बड़ा उपभोक्ता बाजार जापानी बैंकों को आकर्षित कर रहा है। तीन बड़े जापानी बैंकों- एसएमबीसी, एमयूएफजी और मिजुहो ने भारत के वित्तीय सिस्टम में अरबों डॉलर निवेश किए हैं। एसएमबीसी ने यस बैंक की 20% हिस्सेदारी ₹15,307 करोड़ में खरीदी है। वहीं एमयूएफजी ने श्रीराम फाइनेंस में 20% हिस्सेदारी के लिए ₹42,573 करोड़ का बड़ा सौदा किया है। इसके अलावा मिजुहो ने इन्वेस्टमेंट बैंक एवेन्डस को खरीदा है। सेमीकंडक्टर और डेटा सेंटर जैसे उभरते क्षेत्रों के दम पर साल 2025 में जापानी निवेश ₹71,800 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। जापानी कंपनियों का अब भारत की ओर ज्यादा झुकाव दिखा रही हैं। इस बड़े बदलाव से देश में पूंजी बढ़ेगी। नए उद्योग लगने से रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

बिजनेस एंकर क्रिस्टियन डियोर, गुची, प्राडा के कपड़ों पर कढ़ाई चाणक्य इंटरनेशनल करती है

दुनियाभर के टॉप लग्जरी ब्रांड्स का 'टॉप सीक्रेट' मुंबई में

एजेंसी | मुंबई

क्रिस्टियन डियोर, प्राडा, गुची जैसे दुनिया के 30 से ज्यादा टॉप लग्जरी ब्रांड्स के कपड़ों पर भारत में कढ़ाई होती है। ये नामी ब्रांड्स अपने कपड़ों की खास कढ़ाई मुंबई की 'चाणक्य इंटरनेशनल' से करवाते हैं। यहां के कारीगर हाथ की कढ़ाई से 5,000 साल पुरानी विरासत बचाए हुए हैं।

चाणक्य इंटरनेशनल की शुरुआत गुजरात के विनोद शाह ने 1984 में की थी। इसका मकसद भारतीय कपड़ों पर सामूहिक रूप से की गई कारीगरी का पूरी दुनिया में पहचान दिलाना था। दुनिया के सबसे महंगे डिजाइनर और रेडीमेड कपड़ों में भारतीय कढ़ाई की मांग सबसे ज्यादा है। इसकी क्वालिटी का कोई मुकाबला नहीं है। पश्चिमी देशों में यह हुनर खत्म हो चुका है। भारत सदियों से दुनिया को कपड़े निर्यात कर रहा है। 16वीं और 17वीं सदी में भी भारत से फ्रांस सहित कई देशों को मलमल, सिल्क और कढ़ाई वाले कपड़े भेजे जाते थे। यही पुरानी विरासत आज भी भारतीय कला को आधुनिक बनाए हुए है। विनोद शाह की बेटी 49 वर्षीय करिश्मा स्वाली पिछले 30 साल से चाणक्य की मैनेजिंग और क्रिएटिव डायरेक्टर हैं। करिश्मा यहां 2,400 कारीगरों का नेतृत्व करती हैं। बचपन में जब वह पहली बार पिता की वर्कशॉप गईं, तो वहां सामूहिक काम देखकर उन्हें अहसास हुआ कि मिलकर जुटने से नतीजा उम्मीद से सुंदर होता है।

हुनर: नई पीढ़ी को सिखा रहे कढ़ाई, एआई भी नहीं ले सकती इंसानी कला की जगह

करिश्मा ने नई पीढ़ी के लिए 'चाणक्य स्कूल ऑफ क्राफ्ट' खोला है। सबसे बड़ी चुनौती करिकुलम बनाना नहीं, बल्कि स्टूडेंट्स का न आना था। करिश्मा ने खुद गरीब बस्तियों में घर-घर जाकर महिलाओं को मुफ्त हुनर सिखाने के लिए मनाया। तब संदेह के बीच सिर्फ 22 महिलाएं अपने पतियों और सास के साथ आईं, जो बाहर बैठकर इंतजार करते थे। आज 10 साल बाद स्कूल में 1,400 महिलाएं हैं और लंबी वेटिंग लिस्ट है।

डियोर फॉल 2023 शो के दौरान चाणक्य इंटरनेशनल को एक बड़ी टेक्सटाइल कलाकृति बनाने की जिम्मेदारी मिली थी। इसमें 1,008 मास्टर्स और महिलाओं ने मिलकर एक विशाल पारंपरिक तोरण बनाया था, जिसका इस्तेमाल घरों में स्वागत के लिए होता है। करिश्मा ने हाल ही में वेनिस बिएनाले और रोम की वेटिकन लाइब्रेरी में चाणक्य की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया है। करिश्मा का मानना है कि इस कला की सबसे बड़ी ताकत यह है कि एआई कभी भी हाथ के इस हुनर की जगह नहीं ले सकता है।

कंपनी, प्रमोटर के खिलाफ सेबी का एक्शन

राजेश एक्सपोर्ट्स पर 15 लाख करोड़ के फर्जीवाड़े का आरोप

भास्कर न्यूज | मुंबई

बाजार नियामक सेबी ने राजेश एक्सपोर्ट्स (आरईएल) और उसके प्रमोटर राजेश मेहता के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए अंतरिम आदेश जारी किया है। फॉरेंसिक ऑडिट फर्म बीडीओ इंडिया की जांच में सामने आया कि कंपनी ने वित्त वर्ष 2020-21 से 2024-25 के बीच ₹15.15 लाख करोड़ का फर्जी कारोबार दिखाया। जांच के मुताबिक, कंपनी की स्विस सहायक कंपनी वैलकांबी एसए की वास्तविक आय महज 542 करोड़ थी, जबकि आरईएल ने समेकित आय 2.80 लाख करोड़ से ज्यादा दिखाई। इसके लिए सोने के सकल लेनदेन को दोबारा गिनकर आंकड़े बढ़ाए गए।

अफ्रीका में सोने की खदानें सिर्फ कागजों पर दिखाई

- सोने के सकल लेनदेन को दोहराकर 5 साल में आय फर्जी तरीके से बढ़ाया।
- प्रमोटर ने कंपनी फंड से निजी सट्टेबाजी की, जो नुकसान हुआ, उसे कंपनी के खाते में डाला।
- अफ्रीक में 1,035 करोड़ रुपए की खदानें दिखाईं, लेकिन जांच में एक भी नहीं मिली।